सरल शायरी

(उर्दू के सरल शेरों का एक संकलन)

11 और 22 नवम्बर, 1935

संकलनकर्ता

डॉ. रजनीकान्त शाह

वो शेर जो मुझे पसंद आये

जिन्हें बचपन से अपनी डायरी में संजोये रखा है ,

जो दिलों को छु लेते हैं ,

भाषा सरल है

भाव सुंदर है

जिसे सहज में समझ पाते हैं।

Website Details

Museum of gem and Jewellery federation Jaipur -2017

Museum of Gem and Jewellery Federation at Jaipur:
http://www.mgjjaipur.com

Google	On the top search.
Facebook	https://www.facebook.com/mgjjaipur/
Twitter	https://twitter.com/MGJFJAIPUR
Instagram	https://www.instagram.com/mgjfjaipur/
YouTube	https://www.youtube.com/channel/UCybJjns-0o9HD1CKXe6HEVA
Tripadvisor	https://www.tripadvisor.com/Attraction_Review-g304555-d13465522-Reviews-Museum_of_Gem_and_Jewellery_Federation-Jaipur_Jaipur_District_Rajasthan.html
Website	http://www.mgjjaipur.com/
Pinterest	https://in.pinterest.com/mgjjaipur/pins/
Blogger	https://www.blogger.com/blogger.g?blogID=1654033813354269141#allposts

Website Details

Ashtapad Maha Tirth Temple replica at New York – 2010
Ashtapad Maha Tirth Information: www.nyjaincenter.org

View Ashtapad – Play of Colors
https://www.dropbox.com/sh/op4g1n2ewyrdysd/AACqMd4MN_a3ofvPNypa28Wda?dl=0

Power point presentation on Ashtapad Ashtapad Maha Tirth temple replica and research: https://youtu.be/mfaDygZElK4

Visit Jain e-Library for Ashtapad Granth Part I and II - 2012
Part I: http://www.jainelibrary.org/book.php?file=009853
Part II: http://www.jainelibrary.org/book.php?file=009860

Ashtapad Maha Tirth Foundation- A 4 sided temple in making
Email: Ashtapadmahatirth@gmail.com
Website: Ashtapadmahatirth.org

Jain Center of America: Temple – 2005 and Ashtapad – 2010
Visit the temple at New York – "A unity in diversity" - 43-11 Ithaca Street, Elmhurst, NY 11373 | www.nyjaincenter.org

A Pictorial guide to Jainism- Art work by code-500+posters – 2010

1. **You can visit the photo gallery at the temple at:**
   a) Visit the temple website and look for the art gallery:
   http://www.nyjaincenter.org/Education/Temple-Artwork
2. **Visit YouTube – it has an auto-slideshow on Art work:**
   https://www.youtube.com/watch?v=yzJe80Rc8mI
   A set of DVD's for the Artwork is available at the temple.

Stamps on gems and jewelry:
http://www.drshahstamps.com/
http://www.stampsongemsandjewelry.com/

Museum of Gem and Jewellery Federation at Jaipur:
http://www.mgjjaipur.com

www.drshahstamps.com nyjaincenter.org jainelibrary.org ashtapadmahatirth.org mgjjaipur.com

सरल शायरी

(उर्दू के सरल शेरों का एक संकलन)

संकलनकर्ता

डॉ. रजनीकान्त शाह

डॉ. रजनीकान्त - डॉ. निरंजना शाह

Email: doctorshah@gmail.com

प्रकाशक :

शादी की सालगिरह: 15th February, 1961

प्रकाशन की तारीख: वसन्त पंचमी

16th February, 2021

उर्दू के सरल शेरों का एक संकलन

* कुछ शेर विषय के अनुसार छांटे गये हैं। विषय सुची अनुक्रमणिका में दी गयी है

* कुछ गुजराती शेरों को हिंदी में भावानुवाद के साथ प्रस्तुत किया गया है.

* उर्दू के कठिन शब्दों का अर्थ सरल भाषा में दिया गया है

न कुछ हम हँस के सीखे हैं

न कुछ हम रो के सीखे हैं

जो कुछ हम थोड़ा सा सीखे हैं

आपके होकर सीखे हैं

आभार

सभी शायरों का

और

संपादकों का

मुझे शाइर न कहो

'मीर' कि साहब मैंने

दर्दो गम कितने किये जमा

तो दिवान किया

-मीर

कवन को मान देता हूँ
गजल की दाद देता हूँ
ह्दय की भावना है हमारी
उनको याद करता हूँ
बनती है औरों का आनंद
जिनकी वेदना 'बेफाम'
मैं उन शायरों को दर्द की
मुबारक बाद देता हूँ

-बरकत विराणी -'बेफाम'

ये मेरे शेर मेरे आखरी नजराने हैं
मैं उन अपनों में हूँ जो आज से बेगाने हैं।

शायरी क्या है दिली जजबात का इजहार है
दिल अगर बेकार है तो शायरी बेकार है

निकला हूँ साथ लेके शकिस्ता किताबे दिल
हर एक वरक में शरहे तमन्ना लिये हुए

अभी इस तरफ न निगाह कर
मैं गजल की पलकें संवार लूं
मेरा लफ्ज हो आईना
तुझे आईने में उतार लूं

खुदा ने महाकाव्य आदम का रच कर
पेश किया जन्नत में हूर द्वारा
कवन में ह्रदय का जब उल्लेख आया
फ़रिश्ते बोले दुबारा दुबारा।
-गनी दहींवाला

वियोगी होगा पहला कवि
आह से उपजा होगा गान
आखों से उमड़कर सरिता सी
कविता बही होगी अनजान
जब प्यार की इस संसार में शुरुआत हुई होगी
तब प्रथम ग़ज़ल की शुरुआत हुई होगी

इस दिल को दर्द मिला उस दिन से दोस्तों

जिस दिन से दुनिया की शुरुआत हुई होगी।

-आदिल मन्सूरी

वो आंख खोलें और शरमाये गजल

वो बाल बनायें और बन जाती है गजल

किसने कहा लय का कोई आकार नहीं

वो अंग मरोड़े और लय में आती है गजल।

-आदिल मन्सूरी

प्रणय का दर्द जब दिल में पहले पहल हुआ होगा

तो ऐसा लगा कि प्यार में एक कठिन मंजिल आई

अर्ज करने को दिल का दर्द कोशिश जब मैं कर रहा था

तभी गगन से उतरकर चुपके से यह ग़ज़ल आई।

-मनहरलाल चोकसी

जीवन में जीने के लिए किसी ने हँसी मांगी

किसी ने मन का सुख मांगा किसी ने दिल की ख़ुशी मांगी।

विधाता ने मुझे भी जब मांगने के लिए कहा तब

मैंने उसके पास और कुछ नहीं एक शायरी मांगी।

-अशोक त्रिवेदी

निवेदन

एक शोख था, शायराना अंदाज था.

बचपन और कालिज से लेकर आज तक जो शेर पसंद आये, उन्हें अपनी डायरी में लिखता रहा , वो शेर जो दिलों को छू लेते हैं, जहाँ थोड़ा मर्म छुपा हुआ है , भाव सुन्दर हैं, भाषा सरल है। सहज में ही समझ में आते हैं , थोड़े शब्दों में भाव व्यक्त करते हैं। अपनी ख़ुशी की एक पहचान थी, कभी दोस्तों में गुनगुना लेते थे , मेडिकल कालेज में भी मौके-बेमौके सुना देते थे। धीरे धीरे एक संकलन बनता गया , आज भी वो डायरी संभाले रखी है।

आज एक अवसर आया है पन्ने पलटने का, उन्ही शेरों के संकलन में से कुछ शेर यहाँ प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। उम्मीद है आपको पसंद आए , थोड़ी साहित्य में रूचि थी, बचपना था , शायरों के नाम न लिखे थे , स्वांत सुखाय थी , इसीलिये कई जगह शायरों के नाम नहीं दिये हैं। कोई मेरा अपना शेर नहीं है। सिर्फ एक संकलन है -जो मिल सके उन शायरों के नाम देने की कोशिश की है। सभी शायरों का आभार।

पूरी गजल की जगह कुछ पंक्तियां ही ली गयी हैं जो अर्थ भरी हैं -जो भाव को प्रदर्शित करती हैं, शेरों को सरल रखने का भी एक प्रयास है ताकि पाठक आसानी से समझ सकें। भाषा को सरल रखने का भी प्रयास किया है। कुछ कठिन शब्दों का अर्थ शेरों के साथ दिया है ताकि शेर आसानी से समझ में आ सके।

शायरी के माने हैं सुंदरता के साथ प्रेम -हुस्न और इश्क का मेल -इसीलिए इसका अंदाज कुछ विशेष है। शेर और शायरी में अभिव्यक्ति की सरलता है आध्यात्मिक तात्त्विक और नैतिक एवं सामाजिक विचारों को एक -दो पंक्तियों में कह जाना , वह इन्ही शायरों की देन है। इसीलिए ज्यादातर शायरी दो पंक्तियों वाली दी है। इश्क सम्बन्धी शायरी में उर्दू शायरी का कोई मुकाबला नहीं उसमें जो भाव है वो लाजवाब है। यह शेर तीरों की तरह चुभते हैं , दिल में उतर जाते हैं , यह दर्द भरे दिल की हसरतें हैं. एक कहानी है , अफसाना है। अलग विषयों पर जो वर्णन-व्यंग है वो कहीं भी नहीं मिलेगा।

यह सच है कि इश्क के बिना यह अदब नहीं आता शायर तो अनजान से भी इश्क कर बैठता है। इश्क के साथ साथ दिल-आशिक-शबाब-शराब-जुल्फ-अश्क-आँचल-हसरतें-अरमां-इकरार-उल्फत-क़यामत-इन्तजार-गम-मधुशाला-आदि इन सब विषयों पर शेरों को संकलित कर यहां प्रस्तुत करने का एक छोटा सा प्रयास है. इसमें प्यार है तो जुदाई भी , वफ़ा है तो बेवफाई भी है , खलिश भी है नशा भी है , शरारत है शिकायत भी है।

मुझ से क्यों कहता है जालिम
कि दिल का लगाना छोड़ दे
जाकर उस खुदा को कह
हसीनों को बनाना छोड़ दे

क्या नजाकत है कि आरिज
उनके नीले पड़ गए
मैंने तो बोसा लिया था
ख्वाब में तस्वीर का।

इश्क का शौक नजारा
मुफ्त में बदनाम है
हुस्न खुद बेताब है
जलवा दिखाने के लिए।

शबे-विसाल है ,
गुल करो इन चिरागों को।
खुशी की रात में ,
क्या काम है जलने वालों का।

एक अध्याय में वो शेर प्रस्तुत हैं जो गुजराती शायरों ने लिखें हैं और उनका हिन्दी अनुवाद करने का एक मौका मुझे मिला जो आगे चल कर एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ - ' हमसफर '. इससे हिन्दी भाषी लोग भी गुजराती शायरों की शायरी का आनंद ले सकेंगें -भाषानुवाद नहीं कहूंगा पर भावानुवाद है और शायरों के भावों को आप तक पहुंचाने का प्रयास है। उम्मीद है आपको पसंद आये।

इस पुस्तक के सम्पादन में बहोत लोगों ने मदद की है मैं उन सबका आभार प्रदर्शित करता हुँ। इस पुस्तक को आकार देने का काम श्री अमितजी सिंघल संभाल रहे हैं। सहयोगी के रूप में उन्होंने पूरी जिम्मेदारी उठा रखी है। श्रीमती अंजना चौधरी और श्रीमती झील मेहता ने कम्प्यूटर का काम को पूरी तरह से निभाया। हमारे मित्र श्री सुनील जी डागा ने संपादन में बहुत मदद की उनका आभार। डॉ. अकलख ने उर्दू शब्दों को सही किया, उनका आभार।

मेरी धर्म पत्नी निरंजना ने सही शेर चुनने-छांटने में एवम सम्पादन में , पूरा सहयोग दिया।

मेरे मित्र श्री राम अवतार जी कूलवाल ने शुरू से मेरा साथ दिया - प्रोत्साहित किया और प्रकाशन की पूरी जिम्मेदारी उन्होंने ही उठा ली।

प्रकाशक ने पूरी मेहनत के साथ सुन्दर रूप से पुस्तक को प्रकाशित किया उसके लिए आभार।

दिवाली -15, नवम्बर 2020 - डॉ. रजनीकान्त शाह

कुछ कहना है

कितनो दिनों के प्यासे होंगें यारों सोचो तो
शबनम का कतरा भी जिनको दरिया लगता है।

एक छोटी सी कोशिश है आप तक दिल की बातें शायरी के माध्यम से पहुंचाने की।

समय एक ऐसा पहिया है जो न किसी के लिए रुकता है न रुकना सिखाता है। एक दिन मेरे से आदरणीय डॉक्टर साहब ने संपर्क किया इस पुस्तक के विषय में और मेरे को एक जिम्मेदारी दी इस पुस्तक को आकार देने की, मेरे लिए ये किसी सौभाग्य से कम न था, चूँकि कुछ हिंदी में और कुछ उर्दू में बहुत थोड़ा सा अंदाज रखता हूं तो पूरी कोशिश की इस पुस्तक को आकार देने में जैसा डॉक्टर साहब चाहते थे।

इस संकलन की खूबी है कि इसमें दिल से छांटे उर्दू के शेरों के साथ गुजराती शेरों का भावानुवाद समायोजित किया है , मीना कुमारी की शायरी पढ़ने लायक है , जिस तरह से इश्क को ढाला गया -शेरों में उस से इश्क निखर गया, इश्क और प्रेम के सम्बन्ध में कुछ शेर भी प्रस्तुत किये हैं जिन्हे पढ़ कर आप आनन्दित हो जाएंगे।

इश्क पर छांटे हुए कुछ शेर ऐसा कह जाते हैं जो आपके दिल को छू जायेंगे।

मुमकिन हो तो फर्ज़े-इश्क पूरा कर लें
मुमकिन हो तो दिल में दर्द पैदा कर लें
अपना कर लें तुझे ये किस्मत में कहाँ
दुःखते दिल से तेरी तमन्ना कर लें।

-फिराक गोरखपुरी

आशा करता हूं आप पुस्तक को पढ़ कर अपने बीते हुए या गुजरे हुए पल याद करेंगें और आने वाले पलों के लिए संभाल कर रखेंगें।

मैं आभार व्यक्त करता हूं डॉक्टर साहब का मुझे इस काबिल समझा और सभी सहयोगियों का जिन्होंने इसे आकार देने में सहयोग किया। मैंने पूरी जिम्मेदारी और निष्ठा से पुस्तक को आकार देने का प्रयास किया लेकिन टाइप करते समय या कुछ उर्दू के भावानुवाद में कोई त्रुटि हुई हो तो मेरा पहला प्रयास जान के मुझे क्षमा करें , कोशिश पूरी की है। आप तक सही शब्दों का संकलन ही प्रस्तुत हो।

धन्यवाद।

विजयादशमी , 26, अक्टूबर 2020 -इं. अमित सिंघल

साल ही साल की तलाश के बाद जिंदगी के चमन से छाँटे हैं।
आपको चाहिए तो पेश करूँ मेरे दामन में चंद काँटे हैं।

अनुक्रमणिका

1. संपादकीय पृष्ठ सं. 1 - 20
2. प्रमुख विषय पृष्ठ सं. 21 – 92 [1-17]
3. सामान्य विषय पृष्ठ सं. 94 – 172 [30-281]
4. अन्य विषय पृष्ठ सं. 172 – 265 [53-218]
5. गजल पृष्ठ सं. 266 – 278
6. गुजराती से हिंदी पृष्ठ सं. 279 – 300

विषय – क्रमश

#	विषय	Pg#
	सरल शायरी	1
	निवेदन	9
	अनुक्रमणिका	15
10	आँखें	61
15	आईना / दर्पण / दरपन	90
102	आदमी / इन्सान / आदम	227
60	आरजू	132
125	आशियां / घोंसला	208
52	आशुक/ माशुक/ आशिकी	95
48	आसमां / आसमान / आस्मां	218
24	इन्तज़ार / इन्तिज़ार	146
5	इश्क	23
75	क़यामत / हश्र	252
175	कातिल	163
28	खत	178
35	खुदा/ परवरदिगार/ रब	234
20	ख्वाब / सपने	124
65	गम	55

#	विषय	Pg#
69	गुनाह / गुनहगार	160
46	गुस्सा / खौफ	151
82	चराग/ दीया/ चिराग/ दीप	212
79	जल्वा	34
33	ज़िन्दगी/ जीवन/ ज़िन्दगानी	220
25	जुदाई / जुदा	149
11	जुल्फ / गेसू / बाल / केश	73
83	तकदीर	228
97	तगाफूल / दगा	168
101	तब्बसुम	79
21	तस्कीन / संतोष	146
17	तस्वीर	92
45	ताजमहल	265
103	दरिया / नदिया	216
4	दर्द	51
13	दामन ओ गिरेबां / गिरेबां	85
9	दिल	42
92	दीवानगी / दीवाना	164
34	दुनिया / आलम / अलम	231

115	दौलत	230
16	नकाब / निकाब	87
7	नाज	35
18	फूल / गुल	200
100	बदन / शरीर	81
47	बहार	205
44	बीमार / मरीज / हालत	248
74	बेखुदी / बेचैनी	140
22	बोसा / चुंबन	78
214	भरोसा	172
67	मंजिल / मुकाम	255
190	मस्जिद / मंदिर	238
51	मिले जुले	262
89	मुसीबत	152
14	मेहंदी / हिना	89
40	मौत	240
27	याद	119
93	रकीब / रफीक / दुश्मन	101
30	राज / प्रेमियों की बातें	93
68	रूठना / मनाना	135
12	लब / होंठ / अधर / आरिज़	77

124	लुफ्त / मजा	158
77	वक़्त / समय	176
64	वफा	108
23	वादा / वादे	104
193	शब / शबे वस्ल / शबे गम	111
99	शबनम / ओस	215
8	शबाब	38
26	शम्ए / शमा	129
179	शरमाना/ शर्म/ लाज/ हया	38
36	शराब / मै / मय	186
173	शरारत व शोखी	38
53	शाम ओ सहर / सुबह शाम	172
29	शिकवे / शिकायत / शिकवा	143
1	शेर और शायरी	21
153	शोला	215
215	सलाम	265
107	सितमजादा / सितमगर / सितम	170
2	हम / मैं	96
91	हसरत / हसरतों	137
31	हिज्र/विरह की रात/शबेहिज्र	114
6	हुस्न / सौंदर्य	33

विषय – पृष्ठ संख्या

#	विषय	Pg#
	सरल शायरी	1
	निवेदन	9
	अनुक्रमणिका	15
1	**शेर और शायरी**	21
278	ग़ज़ल	22
5	**इश्क**	23
81	उल्फत / प्रेम	26
109	मोहब्बत / मुहब्बत	27
256	प्यार	31
266	चाहत	32
6	**हुस्न / सौंदर्य**	33
183	हसीन	33
210	नाचीज / लाचार	33
79	जल्वा	34
269	देखना / दिखाना	34
7	**नाज**	35
105	अदा / अदाएं	35
188	सादगी / भोलापन	37
232	नजाकत	37
237	कमसिन / नाजुक	37
173	शरारत व शोखी	38
191	मस्ती / मस्त	38
271	ईशारे	38
297	गुस्ताखी	38
179	शरमाना/ शर्म/ लाज/ हया	38
8	**शबाब**	38
255	जवानी	40
9	**दिल**	42
54	जिगर / कलेजा	49
158	धड़कन	49
209	खूं / खून / खूने-दिल	50
273	पत्थर	50
4	**दर्द**	51
252	सदमा	54
274	दुःख	54
291	कसक	55
65	**गम**	55
72	खामोशी / खामोश	59
186	रंज	60
207	नाशाद / गमगीन / दिलेनाशाद	60
250	पशेमानी / पश्चाताप / पशेमां	60
10	**आँखें**	61
61	आँसू / अश्क	63
130	नजर / निगाह / निगाहें	64
132	रोना / रुलाना	70
187	भौहें / चितवन	72
204	काजल	72
295	तीर / तीरंदाज़	72
300	पलकें	72
11	**जुल्फ / गेसू / बाल / केश**	73
135	संवरना	77
12	**लब / होंठ / अधर / आरिज़**	77
22	बोसा / चुंबन	78
101	तब्बसुम	79
287	मुस्कुराहट / मुस्कुराना	80
100	**बदन / शरीर**	81
104	तिल	81
116	सूरत	81
141	चेहरा / चेहरे	82
149	अंगड़ाई	82
181	जबान / जबाँ	83
184	रुखसार / गाल	84
236	कमर	84
239	नक्शा / नक़्शे पा	84
290	दीदार	85
13	**दामन ओ गिरेबां / गिरेबां**	85
87	दुपट्टा	86
98	आँचल	86
16	नकाब / निकाब	87
164	पर्दा / पर्दानशी / परदा	88

14	**मेहंदी / हिना**	89
15	आईना / दर्पण / दरपन	90
260	शीशा	91
17	तस्वीर	92
30	**राज / प्रेमियों की बातें**	93
134	गुफ्तगु / बातचीत	95
223	कूचे यार / प्रेयसी की गली	95
52	आशुक/ माशुक/ आशिकी	95
71	महबूब / महबूबा	96
145	दिलरुबा	96
2	हम / मैं	96
258	तुम / तुझे / तुम्हें / तुम्हारे / तूं	98
93	**रकीब / रफीक / दुश्मन**	101
136	यार	101
257	दोस्त / दोस्ती	101
277	गैर	103
284	पहचान	104
23	**वादा / वादे**	104
62	कसम	107
172	अमानत	108
64	वफा	108
63	बेवफ़ाई / बेवफा	109
193	शब / शबे वस्ल / शबे गम	111
270	मुलाकात / मिलना	112
298	वस्ल	114
31	हिज्र/विरह की रात/शबेहिज्र	114
32	उदासी / उदास	114
85	तड़पन / तड़पना / तपिश	116
86	आह	117
129	जख्म	118
161	तन्हा / तन्हाई	119
27	**याद**	119
128	भूलना / भुलाना / भूल	123
20	ख्वाब / सपने	124
95	ख्याल	125
137	खबर / बेखबर	126
152	अंदाज	128
180	जुस्तुजू / तलाश	128
233	तसव्वुर / कल्पना	129
26	**शम्ए / शमा**	129
174	परवाना	131
296	जलना	132
60	**आरजू**	132
280	तमन्ना / ख्वाहिश	134
68	रूठना / मनाना	135
251	रुसवाई / रुसवा	136
91	हसरत / हसरतों	137
165	अरमां / अरमान	138
168	प्यास	139
292	तिश्नगी / तश्नगी / तशनगी	139
127	अर्ज / मिन्नत / आजीजी	140
304	गुजारिश	140
74	बेखुदी / बेचैनी	140
178	बेक़रार / बेताब / बेकसी	141
29	**शिकवे / शिकायत / शिकवा**	143
76	इंतकाम / इन्तकाम	144
121	इल्जाम / दोष	144
263	फरयाद / फरियाद	145
264	हाकिम	145
21	तस्कीन / संतोष	146
78	उम्मीद	146
268	आशा / निराश / आस	146
24	इन्तज़ार / इन्तिज़ार	146
143	इकरार	147
197	इजहार / ऐलान करना	148
208	इनकार / इन्कार	148
231	इबित्त्दा / इब्तदाए	149
261	इन्तहा / इन्तिहा	149
25	**जुदाई / जुदा**	149
222	दूरी व नजदीकी	150
46	गुस्सा / खौफ	151
112	खफा / नाराज	151
225	मिजाज	151
245	गाली	152
89	मुसीबत	152
84	जफ़ा	153

120	आफत	153
169	मजबुर / मजबूरी	154
199	कहर	154
235	तौबा	154
249	बर्बादी / बरबाद / बरबादी	155
276	परेशानी / परेशां	156
303	तबाही	157
305	हंगामें	157
119	अंजाम	157
242	इम्तिहां / इम्तिहान	157
248	फैसला	158
124	लुफ्त / मजा	158
154	ख़ुशी	159
159	दिल्लगी	159
212	करार	159
275	हँसी/ हँसना/ हँसाना	159
69	**गुनाह / गुनहगार**	160
80	खता/ कसूर/ गलती/ खताएं	161
175	कातिल	163
189	जालिम	163
201	काफिर	164
203	सैयाद / शिकारी	164
92	दीवानगी / दीवाना	164
94	नादानी / नादान / नादां	166
117	समझ / नासमझ / समझाना	166
171	पागल	167
182	दाग	167
247	बदनामी / बदनाम	168
97	तगाफूल / दगा	168
216	ईमान	168
259	छल	169
267	धोखा	169
107	सितमजादा / सितमगर / सितम	170
253	जुल्म	171
214	भरोसा	172
246	बदगुमानी / मिथ्या संदेह	172
281	एतिबार / एतबार	172
53	**शाम ओ सहर / सुबह शाम**	172

57	रात / दिन	174
77	वक़्त / समय	176
66	जमाना	177
285	मुद्दत	178
286	फुरसत / फुर्सत	178
28	**खत**	178
106	लफ्ज / हर्फ़ / हरफ	181
126	सवाल / जवाब	181
206	पयाम/ संदेश/ पैगाम/ प्याम	182
224	नामा / कासिद / नामाबर	183
55	अफसाना / कहानी	184
70	लमहें / लम्हें / लम्हा	185
73	दास्तां / कहानी	185
133	नग्मा / नगमा / नग्मे / नज़्म	185
36	**शराब / मै / मय**	186
37	मयखाना / मयकदा / बुतखाना / मैखाना / मैकदा	188
38	पैमाना / जाम / मीना / प्याला / सागर / सुराही	191
39	साकी	193
56	महफ़िल / बज्म	194
122	नशा / मदहोश / नश्शा	198
148	होश / होशोहवास / जुनून	199
150	पीना / पीलाना / पी	199
289	बोतल	200
18	**फूल / गुल**	200
114	गुलशन / चमन / गुलिस्तां	202
166	कँवल / कमल	203
288	कलियों / कली / गुंचें	203
47	बहार	205
59	खार / कांटे	206
163	मौसम	206
167	खिजां / पतझड़	207
176	फिजा	208
125	आशियां / घोंसला	208
144	बाम / बामो-ओ-दर	209
151	घर	209
283	दर	210

19	अबर / बादल / अब्र	210
123	बर्क / बिजली	211
185	आतिश	211
241	बरसात / घटा	212
82	चराग/ दीया/ चिराग/ दीप	212
108	रोशनी / अंधेरा	215
99	शबनम / ओस	215
153	शोला	215
272	आग	215
103	दरिया / नदिया	216
110	साहिल / किनारा	216
111	मौज / लहर	217
138	कश्ती / नाव	217
147	तूफ़ान	217
282	मंझधार	217
48	आसमां / आसमान / आस्मां	218
49	चांद / चांदनी	218
58	सितारे / तारे	219
33	**ज़िन्दगी/ जीवन/ ज़िन्दगानी**	220
139	उम्र / उमर	225
142	जान	226
102	आदमी / इन्सान / आदम	227
83	तकदीर	228
155	नसीब / बदनसीब	228
200	तदबीर	229
202	मुकद्दर	229
254	किस्मत	229
115	दौलत	230
196	तवंगर	230
198	मुफ़लिस	231
34	दुनिया / आलम / अलम	231
293	जहाँ	233
35	**खुदा/ परवरदिगार/ रब/ याइलाही/ इलाही/ अल्लाह**	234
157	नाखुदा / मन्तह	236
192	इनायत / कृपा	237
195	दुआ / बद्दुआ	237
230	बन्दगी / प्रार्थना	238
190	मस्जिद / मंदिर	238
211	मजहब	238
234	वाइज / शैख / नासेह	239
40	**मौत**	240
41	जनाजा	243
42	कबर / कब्र / मजार	244
43	कफ़न	246
118	जीना / मरना	246
131	माहिया	247
140	जहर	247
170	कजा	248
227	लाश	248
279	मातम	248
44	बीमार / मरीज / हालत	248
146	तबियत	250
226	इलाज	251
302	हाल	251
75	क़यामत / हश्र	252
88	जन्नत / जहन्नुम	254
213	फरिश्ते / परी / बुत / हूर	254
301	रूह	254
67	**मंजिल / मुकाम**	255
96	राहबर / हमराह राहगुजर	258
113	हमसफर / हमराही / हमदम	259
194	हमनशी	260
205	कारवां / काफिला	260
219	सफर	261
243	मुसाफिर	261
299	राह	262
51	**मिले जुले**	262
45	ताजमहल	265
262	धूल	265
215	सलाम	265
218	नजराना	265

प्रमुख विषय

1	शेर और शायर / शाइर	1

वफा खुद की है और मेरी वफा को आजमाया है ,
मुझे चाहा है , मुझे अपनी आँखों पर बिठाया है।
सुनी है मैंने अकसर छिप के नगमा ख्वानियाँ उन की ,
मेरा हर शेर तन्हाई में उस ने गुनगुनाया है। -मजाज 1/64
नगमा ख्वानियाँ - पसंदगी का गीत , तन्हाई - अकेलापन

वही बात जो वो न कह सके , मेरे शेर-ओ-नगमों में आ गई ,
वही लब न मैं जिन्हें छू सका , कहदे शराब में ढल गए।
नगमे - गीत , लब - होंठ , कहदे -वो ही -'मजरूह' सुलतानपुरी 1

मुझे शाइर न कहो 'मीर' कि साहब मैंने ,
दर्दों-गम कितने किये जमा तो दीवान किया। -मीर 1
दीवान - किताब

खुलता किसी पे क्यूं मेरे दिल का मुआमला ,
शेरों के इन्तिखाब ने रुस्वा किया मुझे। -अनजान 1/251
मुआमला - बाबत/ संदर्भ , इन्तिखाब - पसंदी , रूस्वा - बदनाम

शायरी से जी चुराता था , बिगड़ता था बहुत ,
हाय तेरी याद ने हमको भी शायर कर दिया। 1/27

निकला हूँ साथ ले के शकिस्ता किताबे दिल ,
हर एक वरक में शरहे तमन्ना लिये हुए। 1/3
शकिस्ता - टूटा हुआ , वरक - पन्ना , शरहे - टुकड़ा

वियोगी होगा पहला कवि आह से , उपजा होगा गान ,
आखों से उमड़कर , सरिता सी , कविता बही होगी अनजान। 1

शायरी क्या है दिली जजबात का इजहार है ,
दिल अगर बेकार है तो शायरी बेकार है। 1
जजबात - भावना , इजहार - जाहिर करना (ऐलान)

वफ़ा करेंगे , निबाहेंगे , बात मानेगें ,
तुम्हें भी याद है कुछ , ये कलाम किसका था। -दाग 1
कलाम - शेर

ये मेरे शेर , मेरे आखिरी नजराने हैं ,
मैं उन अपनों में हूं जो आज से बेगाने हैं। 1
बेगाने - पराये

कहीं शेरो-नग्मा बन के , कहीं आँसुओं में ढल के ,
वो मुझे मिले तो लेकिन , मिले सूरतें बदल के। -खुमार बारहबंकवी 1/116
शेरो-नग्मा - शेर और गीत , पा-ए-नाजुक - नाजुक पांव

हर शेर भीगा-भीगा सा और नज़्म है रूठी-रूठी सी ,
इस बोझलपन को ओढ़-लपेट , चुपचाप मैं घंटों सोचती हूँ।
अब कौन-सी धड़कन नज़्म करूँ और किस लम्हे को कैद करूँ।
नज़्म - कविता , लम्हे - क्षण , बोझलपन - भारीपन -मीना कुमारी 133/70

278	ग़ज़ल	1

ग़ज़ल उस ने छेड़ी मुझे साज देना ,
जरा उम्रे-रफ़्ता को आवाज देना। -सफी लखनवी 278
साज - सामान / गाने के साथ बजाया जानेवाला बाजा
उम्रे-रफ़्ता - गुजरी हुई उम्र

अभी इस तरफ न निगाह कर , मैं ग़ज़ल की पलकें सँवार लूँ ,
मेरा लफ्ज हो आईना , तुझे आईने में उतार लूँ। -बशीर बद्र 278
लफ्ज - शब्द

तुम हँस दिये तो लिखी गई एक गजल ,
उदास हुए अगर तो पत्थर बन गया दिल। 278

5	इश्क	5

इश्क पर जोर नहीं , है यह वोह आतिश 'गालीब' ,
कि लगाये न लगे , बुझाये न बुझे। -गालिब 5
आतिश - आग

हम इश्क के मारों का इतना ही अफसाना है ,
रोने को कोई नहीं , हँसने को जमाना है। 5/55
अफसाना - कहानी

इश्क के बुंदे बना कर हम जमीं में बो चुके ,
तुम हमारे हो न हो , हम तुम्हारे हो चुके। 5

न आया हमें इश्क करना न आया ,
मरे उम्र भर और मरना न आया।
यही दिन थे सौ-सौ तरह सँवरते तुम।
जवानी तो आयी सँवरना न आया। -रियाज खैराबादी 5
सँवरना - तैयार होना

इश्क पाबंध रजा हो , मुझे मंजूर नहीं ,
मैं कहूँ तुम मुझे चाहो , मुझे मंजूर नहीं। 5
पाबंध - बंधहुआ

इश्क का हाजते पयाम नहीं ,
इश्क खुद ही पयाम होता है ।
गम को नफरत से देखने वाले ,
गम का भी एक मुकाम होता है । 5/65
हाजते - अभिलाषा , पयाम - संदेश , मुकाम - मंजिल

इस इश्क में जां को खोना है , मातम करना और रोना है ,
मैं जानता हूँ जो होना है , पर क्या करूँ जब दिल आ जाये। 5
मातम - शोक -बहजाद लखनवी

इश्क का जौके नजारा मुफ्त में बदनाम है ,
हुस्न खुद बेताब है जलवे दिखाने के लिए।
चाहते हैं कि हर एक जर्रा शग़फा बन जाए ,
और खुद दिल में एक खार लिए बैठे हैं। -मजाज 5
जौक - आनंद , बेताब - व्याकुल / बेचैन , जलवे - दर्शन ,
जर्रा - अत्यंत छोटा टुकड़ा / कण , शग़फा - कली

मेरा इश्क भी खुदगरज हो चला है ,
तेरे हुस्न को बेवफा कहते कहते। -हसरत मोहानी 5/63
खुदगर्ज - स्वार्थी / मतलबी

कुछ न कहना भी किसी के सामने ,
एक तरह का इंकिशाफ़े-राज है।
इश्क ने दिल को पुकारा इस तरह ,
मैं ये समझा आपकी इंकिशाफ़े आवाज है। -नूह नारवी 5
इंकिशाफ़े - संपूर्ण

हाय ये मजबूरियाँ , महरूमियाँ , नाक़ामियाँ ,
इश्क आखिर इश्क है , तुम क्या करो , हम क्या करें। -जिगर मुरादाबादी 5
महरूमियाँ - वंचित / कमिया

कोई समझे तो एक बात कहूं ,
इश्क तौफीक है गुनाह नहीं। -फिराक 5/69
तौफीक - ईश्वर कृपा

इश्क ने ‘ग़ालिब’ निकम्मा कर दिया ,
वर्ना हम भी आदमी थे काम के। -ग़ालिब 5

अगर्चे इश्क में आफत भी है , बला भी है ,
निरा बुरा नहीं यह इश्क , कुछ भला भी है। -यक़ीन 5/120
अगर्चे - अगर

उनको गरूरे इश्क है , मुझको सरूरे इश्क ,
वो भी तो नशे में चूर हैं , मैं भी पीये हुए। -माहिर 5
गरूरे - घमंड , सरूरे - नशा

वो कौन थे जो इश्क को इक खेल जानकार ,
खेले भी और चल भी दिए जीत हार के। -हफीज़ जालन्धरी 5

दिल-ओ-दिमाग को रो लूंगा आह कर लूंगा ,
मैं तेरे इश्क में सब कुछ तबाह कर लूंगा। -अख्तर शीरानी 5

तुम भी 'मजाज' इन्सा हो आखिर , लाख छुपाओ इश्क अपना ,
ये भेद मगर खुल जाएगा , ये राज मगर इफशां होगा। -मजाज 5
इफशां -सबके सामने

इश्क करता है तो फिर इश्क की तौहीन न कर ,
या तो बेहोश न हो , हो तो न फिर होश में आ। -आनन्दनारायण मुल्ला 5
तौहीन - अपमान

मरीजे-इश्क पर रहमत खुदा की ,
मर्ज बढ़ता गया जूं-जूं दवा की। -मीर 5
रहमत - दया

यह सच है कि इश्क के बिना , यह अदब नहीं आता शायद ,
वो तो अनजान से भी , इश्क कर बैठता है। 5

इश्क सर चढ़के उतरता ही नहीं ,
सब अमल पढ़ देखें , इस जिन के लिये। -क़वी अमरोही 5
अमल - समय , जिन - स्त्री

81	उल्फत / प्रेम	5

आँसूं , जो गई गुजरी उल्फत की निशानी है ,
मेरे लिये मोती है उनके लिये पानी है । 81
उल्फत - प्रेम

राजे उल्फत छिपा के देख लिया ,
दिल बहुत कुछ जला के देख लिया।
और क्या देखने को बाकी है ,
आपसे दिल लगा कर देख लिया। -फैज अहमद फैज 81
उल्फत - प्रेम

असर जो उल्फत में है तो खींचकर आ ही जायेंगे ,
परवाह नहीं है हमें अगर वो रूस बैठे हैं। 81
उल्फत - प्रेम , रूस - रूठना

बस इतनी दाद देना बाद मेरे , मेरी उल्फत की ,
कि याद आऊँ तो अपने आपको तुम प्यार कर लेना। -ताजवर नजीमाबादी 81
दाद - प्रशंसा , उल्फत - प्रेम

उलफत का जब मज़ा है कि वह भी हों बेकरार ,
दोनों तरफ हो आग बराबर लगी हुई। -इस्माइल मेरठी 81
उलफत - प्रेम

उल्फत में बराबर है वफा हो कि जफा हो ,
हर बात में लज्जत है अगर दिल में मजा हो। -अमीर मीनाई 81
उल्फत - प्रेम , जफा - बेवफाई , लज्जत - ख़ुशी / आनंद

उनके आते ही मैंने दिल का किस्सा छेड़ दिया ,
उल्फत के आदाब मुझे आते-आते आएगें। -माहिर-उल-कादरी 81
उल्फत - प्रेम, आदाब - अभिवादन

109	मोहब्बत / मुहब्बत	5

जलील आसान नहीं आबाद करना घर मोहब्बत का।
यह उनका काम है जो जिंदगी बरबाद करते हैं। 109
जलील - भृष्ट-भृष्ट , आबाद - बसा हुआ / संपन्न

गरीबों का भी कोई आसरा होता तो क्या होता ,
बुते काफिर हमारी भी खुदा होता तो क्या होता
कोई लज्जत नहीं फिर भी दुनिया जान देती है
खुदा बन्दे मोहब्बत में भी मजा होता तो क्या होता। 109
बुते काफिर - प्रेयसी , लज्जत - स्वाद

मोहब्बत जिन्दा रहती है , मोहब्बत मर नहीं सकती ,
यह तो इन्सान है , खुदा से डर नहीं सकती।
वहाँ पहुँच के यह कहना सबा-सलाम के बाद ,
कि तेरे नाम कि रट है , खुदा के नाम के बाद। 109
सबा- ठंडी हवा / पूर्वी हवा , सलाम - अभिवादन

कुछ लाग कुछ लगाव , तबियत में चाहिये ,
दोनों तरह का रंग मोहब्बत में चाहिये।
अपना भी काम निकले , वो नाराज भी न हो ,
ऐसी बात मजे की शिकायत में चाहिये। 109/29

मालूम होता जो अंजामे मुहब्बत ,
लेते न कभी भूलकर नाम मुहब्बत। 109
अंजाम - परिणाम

अनगिनत लोगों ने दुनिया में मुहब्बत की है ,
कौन कहता है कि सादिक न थे जज्बे उनके।
लेकिन उनके लिये तशहीर का सामान नहीं ,
क्योंकि वो लोग भी अपनी ही तरह मुफलिस थे। 109/198
सादिक - सच , जज्बे - भावना, तशहीर - प्रसिद्धि ,
मुफ़लिस - ग़रीब / निर्धन

मोहब्बत क्या है तासीरे मोहब्बत किस को कहते हैं ,
तेरा मजबूर कर देना, मेरा मजबूर हो जाना। -जिगर मुरादाबादी 109

कुछ और पूछिये , हकीकत न पूछिये ,
क्यों आपसे है मुझको मुहब्बत , न पूछिये। 109
हकीकत - सत्य

मोहब्बत हर किसी के दिल में घर कर लेती है अपनी ,
कभी तिरछी नजर हो कर , कभी सीधी नजर हो कर।
जहाँ देखो , जिधर देखो , वही आलम वही जलवा,
मेरी आँखों में रहता है कोई मेरी नजर हो कर। 109
आलम - स्थिति / संसार , जलवा - दर्शन

मोहब्बत में एक ऐसा वक़्त भी आता है इन्सां पर ,
सितारों की चमक से चोट लगती है रगे-जां पर। -सीमाब अकबराबादी 109
रगे-जां - जीवन की नाड़ी

मोहब्बत में एक ऐसा वक़्त भी दिल पर गुजरता है ,
कि आसुँ ख़ुश्क हो जाते हैं तुग़यानी नहीं आती।

जिसे , रौनक तेरे क़दमों ने देकर , छीन ली रौनक ,
वो लाख आबाद हो , उस घर की वीरानी नहीं जाती। -जिगर मुरादाबादी 109
खुश्क - रूखा / सूखा , तुग़यानी - बाढ़ / सैलाब ,
रौनक - चमक (तेज) , वीरानी - वीरान

अब मेरी मोहब्बत को नहीं इसकी भी परवाह ,
वो याद मुझे करते हैं या भूल गए हैं। -खुमार बारहबंकवी 109

मुहब्बत की दुनिया में सब कुछ हसीन है ,
मुहब्बत नहीं है तो कुछ भी नहीं है। -'हफ़ीज़' जालंधरी 109

क्या बुरी चीज़ है मुहब्बत भी ,
बात करने में आँख भर आई। -'नामालूम' 109

मेरे रफीक मोहब्बत के दिन भी आएँगे ,
वही हसीन सवेरा, वही कँवारी रात। -सलाम मछ्ली शहरी 109
रफीक - मित्र

मुहब्बत को हँसी-खेल , आज तूने कह दिया नादाँ ,
खबर है कुछ मुहब्बत की , बड़ी तकलीफ होती है। -फिराक 109
नादां - नासमझ / नासमझी

गुजर गई हद से जब मुहब्बत तो एक ऐसा भी वक़्त आया ,
कि कोई बैठा हुआ है वालीं पे और किसी को खबर नहीं।
वालीं - तकलीफ पर / तबाही पर -'जमील' मजहरी 109/77

मुहब्बत का तुम से असर क्या कहूँ ,
नज़र मिल गई दिल धड़कने लगा। -'अमीर' 109

देखने आए थे वो अपनी मुहब्बत का असर ,
कहने को यह है कि आए हैं अयादत करने। -'हसरत' मोहानी 109
अयादत - हालचाल पूछना

हाँ नाम तो धर चुकी मुहब्बत तेरी ,
बदनाम तो कर चुकी मुहब्बत तेरी।
कहते हैं जो लोग हम समझते भी नहीं ,
अब हद से गुज़र चुकी मुहब्बत तेरी। -फिराक गोरखपुरी 109

तुझे कुछ इल्म है कहती है दुनिया ,
मुझे तुम से मुहब्बत हो गयी है। -अदम 109
इल्म - ज्ञान / जानकारी

मुहब्बत कौसे-कुजह की तरह ,
कायनात के एक किनारे से।
दूसरे किनारे तक तनी हुई है ,
और इसके दोनों सिरे।
दर्द के अथाह समुन्दर में डूबे हुए हैं। -मीना कुमारी 109/4
कौसे कुजह - इंद्रधनुष , कायनात - सृष्टि / जगत / संसार
अथाह -बहुत

शायद इसी का नाम मुहब्बत है 'शैफ्ता" ,
एक आग सी है सीने के अन्दर लगी हुई। -शैफ्ता 109

मुहब्बत कर गमे-दुनिया सताये तो मुहब्बत कर ,
मुहब्बत इस जहाँ में एक हँसी आजार है साकी। -अख्तर शीरानी 109
गमे-दुनिया - संसार का दुःख , हसीं - सुंदर , आजार -बीमारी

दुनिया के सितम याद , न अपनी ही वफ़ा याद ,
अब मुझको नहीं कुछ भी , मुहब्बत के सिवा याद। -'जिगर' मुरादाबादी 109

उठ गया आखिर मुहब्बत का भी पर्दा उठ गया ,
अब न मेरे दिल में हसरत है , न उनके दिल में है। -जिगर मुरादाबादी 109

हसरत - इच्छा

न जाने मुहब्बत का अंजाम क्या है ,
मैं अब हर तसल्ली से घबरा रहा हूं। -एहसान दानिश 109

अंजाम - परिणाम

256	प्यार	5

जो कहा मैंने कि मुझे तुम पर प्यार आता है ,
हँसकर कहने लगे और आपको आता क्या है। -अकबर इलाहाबादी 256

जान उन पर निसार करता हूं ,
प्यार की तरह प्यार करता हूँ। 256

निसार - कुरबान

प्यार परबस तो नहीं है मेरा लेकिन फिर भी ,
तु बता दे कि तुझे प्यार करूँ या न करूं।
तूने खुद अपने तबस्सुम से जगाया है जिन्हें ,
उन तमन्नाओं का इजहार करूँ या न करूँ। 256

तबस्सुम - हास्य/ स्मित , इजहार - जाहिर करना

मुझ को उनसे प्यार नहीं है , मुझ को उनके नाम से क्या ,
आँखें यूँ ही भर आई थी , होंठ यूं ही थर्राये थे। 256

ये सूरत और भोली भाली बातें ,
तुम्हीं बताओ प्यार आए न आए। -अंजुम 256

प्यार में कर्तव्य क्या , अधिकार क्या ,
हो गणित जिसमें , भला वह प्यार क्या। -एहतराम इस्लाम 256

काम आखिर जज्बए बेइख्तियार आ ही गया ,
दिल कुछ इस सूरत से तड़पा , उनको प्यार आ ही गया। -जिगर 256
जज्बए - भावना , बेइख्तियार -बेकाबु

एक प्यार का नगमा है , मौजों की रवानी है ,
जिन्दगी और कुछ भी नहीं, तेरी मेरी कहानी है। -ताँबा 256
नगमा - गीत , रवानी - प्रवाह / बहाव

तमाम रात सितारों को क्यूं शुमार करें ,
बड़ा हसीन ये मौसम है , आओ प्यार करें। -ताहिर अली ताहिर 256/63
शुमार - गिनना , हसीन - सुंदर

266	चाहत / चाहे / चाहें / चाहा	5

लाख चाहत को छिपाये कोई पर छिपती नहीं ,
प्यार की आँख और उल्फत की नजर छिपती नहीं। 266
उल्फत - प्रेम

देर लगी आने में तुमको , शुक्र है फिर भी आए तो ,
आस ने दिल का साथ न छोड़ा , वैसे हम घबराए तो।
चाहत के बदले में हम तो बेच दें , अपनी मर्जी तक ,
कोई मिले तो दिल का गाहक , कोई हमें अपनाए तो। -अंदलीब शादानी 266
गाहक - खरीदनेवाला

कुछ जुर्म नहीं इश्क , जो दुनिया से छुपायें ,
हम ने तुम्हें चाहा है , हज़ारों में कहेंगे। -अख्तर 266

ये बात, ये तबस्सुम , ये नाज , ये निगाहें ,
आखिर तुम्हीं बताओ , क्योंकर न तुमको चाहें। -जोश मलीहाबादी 266

6	हुस्न / सौंदर्य	6

खुदा जब हुस्न देता है तो , नज़ाकत आ ही जाती है ,
जब आँखें चार होती हैं , तो मोहब्बत हो ही जाती है। 6
हुस्न - रूप/ सौंदर्य , नजाकत - कोमलता

देखा जो हुस्न यार का , तबियत मचल गयी ,
आँखों का था कसूर , छुरी दिल पे चल गयी -जलील मानिकपुरी 6

हुस्न वालों की क्या बात है ,
उनसे मेरी मुलाक़ात है। -अनजान 6

183	हसीन	6

संभाला होश तो मरने लगे हसीनों पर ,
हमें तो मौत दी शबाब के बदले। -मजाज 183
शबाब - जवानी

जब ये मिल जाएं , कलेजे से लगाएं इनको ,
इन हसीनों से किसी बात का शिकवा कैसा। -रियाज खैराबादी 183
शिकवा - शिकायत

अदा आयी , जफा आयी , गरूर आया , हिजाब आया ,
हजारों आफतें लेकर हसीनों का शबाब आया। 183

210	नाचीज़ / लाचार	6

अगर तेरा हुस्न है बेमिसाल ,
तो मेरा इश्क भी कोई चीज़ है।
बेशक तेरे लड़कपन में शक नहीं ,
मगर यह नाचीज़ भी कोई चीज़ है। 6/5
बेमिसाल - अद्वितीय / अनुपम , नाचीज़ - लाचार

79	जल्वा / जल्व	79

कदम को तलाश कैसी , नजर को तस्वीरें जुस्तुजू क्यों ,
दिल ऐसे जल्वे को ढूंढता है , जिसे मंजिल नज़र नहीं।
ये हेरते जल्वा क्या है , हमको अपनी खबर नहीं। 17

जुस्तजू - तलाश खोज , जल्वे – दर्शन

269	देखना / दिखाना	79

एक दर्द की दुनिया है इधर देख तो ले ,
कुछ और नहीं कहते मगर देख तो ले।
जिस दिलको तेरे गम ने किया दिल ऐ दोस्त ,
उस की तरफ एक नजर देख तो ले। -'फिराक' गोरखपुरी 269

बुत को बुत और खुदा को जो खुदा कहते हैं ,
हम भी देखें कि तुझे देख के क्या कहते हैं। -दाग 269

बुत - प्रतिमा/प्रेयसी

कौन कहता है बढ़ा शौक इधर से पहले ,
किसने देखा था किसे तिरछी नजर से पहले। -'जमील' मजहरी 269/130

रुक -रुक के देखते हैं वो अपना खिरामे-नाज ,
फिर -फिर के देखते हैं कोई देखता न हो। -हाजक 269

खिरामे नाज - मस्ती भरी चाल

सब लोग जिधर हैं वो उधर देख रहे हैं ,
हम देखने वालों की नज़र देख रहे हैं। -'दाग' 269

फिर हम कहाँ , कहाँ तुम, जी भर के देखने दो ,
अल्लाह , कितनी मुद्दत तुम से जुदा रहे हैं। -असर लखनवी 269

7	नाज	7

बड़ा नाज है उनको अपने शबाब पर ,
हम भी हसीन थे जब थे शबाब में। 7/8

नाज - अभिमान/ गर्व , शबाब - जवानी , हसीन - सुंदर

ये नाज़े हुस्न तो देखो कि दिल को तड़पाकर ,
नजर मिलाते नहीं , मुस्कुराये जाते हैं। -जिगर 7

नाज उठाने में जफाये तो उठाई लेकिन ,
लुफ्त भी ऐसा उठाया है कि जी जाने है। -नजीर अकबरबादी 7

जफा - बेवफाई , लुफ्त - मजा

सांस लेती है वो जमीन 'फिराक' ,
जिस पे वो नाज़ से गुजरते हैं। -फिराक गोरखपुरी 7

105	अदा / अदाएं	7

एक रंगी नकाब ने मारा , हुस्न बनकर हिजाब ने मारा ,
छुपते हैं , और छुपा नहीं जाता , इस अदाये हिजाब ने मारा। 105

नकाब - बुरखा/ पर्दा , हिजाब - संकोच/ शर्म

ये अदा , ये बेनियाजी , तुझे बेवफा मुबारिक ,
मगर ऐसी बेरुखी क्या कि सलाम तक न पहुँचे। 105

बेनियाजी - खबर नहीं होना

कुछ अदा से आज वो पहलूनशीं रहे ,
जब तक हमारे पास रहे, हम नहीं रहे। -जिगर 105

पहलूनशीं - पास बैठने वाला

वो शर्मसार तो हैं अपनी बेरुखी के लिए ,
यही अदा है बहुत , मेरी जिंदगी के लिए। -साबिर शाहाबादी 105

आफ़त तो है वो नाज भी , अन्दाज भी लेकिन ,
मरता हूँ मैं जिस पर , वो अदा कुछ और ही है। -'अमीर' मीनाई 105
नाज - अभिमान/ गर्व , अदा - हावभाव

उससे भी शोखतर है उस शोख की अदाएं ,
कर जाएं काम अपना लेकिन नज़र न आएं। -जिगर मुरादाबादी 105
अदायें - हावभाव , शौख - नटखट/चंचलता

उफ़ , यह बांकपन यह अदाएं तेरी ,
बचा के ले जाऊ दिल को कहाँ इतनी हिम्मत मेरी। -एस. सीचन 105
बांकपन - टेडी अदा

हाय तेरी ऐ अदा , देखते ही हो गये फ़िदा ,
अब तो चाहे भी गर खुदा , तो भी नहीं होंगे हम जुदा। -एच. सीचन 105
फिदा - आशक्त

अदा से देख लो , जाता रहे गिला दिल का ,
बस इक निगाह पे ठहरा है फैसला दिल का।-कल्क लखनवी 105

अदाएं उनकी दिल से खेलती है ,
वो क्या जाने वफा क्या है , जफा क्या है। 105

हर बात पे कहते हो तुम , कि तूं क्या हैं ,
तुम्हीं कहो की ये अदाएं गुफ्तगू क्या हैं। 105
गुफ्तगू - बातचीत

तन्हा न हो , हाथों की हिना ले गई दिल को ,
मुखड़े को छिपाने की अदा , ले गई दिल को। -'मुसहफ़ी' अमरोहवी 105/14
हिना - मेंहदी , अदा - हावभाव , तन्हा - अकेला

अदाएं याद , तेरे मुस्कुराके आने की ,
और उसके बाद , वो दामन छुड़ाके जाने की। 105

188	सादगी / भोलापन	7

इस सादगी पर कौन न मर जाए ए खुदा ,
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं। -गालिब 188

232	नजाकत	7

क्या नजाकत है कि आरिज़ उनके नीले पड़ गये ,
मैंने तो बोसा लिया था , ख्वाब में तस्वीर का। -रश्कीवली 232
नजाकत - कोमलता , आरिज - गाल , बोसा - चुंबन , ख्वाब - सपना

क्या नजाकत है जो तोड़ा शाखे गुल से कोई फूल ,
आतिशे गुल से पड़े छाले तुम्हारे हाथ में। 232
नजाकत - कोमलता , शाखे गुल - फूल की डाली ,
आतिशे गुल - फूल के भीतर की पंखड़ियां

इस नज़ाकत का बुरा हो , वो भला तो क्या है ,
हाथ आएँ तो उन्हें हाथ लगाये न बने। -ग़ालिब 232
नजाकत - कोमलता

237	कमसिन / नाजुक	7

ए गुल बदन नाजुक बदन , तूं बाम पर न जाया कर।
छु जायेगी चाँदनी तुझे , हो जाएगा मैला बदन। -शोहरत बुखारी 237
बाम - छत

अभी कमसिन हो नादां हो कहीं खो दोगी दिल मेरा ,
तुम्हारे लिये रखा है , ले लेना जवाँ होकर। 237
कमसिन - कम उम्र , जवां - जवान

ये रंग रूप गुलाब की कली का ,
नकशा है किसी कमसिनी का। -मजाज 237
कमसिनी - कम उम्र

कमसिनी है तो जिद भी निराली है उनकी ,
इस पै मचले हैं कि दर्दे-जिगर देखेंगे। 237/4
कमसिन - कम उम्र , दर्दे जिगर - कलेजे का दर्द

173	शरारत व शोखी	173

होती है दिल में इक खलिश बेकरार सी ,
वल्लाह, इस नजर की शरारत न पूछिए। -नज्मा 173/130
खलिश - चुभन , वल्लाह - भगवान की सोगंध

एक सी शोखी खुदा ने दी है हुस्न ओ इश्क को ,
फ़र्क़ बस इतना कि वो आँखों में है ये दिल में है। -मीर जामन अली जलाल 173
शोखी - चपलता

नासेह को बुलाओ मेरा ईमान संभाले ,
फिर देख लिया उसने शरारत की नजर से। -हफिज जालंधरी 173
नासेह – उपदेशक/धर्मगुरु

‘हसरत’ तेरी निगाहे-मुहब्बत को क्या कहूं ,
महफ़िल में उनसे रात शरारत न हो सकी। -हसरत मोहनी 173

191	मस्ती / मस्त	173

मीर' उन नीम-बाज आँखों में ,
तेरी मस्ती शराब की सी है। -'मीर' 36
नीम बाज - अधखुला

गजब निगाह से साकी ने बंदोबस्त किया ,
शराब बाद को दी पहले सब को मस्त किया। 130/36

देखा किये वो मस्त निगाहों से बारबार ,
जब तक शराब आए कई दौर हो गये। -शाद अजीमाबादी 130

निगाहों से छुप कर कहाँ जाइयेगा ,
जहां जाइयेगा हमें पाइयेगा। 130
निगाह - नजर

271	ईशारे	173

अल्लाह रे फुसँगर तेरी आँखों का इशारा ,
फिर दिल ने लिया दर्दे मोहब्बत का सहारा। -फानी 271
फुसँगर – जादूगर

297	गुस्ताखी	173

ये गुस्ताखी , ये छेड़ अच्छी नहीं है ऐ दिले-नादां ,
अभी फिर रूठ जायेंगे , अभी तो मना के बैठे हैं। -दाग 297
गुस्ताखी - बेशर्म , दिले नादां - नासमझ दिल

179	शरमाना/ शर्म/ लाज/ हया	179

संभाला खुद को पहले, फिर कहा शरमाते-शरमाते ,
न होती गर खलिश कोई हम खलवत में क्यों आते। -शकील बदायूनी 179/51
खलिश - चुभता हुआ , खलवत – एकांत

8	शबाब	8

इस उम्र में जहाँ से गुजरने के दिन न थे ,
कहता है खुद शबाब कि मरने के दिन न थे। -ग़ालिब 8
शबाब - जवानी

शबाब मयकश , जमाल मयकश ,
ख्याल मयकश , निगाह मयकश -जिगर मुरदाबादी 8
मयकश - शराबी , जमाल - सुंदरता

यह शबाब और हुस्न , आपस में गले मिलते हुए ,
मुस्कुराहट लब पे जैसे फूल कुछ खिलते हुए। -कृष्णबिहारी नूर 8/287
शबाब - जवानी , हुस्न - रूप/ सौंदर्य, लब -होंठ

255	जवानी	8

जवानी आदमी की मा-ए इल्जाम होती है ,
निगाहें नेक भी , इस उम्र में बदनाम होती है। 255

बला है , कहर है , आफत है , फिजा है , कयामत है ,
हसीनों की जवानी को जवानी कौन कहता है। 255
कहर - दुःख-क्रोध , फिजा - वातावरण

गर लुफ्त तेरी जवानी से मिल नहीं सकता ,
क्या खुदा है जो आसानी से मिल नहीं सकता। 255
गर - अगर/ यानी , लुफ्त - मजा

वो क्या जाने , कहते हैं किस को जवानी ,
अभी खेलता है लड़कपन किसी का। -अमीर 255

इन चमकदार कतारों पे नजर रखती हूँ ,
सूखे बेदाग अंगारों पे नजर रखती हूँ।
दे के मिट्टी के खिलौने मुझे न बहलाओ ,
मैं जवानी हूँ , सितारों पे नजर रखती हूँ। -बालस्वरूप 'राही' 255
बेदाग - बिना दोष के

जवानी से ज्यादा अहदे-पीरी में जोश होता है ,
भड़कता है चिराग-सुबह , जब खामोश होता है। -फानी 255/82

अहदे पीरी - वफादारी का वचन

जवानी की दुआ लड़कों को नाहक लोग देते हैं ,
ये ही लड़के मिटाते हैं जवानी को जवाँ होकर। 255

रात भी, नींद भी, कहानी भी ,
है, क्या चीज़ यह जवानी भी। -फिराक 255

है जवानी खुद जवानी का सिंगार ,
सादगी गहना है इस सिन के लिए। -'अमीर' मीनाई 255

सिन - अवस्था / उमर

इश्क का मौसम गम की हवायें , उफ़ रे जवानी हाय ज़माने ,
दिल में तमन्ना , लब पे दुआयें , उफ़ रे जवानी हाय जमाने। -अख्तर शिरानी 255

तमन्ना - इच्छा , लब - होंठ

किसी हसीना के मासूम इश्क में 'अख्तर' ,
जवानी क्या मैं सब कुछ तबाह कर लूँगा। -अख्तर शिरानी 5/255

जवानी की जो मैं तारीफ़ किया करता हूँ तो कहते हैं ,
जवानी आज आई है क़यामत तो मैं बचपन से हूँ। -मीर नसिर अली 255

कयामत - अंत

जवानी आयी और यूं दबे पावों आयी ,
कि जैसे हुस्न को खुद अपनी याद आ जाए। - अज्ञात 255

9	दिल	9

मुझ से क्यों कहता हैं जालीम कि दिल का लगाना छोड़ दे ,
जाकर उस खुदा को कह , हसीनों को बनाना छोड़ दे। -फराज 9

जालीम - अत्याचारी

हाले दिल यार को लिखूं क्यों कर ,
हाथ दिल से जुदा नहीं होता। 9

तूं भी उस शोख से वाकिफ है बता कुछ तो 'निजाम' ,
मुझसे दिल माँगे तो , इन्कार करूँ या न करूँ। -निजाम 9/208

तुझ में कुछ बात है ऐसी जो किसी में नहीं ,
यूं तो औरों से भी दिल हमने लगा रखा है। 9

दिल किसी तरह भी नहीं लगता है ,
यह नतीजा है दिल लगाने का। -साहिर होशियारपुरी 9

हो न हो दिल को तेरे हुस्न से कुछ निस्बत है ,
जब उठा दर्द तो क्यों मैंने तुझे याद किया। -जज्बी 9/6

निस्बत - संबंध

दुनिया में फिर वो काम के काबिल न रहा ,
जिस दिल को तुमने देख लिया , दिल न रहा। -जामिन 9

एक दिन की बात हो तो उसे भूल जाएँ हम,
नाजिल हो दिल पर रोज बलाएँ तो क्या करें। -'अख्तर' शिरानी 9

नाज़िल - अवतरित, बलाएँ - आफत

ठानी थी दिल में अब न मिलेंगें किसी से हम ,
पर क्या करें कि हो गये लाचार जी से हम। -'मोमिन' 9

दिल में अब आवाज कहाँ , टूट गया तो साज कहाँ ,
आँख में आँसू,लब पै खामोशी , दिल की बात अब राज कहाँ।
-मदिम उल कादरी 9

दिल का क्या मोल है , शर्मिंदा न कीजे मुझ को ,
आप की चीज है , ले जाइए कीमत कैसी। -तालिब 9/179

चल भी दिए वो छीन के , सब्रोकरारे दिल ,
हम सोचते ही रह गए , ये माजरा क्या है। -हसरत मोहानी 9
सब्रोकरारे -धीरज और चैन , माजरा - दृश्य

आपको जाते हुए देख के सँभलेगा न दिल ,
इसको बातों में लगा लूँ तो चले जाइएगा। -'नामालूम' 9

मैं बुलाता तो हूँ उनको मगर ऐ जज़्ब-ए-दिल ,
उन पे बन जाए कुछ ऐसी कि बिन आए न बने। -'ग़ालिब' 9
जज़्ब ए दिल - दिल की भावना

मोहब्बत रंग दे जाती है जब दिल , दिल से मिलता है ,
बड़ी मुश्किल तो ये है , दिल बड़ी मुश्किल से मिलता है। -जलील मानिकपुरी 9

दिल का रोना , खेल नहीं है , मुँह को कलेजा आने दो ,
थमते-ही थमते अश्क थमेंगे , नासेह को समझाने दो।
कहते ही कहते हाल कहेंगे , ऐसी तुम्हें जल्दी क्या है ,
दिल तो ठिकाने होने दो , और आप में हम को आने दो। -असर लखनवी 9
अश्क - आंसू , नासेह - उपदेशक

दिल ने आँखों से कही , आँखों ने दिल से कह दी ,
बात चल निकली है , अब देखें कहां तक पहुंचे। -तासीर 9

एक जरा-सा दिल है जिसको तोड़के भी तुम जा सकते हो
ये सोने का तौक नहीं , ये चांदी की दीवार नहीं है। -कतील शिफाई 9
तौक - हँसुली / कैदियों के गले के लोहे का घेरा

दिल वो नगर नहीं कि फिर आबाद हो सके
पछताओगे सुनो हो, ये बस्ती उजाड़ के। -मीर 9
आबाद - बसा हुआ / संपन्न

दिल नहीं मानता जहाँ जाऊँ ,
हाय मैं क्या करूँ कहाँ जाऊँ। -ग़ालिब 9

चले आओ जब चाहो दिल में हमारे ,
न दर है , न दरबान , उजड़ा मकाँ है। -मुग़ल जान तस्नीम 9

जिन्दगी सोज बने साज न होने पाए ,
दिल तो टूटे मगर आवाज़ न होने पाए। -कुँवर 9
सोज - जलन

एक सीने में न थी दो की जगह ,
दिल को खोया , दर्द को पैदा किया। -अकबर 9/4

तुम्हें भी दर्दे दिल का जाइका मालूम हो जाए ,
अगर दम भर हमारे दिल को अपने दिल में रहने दो। -शकील 9
जाइका -स्वाद

जिनको इश्कों हुस्न के दावे हैं उनके वास्ते ,
दिल हमारा चाहिए , सूरत तुम्हारी चाहिए। -निजाम रामपुरी 9/116
वास्ते - निमित्त / लिए

दिल तो सब को तेरी सरकार से मिल जाते हैं ,
दर्द जब तक न मिले , दिल नहीं होने पाते। -फानी 9/4

मैं जाता हूँ दिल को तेरे पास छोड़े ,
मेरी याद तुझको दिलाता रहेगा। -दर्द 9/27

लाखों को इन्तिखाब के काबिल बना दिया ,
जिस दिल को तुमने देख लिया , दिल बना दिया। -जिगर 9
इन्तिखाब - पसंदगी , काबिल - योग्य

कल आया था जहां से हो के बेज़ार ,
वहीं फिर आज मुझको ले चला दिल। -'निजाम' रामपुरी 9

बे-नियाजी हद से गुजरी , बन्दा -परवर कब तलक ,
हम कहेंगे हाले-दिल, और आप फरमायेंगे -"क्या?" -ग़ालिब 9/51
बे नियाजी - उपेक्षा , बंदापरवर - भगवान , कब तलक - कब तक

बेजार-नाराज क्या हँसे अब कोई , और क्या रो सके ,
दिल ठिकाने हो तो सब कुछ हो सके। -'मीर' हसन 9
बेजार - खिन्न

फूलों की तरह नफ़स महक जाते हैं ,
शाखों की तरह बदन लचक जाते हैं।
मिल जाते हैं भटके हुए दो दिल जो कहीं ,
वो रात की जुल्मत में चमक जाते हैं। -जगन्नाथ आजाद 9/51
नफस - श्वास , जुल्मत - अंधेरा

सोचता रहता हूँ मुझको जानती हो या न हो ,
मेरे दिल की धड़कनें पहचानती हो या न हो। -कृष्णबिहारी नूर 9

तंग आकर गर्दिशे-ऐयाम से ,
दिल को बहलाता हूँ तेरे नाम से। -फिजा जालन्धरी 9
गर्दिशे-ऐयाम - परेशानियों के दिन

क्या इज्जराबे-दिल से कहे , 'मीर' सर्रे-इश्क ,
यह हाल समझे , वह जो गिरफ़्तार हो कोई। -मीर तकी मीर 9/5
इज्जराबे - परेशानी , सर्रे-इश्क - दीवानापन / ज्जबा / इश्क में पागल

किसी ने मोल न पूछा दिल-ए-शिकस्ता का ,
कोई खरीद के टूटा पियाला क्या करता। -आतिश 9/38
दिल-ए-शिकस्ता - टुटा हुआ दिल

दिल के टुकड़े देखकर बे दिल , हँस हँस कर कहते हैं ,
किसने तोड़ा? क्यों कर तोड़ा? तोड़ दिया या टूट गया। -दिल शाजहानपुरी 9

आवाज दी है तुमने कि धड़का है दिल मेरा ,
कुछ ख़ास फ़र्क़ तो नहीं दोनों सदाओं में। -क़तील शिफ़ाई 9/51
सदाओं - आवाज

तुम तो दिल मांगते हो , यहां जान तलक हाजिर है ,
बात ये भी है कोई आपके फरमाने की। -अहसन 9/51

दिल क्या मिलाओगे कि हमें हो गया यकीं ,
तुमसे तो ख़ाक में भी मिलाया न जाएगा। -दाग 9
ख़ाक - राख

दिल ये कहता है कि तूं साथ न ले चल मुझको ,
जा के वां तेरे काबू से निकल जाऊंगा। - जौंक 9
वां - वहाँ

दिल उन्हें तरसता है जब वो दूर होते हैं ,
जब करीब होते हैं , आंख उन्हें तरसती हैं। -रिशी पटियालवी 9

दिल मुझे उस गली में ले जाकर ,
और भी ख़ाक में मिला लाया। - मीर 9

अब ये जाना कि इसे कहते हैं आना दिल का ,
हम हँसी खेल समझते थे , लगाना दिल का। -अमीर 9

दुनिया की बलाओं को जब जमा किया मैंने ,
धुंधली-सी मुझे दिल की तस्वीर नजर आई। -फानी 9/17
बलायें - आफत , जमा - हिसाब

बात बस से निकल चली है ,
दिल की हालत संभल चली है। -फैज 9

अर्जे-नियाजे इश्क के काबिल नहीं रहा ,
जिस दिल पे हमको नाज था , वो दिल नहीं रहा। -ग़ालिब 9
अर्जे-नियाजे - प्रेमी

मेरे दिल को चैन आ जाने की जामिन मौत है ,
तुम किसी दिन नब्जे-दिल पर हाथ रखकर देखना। -फानी बदायूनी 9
जामिन - अपराधी

दिल ना उम्मीद तो नहीं , नाकाम ही तो है ,
लम्बी है गम की शाम , मगर शाम ही तो है। -फैज 9
ना उम्मीद - बिना आशा के

मैं बुलाता हूँ उनको मगर ए दिल ,
उन पे बन आए कुछ ऐसी कि बिन आए न बने। 9

ले गया छीन के कौन तेरा सब्रो-करार ,
बेकरारी तुझे ऐ दिल कभी ऐसी तो न थी। -जफर बहादुरशाह 9
सब्रो -करार - धीरज और चैन

गुमान क्यों न करूँ तुझ पै दिल चुराने का ,
झुका के आँख सबब क्या है मुस्कुराने का। -अमानत 9/10
गुमान - अभिमान / घमंड , सबब - कारण

दिल न होता तो गुलों में आब न होती ,
ये जिन्दगी कभी यूँ बेताब न होती। -रिन्द 9/178
आब – ताज़गी , बेताब - व्याकुल/बेचैन

इश्क की बाजी सीधी बाजी , दिल जीतो और दिल हारो ,
इस सौदे में ओ दिलवालों , पाना क्या और खोना क्या। -साहिर लुधियानवी 5

दिल की हालत की तरफ किस की नज़र जाती है ,
इश्क की उम्र तमन्ना में गुजर जाती है। -फ़ैयाज़ ग्वालियरी 5

अगर अश्कों से भी , कोई न समझे मुद्दा इसका ,
तो इस से आगे मजबूर है , मेरी बेजुबां आँखें। -अख्तर अन्सारी 10

आग दिल में लगी न हो जब तक ,
आँख अश्कों से तर नहीं होती। -आरजू लखनवी 272
अश्क - आंसू

किसी के दिल को नाहक तोडना अच्छा नहीं होता ,
भरी महफ़िल में फितना छोड़ना अच्छा नहीं होता।
सहर वारे बमर से झुक रही हो जो शाख खुद ही ,
फिर उसको जोर देकर मोड़ना अच्छा नहीं होता। -सहर 51
फितना - उपद्रव , सहर वारे बमर -जादू के हमले का असर , शाख - टहनी

दिल टूटने की थोड़ी सी तकलीफ तो हुई।
लेकिन तमाम उम्र को आराम हो गया। 60

54	जिगर / कलेजा	9

पैदा हुए तो हाथ जिगर पर धरे हुए।
हम हैं जाने कब से किसी पर मरे हुए। 54

है किसका जिगर जिस पे यह बेदाद करोगे ,
लो हम तुम्हें दिल देते हैं , क्या याद करोगे। -'जुरअत' 54

कलेजे में हज़ारों दाग , दिल में हसरतें लाखों ,
कमाई ले चला हूँ साथ अपनी जिंदगी-भर की। -शायर आगा मुजफ्फ़र 54
हसरत - इच्छा

हाथ रखकर मेरे सीने पे जिगर थाम लिया ,
तुमने इस वक़्त तो गिरता हुआ घर थाम लिया। -'अमीर' मीनाई 28

158	धड़कन	9

बड़े शौक-ओ-तवज्जो से सुना दिल की धड़कनों को ,
मैं यह समझा कि शायद आपने आवाज दी होगी। -महीरुल कादरी 158
शौक-ओ-तवज्जो - उमंग और ध्यान

कोई धड़कन है , न आँसू , न उमंग ,
वक़्त के साथ ये तूफान गये। -'जोहरा निगाह' 158/77

ऐ दोस्त मेरे सीने की धड़कन तो देखना ,
वो चीज़ तो नहीं है , मुहब्बत कहें जिसे। -अदम 158

मुझे दिल की धड़कनों का नहीं ऐतबार 'माहिर' ,
कभी हो गई हैं शिकवे , कभी बन गई दुआएं। -माहिर उल कादरी 158/29

209	खूं / खून / खूने-दिल	9

खत लिखता हूँ खून से , स्याही न समझना ,
मरता हूँ तेरी याद में , जिन्दा न समझना। 209

बहुत शोर सुनते थे पहलू में दिल का ,
जो चीरा तो इक कतरा-ए-खूँ न निकला। -आतिश अकबर 209
कतरा-ए-खूँ - खून की बून्द

कितनों को जिगर का जख्म सीते देखा ,
देखा जिसे खूने दिल ही पीते देखा।
अब तक रोते थे मरने वालों को और अब ,
हम रो दिए जब किसी को जीते देखा। -'फानी' बदायूनी 209

यों आंसुओं के साथ पिया हमने खूने दिल ,
जैसे मिला के पीते हैं पानी शराब में। 209

273	पत्थर	9

वो एक पत्थर जो रास्ते में पड़ा है ,
उसे मुहब्बत संवार दे तो वही सनम है।
उसे अकीदत अगर तराश दे ,
तो वो ही खुदा है। -हिमायतअली शायर 273
सनम - प्रिय / प्रियतम , अक़ीदत - सम्मान / श्रद्धा ,
तराश - काटना / काट-छाँट, संवार - सजाना

नया चश्मा है , पत्थर के शिगाफ़ों से उबलने को ,
जमाना किस कदर बेताब है , करवट बदलने को।-अहमद नदीम कासमी 73/178
चश्मा - झरना , शिगाफ़ - छेद , बेताब - व्याकुल/बेचैन

मैं जिसके हाथ में इक फूल दे के आया था ,
उसी के हाथ का पत्थर मेरी तलाश में है। -कृष्णबिहारी नूर 273

पत्थर की मूरतों को समझा है तूं खुदा है ,
खाके-वतन का मुझ को हर जर्रा देवता है। -इकबाल 273
खाके वतन - बर्बाद जगह , जर्रा -अत्यंत छोटा टुकड़ा / कण

4	दर्द	4

दर्द जो उनसे मिले , दिल में छुपा कर रख ले ,
इससे बढ़कर कोई सौगात नहीं होती है। -हीरालाल फलक 4

दर्द से वाकिफ न थे , गम से शनासाई न थी।
क्या ही दिन थे जब , तबियत किसी पर आयी न थी। -जलील 4/5
वाकिफ - जानकारी , शनासाई - परिचय

दिले-नादां तुझे हुआ क्या है ,
आखिर इस दर्द की दवा क्या है।
जान तुम पर निसार करता हूँ ,
मैं नहीं जानता जफ़ा क्या है। -गालिब 4/9
निसार - कुरबान , जफा - बेवफाई , दिले नादां - नादान दिल

दर्द मिन्नतें करो दवा न हुआ ,
मैं अच्छा न हुआ , न बुरा हुआ। 4
मिन्नतें - प्रार्थना

सताने लगा फिर तेरा दर्दे फुरकत ,
मैं पीने पर मजबूर हूँ , पी रहा हूँ। 4
फुरकत - वियोग

अब तो यह भी नहीं रहा एहसास , दर्द होता है या नहीं होता ,
वह हमारे करीब होते हैं , जब हमारा पता नहीं होता। 4
करीब - समीप/ निकट/नजदीक

दर्द का मेरे यकीं आप करें या न करें ,
अर्ज इतनी है कि इस राज की चर्चा न करें। -वहशत कलकतवी 4/30
अर्ज - प्रार्थना , यकीं - भरोसा

सुकून से है खतरा अब , दिल को हरदम ,
कहीं वो पूछ न बैठें कि दर्द क्यूँ कम है। -हकीम नातिक 4
सुकून - चैन
दर्द कहता है मुझ से गुर्बत में ,
तुम न घबराओ यार , हम भी हैं। -गौहर 4
गुर्बत - विवशता

इश्क ने दिल में जगह की तो कजा भी आई,
दर्द दुनिया में जब आया तो दवा भी आई।
आप सोचा ही किए उस से मिलूँ या न मिलूँ ,
मौत मुश्ताक को मिट्टी में मिला भी आई। -फानी 4
कजा - मृत्यु/ मौत , मुश्ताक - इच्छुक

कोई दुनिया में अब नहीं मेरा , मेरे बारे में लोग कहते हैं ,
मैं मेरा दर्द , मेरी तन्हाई जब कि हर वक्त साथ रहते हैं। 4/77
तन्हाई - अकेलापन

वो जो पहलू से उठे , दर्द कुछ ऐसा उठा ,
थाम कर दिल को मैं , कई बार उठा बैठा । -‘नामालूम’ 4

कह कहों से तो घुटन और भी बढ़ जाएगी ,
आओ चुप रह के ही दर्द का दमाँ कर लें। -फना 4
कहकहों - खड़खड़ाते हास्य , दमाँ - इलाज

अपना दर्दे-दिल समझाने की यहाँ फुर्सत किसे ,
हम तो औरों का तड़पना देख , तड़पा किये। -आनन्द नारायण मुल्ला 4/85

दर्द ही दर्द भर गया दिल में , इतना हस्सास कर दिया गम ने ,
जब किसी आँख से गिरा आँसू , अपनी आँखों में ले लिया हमने। -शाद 4
हस्सास - स्वाभिमानी

जिसे दर्दे -दिल की खबर भी नहीं है ,
वही दर्दे -दिल की दवा जानता है। -इन्शा 4

हम अपने दर्द की तौहीन कर गए होते ,
अगर शराब न होती तो मर गये होते। -नरेश कुमार शाद 4/36
तौहीन - अपमान

अच्छा हुआ कि दर्द ने चौंका दिया मुझे ,
कुछ नींद आ चली थी शबे-इन्तज़ार में। -खामोश गाजीपुरी 4/193
शबे इन्तजार - इन्तजार की रात

चोट खाना दिल-ए-हजी न कहीं ,
दर्द रह जायेगा कहीं न कहीं। -दाग 4
दिल-ए-हजी - दुःखी दिल

हाथ रख के वो सीने पे , किसी का कहना ,
दिल से दर्द उठता है पहले कि जिगर से। -हफिज जालंधरी 4

तबीबों से मैं क्या पूछूं इलाजे-दर्दे -दिल ,
मरज जब जिन्दगी खुद हो तो फिर उसकी दवा क्या है। -अकबर इलाहाबादी 4
मरज - रोग / बीमारी

आने वाली है क्या बला सर पर ,
आज फिर दिल में दर्द है कम-कम। -जोश मलीहाबादी 4

दर्द सीने में जरा जागा तो आँखें खुल गई ,
दिल में कुछ चोटें उभर आई तो आंसू आ गए। -शायर अमरोहवी 4

अगर दर्दे मोहब्बत से न इन्सा आश्ना होता ,
न मरने का सितम होता न जीने का मजा होता। 4/109
आश्ना - दोस्त / प्रेमी

इश्क की चोट कुछ दिल पे असर हो तो सही ,
दर्द कम हो कि जियादा हो मगर हो तो सही। -जलाल 4
जो दर्द बर्फ बन के जमे दिल में पड़े पड़े ,
वह आँसुओं की राह पिघल कर चले गये। 24
बर्क - बिजली

252	सदमा	4

जमीं बन जाय कागज की , समुद्र बन जाय रोशनाई का ,
कलम कुछ लिख नहीं सकती , सदमा है जुदाई का। 252

मुहब्बत में , अब हमें आखरी सदमा उठाना है ,
जिसे दिल याद करता है , उसे दिल से भुलाना है। 252
सदमा - आधात

वो दिल में कि सदमे दो , याँ जी में कि सब सह लो ,
उनका भी अजब दिल है , मेरा भी अजब जी है। -अकबर इलाहाबादी 252

274	दुःख / दुःखता	4

जिसने किसी गरीब के दिल को दुःखा दिया ,
मानो कि उसने सारे गगन को हिला दिया। -शाद 274

सामने सबके तो हम जलन से लेते हैं नाम ,
दिल जो दुखता है तो रो लेते हैं तन्हाइयों में। 274/161

अपना दुःखड़ा हर जगह , हरजा न रोना चाहिए ,
हाले-दिल कहने को , ऐ नादाँ सलीका चाहिए। -अकबर 274/94

हरजा - व्यर्थ /अनर्गल , नादां - नासमझ
सलीका - रीतभात/ शिष्टाचार

291	कसक	4

इक कसक दिल में पैदा हुई है ,
जब भी गुजरा हूँ तेरी गली से। -दिल देहलवी 291/9

वो आते हैं तो , दिल में कुछ कसक मालूम होती है ,
मैं डरता हूं , कहीं इसको मुहब्बत तो नहीं कहते। -अदम 291

कसक - टीस

फिर ये कैसी कसक सी है दिल में ,
तुझ को मुद्दत हुई कि भूल चुका। -फिराक 291

कसक – टीस

65	गम	65

इस वक़्त को क्या तुम जान सको ,
जब दर्द भी प्यारा होता है ।
दुनिया ये मोहब्बत में हर गम ,
जीने का सहारा होता है । 65

अब उनका क्या भरोसा , वो आयें या न आयें ,
आ ऐ गमे मुहब्बत , तुझको गले लगायें। 65

गमे मुहब्बत - प्रेम की पीड़ा

आज मैं कर रहा था गमे जिंदगी का हिसाब ,
आज तुम याद बेहिसाब आयी। -फैज अहमद फैज 65

गमे दुनिया ने हमें , जब कभी नाशाद किया ,
ए गमे दोस्त तुझे , हमने बहुत याद किया। 65
गमे दुनिया - संसार का दुःख , नाशाद - खिन्न

खुशी न गम की न गम खुशी का ,
अजीब आलम है ये जिंदगी का। -शकील बदायुनी 65/33
आलम - संसार

जिंदगी की राहों में गम भी साथ चलते हैं,
कोई गम में हँसता है , कोई गम में रोता है। -खातिर गजनवी 65
सहराओ - मरूस्थल/ रेगिस्तान , वादे नसीम - प्रेमी से मिलन ,
करार - चैन

हर पराए गम पे दिल रोता रहा ,
अब तो अपना भी उसे मातम नहीं। -'अर्श' मलसियानी 65
मातम - शोक

खुद को तेरे गम में मिटा जाएँगे ,
जाते हुए याद अपनी दिला जाएँगे।
उजड़ेंगे अगर जहानेफानी तो यहीं ,
एक दर्द की दुनिया बसा जाएँगे। -'फिराक' गोरखपुरी 65/4
जहानेफानी - नश्वर संसार

मैंने हर गम खुशी में ढाला है , मेरा हर एक चलन निराला है ,
लोग जिन हादसों से मरते हैं , मुझको उन हादसों ने पाला है। 65
हादसों - दुर्घटनाओं

एक तेरे छूटने का गम , एक गम उनसे मिलने का ,
जिनकी इनायतों से जी और उदास हो गया। -फिराक गोरखपुरी 65/192
इनायत - कृपा

कुछ मुहब्बत के गम , कुछ जमाने के गम ,
यूँ भी नाशाद हम , यूँ भी नाशाद हम।
जिंदगी का सफर है कि वादा तेरा ,
जिस जगह से उठे थे , वहीं हैं कदम। 65

नाशाद - खिन्न

हम को जिसका गम है , उसको कुछ हमारा गम नहीं ,
यह मुसीबत उम्र भर , रोने को भी कुछ कम नहीं। 65

एहसासे-ख़ुशी मिट जाती है , अफ़सुर्दा तबियत होती है ,
दिल पर वो घड़ी भी आती है , जब गम की जरुरत होती है।
दो हर्फ़ भी मेरे सुन न सके , तुम इतने क्यों बेजार हुए ,
मैंने तुम्हें अपना समझा था , अपनों से शिकायत होती है। -माहिरुल कादिरी 65/29

एहसासे-ख़ुशी - ख़ुशी का अहसास ,
अफ़सुर्दा - बैचेनी , हर्फ - शब्द , बेजार - नाराज

जानता हूँ हो रहा है जो न होना चाहिए ,
बहस यह है कब तलक इस गम में रोना चाहिए। -अकबर इलाहाबादी 65

कब तलक - कब तक , बहस - चर्चा

शग्ल-ए-शब-ए-तन्हाई किससे कहें हम अपना ,
दो चार घड़ी रोकर , बहलाते हैं गम अपना। -मिर्जा तकी 65

शग्ल-ए-शब-ए-तन्हाई - रात के अकेलेपन की रीत ,
शग्ल - व्यवहार / रीत

ग़र दिल में असर न तेरे गम का होता ,
काहे को यह लोटता तड़पता होता।
कैसी आराम से गुजरती औक़ात ,
ऐ काश कि मेरा दिल भी तुझ-सा-होता। -मोमिन खाँ मोमिन 65

औक़ात – हैसियत

क्या कीजिये गम बयाँ दिले-मुजतर के ,
          ताचन्द सितम उठाऊँ दुनिया भर के।
पैदा ही नहीं हुआ था मैं अब तक ,
          या भूल गया तूं मुझे पैदा करके   -अकबर इलाहाबादी 65/107
दिल मुजतर - बेचैन दिल , ताचन्द - कब तक
सितम - अत्याचार

कब कोई किसी के लिए गम खाता है ,
          वो नेक है जो बदी से डर जाता है।   65
नेक - अच्छा/ भला , बदी - बुराई

कमजोर जान के भी ऐ गमे-फिराक ,
          दिल ने लिया है तेरा सहारा कभी-कभी।   -जगन्नाथ 'आजाद' 75
गमे-फिराक - विरह का गम

एक वीरान-सी ख़ामोशी में , कोई साया-सा सरसराता है,
          गम की सुनसान काली रात में , दूर एक दीप टिमटिमाता है।
मेरे अश्कों के आईने में आज कौन है , वह जो मुस्कुराता है ,
          कौन दस्तक-सी देता रहता है , कैसा पैगाम आता रहता है।
अश्क - आंसू , दस्तक सी - बुलाना/ दरवाजा ठोकना ,   -मीना कुमारी 65/206
पैगाम - पत्र / संदेश , साया -परछाई

कहूं किससे मैं , क्या है गमे-इश्क , बुरी बला है!
          मुझे क्या बुरा था मरना अगर एक बार होता।   -ग़ालिब 65/40

मैं आज सिर्फ मुहब्बत के गम करूँगा याद ,
          ये और बात है कि तेरी याद आ जाए।   -फिराक गोरखपुरी 65/27

तेरी जुदाई का गम उम्र भर रहा लेकिन ,
          इस एक गम ने मुझे जिन्दगी भी बख़्शी है।   -कैस रामपुरी 95

आजा , मरता हूँ गम के मारे आजा ,
भीगी हुई रात के शरारे आजा।
ऐ शाम का वादा करके जाने वाले ,
अब डूब रहे हैं देख तारे आजा। -जोश मलीहाबादी 23/65

शरारे - चिनगारी

मिला भी गम तो वो गम जिंदगी के काम आया ,
मेरे लिये हर एक आँसू में एक जाम आया। 65

गम में गुजरी है या ख़ुशी में गुजरी ,
तारीकी-ए-शब की चाँदनी में गुजरी।
हमदम हूँ निसार जिन्दगी पर अपनी ,
गुजरी है जो साँस इश्क़ में ही गुजरी। -'जिगर' बरेलवी 113

तारीकी-ए-शब - अँधेरी रात, निसार - न्यौछावर , हमदम – दोस्त

72	खामोशी / खामोश	65

हमें तेरी मोहब्बत में फक्त दो काम आते है ,
जो रोने से कभी फुरसत मिली खामोश हो जाना। -फानी 72/109

फक्त - सिर्फ़/ मात्र

फिजुल बातों से खामोशी बेहतर ,
चाहे जो कहें लोग हमें बेजुबान कहते हैं। 72

फिजुल - बेमतलब

मेरी ख़ामोशी से बरहम न हो मुझसे ऐ दोस्त ,
चलने वाले ही दम लेते हैं चलने के लिए।
पी लिया करते हैं जीने की तमन्ना में कभी ,
डगमगाना भी जरुरी है संभलने के लिए। -वामिक जौनपुरी 72/150

बरहम - क्रोध / नाराज

बेकार नहीं बना है एक तिनका भी ,
खामोश दियासलाई में भी आग है। -अमजद हैदराबादी 72

खामोश हुए हैं आप अपने गम में ,
अगली सी कहाँ चर्ब जुबानी हम में।
घुल घुल के फ़ना हो गए हम आखिरे-कार ,
लौ तेज थी शम्म ढल गई एक दम में। -अकबर इलाहाबादी 72/26
चर्ब जुबानी - बात करने की कला , फना - मृत्यु , शम्म -दीया

अब खामोशी कहे तो कहे कुछ दिलों के राज ,
दिल में सुखन थे लाख सुनाये कहाँ गये। -मुगन्नी तबस्सुम 72
सुखन - कविता

186	रंज	65

वो मजे इश्क में आए हैं कि जी जानता है ,
रंज भी ऐसे उठाये हैं , जी जानता है। -आनन्द नारायन मुल्ला 5
रंज - गम

207	नाशाद / गमगीन / दिलेनाशाद	65

दिले-नाशाद को तुम ने न कभी शाद किया ,
भूल बैठें हमीं, फिर न कभी याद किया। -कमर 207
दिले नाशाद - अभागा दिल , शाद - प्रसन्न

250	पशेमानी / पश्चाताप / पशेमां	65

कर रहे थे जाने हम अल्लाह से किस का गिला ,
आप अपना सर झुका कर क्यों पशेमां हो गए। -सीमाब अकबराबादी 250
गिला - फरियाद , पशेमां - लज्जित /शर्म

वो आए है पशेमां लाश पर अब ,
तुझे ऐ जिन्दगी लाऊं कहां से। -मोमिन 250
पशेमां - लज्जित /शर्म

10	आँखें	10

अब भी लौट आओ तुम मेरी बाँहों में ,
खोजती हैं ये आँखें तुम्हें हर एक पल। 10

तेरी इन आँखों में डूब फिर निकल न सके ,
लाख चाहा मगर भाग्य हम बदल न सके।
निगाहें चार हुईं कदम लड़खड़ा ही गये।
सहारे लाख मिले मगर हम संभल न सके। 10

तेरी आँखों का कुछ कसूर नहीं ,
हाँ मुझी को खराब होना था। 10

मेरी साँस लरज उठी है देख के प्यार का यह आलम ,
तेरी आँख से टपका है आसूँ बन कर मेरा गम। -आरिफ 10
लरज - झनझनाहट , आलम - संसार

आँखों में अश्क आए तो हँसने का लुत्फ क्या ,
इतना न गुदगुदाओ कि हम रो दिया करें। 10/132
अश्क - आंसू , लुफ्त - मजा

यह सब कहने की बातें हैं , हम उनको छोड़ बैठे हैं ,
जब आँखें चार होती हैं , मुरव्वत आ ही जाती है। -जहीर देहलवी 10
मुरव्वत -सज्जनता

जब मिली आँख होश खो बैठे ,
कितने हाजिर-जवाब हैं हम लोग। -जिगर 10

जीने न देंगी आँखें तेरी दिलरुबा , मुझे ,
इन खिडकियों से झाँक रही है क़ज़ा मुझे। -'शम्म' लखनवी 10
क़ज़ा - मृत्यु/ मौत , दिलरूबा –प्रियतमा

बसी हुई है जिन आँखों में शोखियों की बहार ,
अदा-ए-शर्म उन्हें क्यों सिखाई जाती है। -'हसरत' मोहनी 10
अदा ए शर्म - हावभाव/ शर्म , शोखियों – नटखट
ओ आँख चुरा के जाने वाले ,
हम भी थे कभी तेरी नज़र में। -'जलील' मानकपुरी 10/130

आँखों ही में रहे हो दिल से नहीं गये हो ,
हैरान हूँ यह शोखी आई तुम्हें कहाँ से। -'मीर' 10
शोखी - नटखट / चंचलता

शक न कर मेरी खुश्क आँखों पर ,
यूँ भी आँसू बहाये जाते हैं। -हजरते सागर निजामी 10

आया ही था खयाल कि आँखें छलक पड़ी ,
आंसू किसी की याद से कितने करीब थे। -अंजुम 10

'जफ़र' आँखें कहे देती हैं तेरी , क्या छुपाती है ,
मये-उल्फत की कैफियत , छुपाये नहीं छुपाती। -बहादुर शाह जफ़र 81
मये-उल्फत - शराब प्रेम की

गैरों से वे इशारे हम से छिपा छिपा कर ,
फिर देखना इधर को आँखें मिला मिला कर।
एक लुत्फ की निगाह भी हम ने न जानी उन से ,
रक्खा हमें तो उस ने आँखें दिखा दिखा कर। -मीर 71/136
लुफ्त – मजा

61	आँसू / अश्क	10

ऐसा रोना नसीब हो जिसको ,
अश्क पोंछें वह अपने दामन से। -मीर 61/13
अश्क - आंसू , दामन - आंचल/पल्लू

वही हम थे कि रोतों को हँसा देते थे ,
अब वही हम हैं कि थमता नहीं आसूँ अपना। 61

आँसू तो बहुत से है , आँखों मैं 'जिगर' लेकिन ,
बिंध जाये सो मोती है , रह जाय सो दाना है। -जिगर 61

चलो आज जी भर के आँसू बहा लें ,
यह तारों भरी रात आए न आए। -खिजां गाजीपुरी 61/57

अश्कों की आँच से मैं मिलता रह सुकूँ ,
शोलों से दिल की प्यास बुझाता रहा हूँ मैं। -कतील शिफाई 61/153
अश्क - आंसू , सुकूँ - सुकून / चैन , शोलों - आग , चिनगारी

इन्हें आँसू समझ कर यों न मिट्टी में मिला जालिम ,
प्यामे दर्दे-दिल है और आँखों की जबानी है। -ग़ालिब 61
प्यामें - प्यास , दर्दे दिल - दिल का दर्द , जालिम - अत्याचारी / क्रूर

जिसमें अश्कों के दीप जलते हैं ,
कितनी रोशन वह रात होती है। -नूरजहाँ 'नूर' 61

समुन्दर कर दिया नाम उसका , नाहक सबने कह -कहकर ,
हुए थे जमा कुछ आँसू , मेरी आँखों से बह-बहकर। -सौदा 61

आज आँसू तुमने पोंछे भी तो क्या ,
यह तो अपना उम्र भर का काम है। -'जलील' मानकपुरी 61

हम तो 'हजीं' ये समझे हैं दामन जो भिगो दे पानी है ,
आंसू तो वही इक कतरा है , पलकों पे जो तड़पे बह न सके। -हजीं 61/13
कतरा - बूंद

मेरी आँखें भी है वीरां , मेरा दिल भी खाली ,
चन्द आंसू भी नहीं खुद पे बहाने के लिए। -मखमूर सईदी 61
वीरां - उजड़ा हुआ

दुनिया का ऐतबार करें भी तो क्या करें ,
आंसू तो अपनी आंख का अपना हुआ नहीं। -मुअज्ज्ज हुसैन अदीब 61
ऐतबार - भरोसा/विश्वास

मुद्दत के बाद उसने जो की लुफ्त की निगाह ,
जी खुश तो हो गया मगर आंसू निकल पड़े। -कैफ़ी आजमी 61
निगाह - नजर

ये हालत है कि कुछ पाकर ख़ुशी दिल को नहीं होती ,
अगर कुछ खो भी जाता है तो उसका गम नहीं होता।
कभी हँसते हैं और आँखों में आँसू आए जाते हैं ,
कभी रोते हैं और दामाने-मिजगां नम नहीं होता। -मन्जूर 51
दामाने - दामन , मिजगां - पलकें

130	नजर / निगाह / निगाहें	10

नज़र से नज़र की मुलाकात हो गयी ,
रहे दोनों खामोश मगर बातें हो गयी। 130

खुदा जाने मेरा क्या वजन है उनकी निगाहों में ,
सुना है आदमी को वोह नज़रों में तोल लेते हैं। -अकबर इलाहाबादी 130

तिरछी नजरों से न देखो आशिके दिलगीर को।
कैसे तीरन्दाज हो सीधा तो कर लो तीर को। -जौक 130
आशिके दिलगीर - दुखी प्रेमी

उस की तर्जे निगाह मत पूछो ,
जी ही जाने है आह मत पूछो। - मीर 130
निगाह - नजर

हर हाल में जी लेते हैं जीने वाले ,
चाक सी लेते हैं सीने वाले।
गर सागरों मीना न हुआ , तो हुआ क्या साकी ,
नजरों से पी लेते हैं पी लेने वाले। 130
चाक - फटा हुआ , मीना - प्याली , गर - अगर/ यानी

नजरबाज ने नजर से नजर मिला के नजर को देखा ,
नजर गिरी तो नजर के द्वार नजर उठा के नजर ने देखा। 130

तुम मुझ से छुपकर रहे सब की निगाहों में ,
मैं तुमसे छुपकर किसी काबिल न रहा।
उठते हैं तेरी राह में जब से मेरे कदम ,
अहसासे कुबों दुरिये मंजिल नहीं रहा। -जिगर 130/67
काबिल - योग्य , अहसास - अनुभव ,
कुबों दुरिये मंजिल - मंजिल के नजदीक व दूर

कोई न बच सका , तेरी कातिल निगाह से ,
जर्रे भी सदके हो गए , उठ उठ के राह से।
मैं जानता हूँ , जानते हो मेरा हाले दिल ,
मैं देखता हूँ , देखते हो किस निगाह से। -'जिगर' मुरादाबादी 130
कातिल निगाह - कातिल नजर , जर्रे - कण , सदके - आघात

दुबारा दिल में कोई इंकलाब हो न सका ,
तुम्हारी पहली नजर का जवाब हो न सका। -नातिक लखनवी 130
इंकलाब - क्रांति

पहली नज़र भी आपकी उफ़ किस बला की थी ,
हम आज तक हैं चोट वो दिल पर लिए हुए। -असगर गोंडवी 130
बला - आफत

कहीं भी जा कर नजर को करार मिल न सका ,
कभी चमन से कभी कहकशां से गुजरा हूँ।
तेरे करीब से गुजरा हूँ इस तरह कि मुझे ,
खबर भी हो न सकी मैं कहाँ से गुजरा हूँ। -आजाद 130/157
करार - चैन , चमन - बाग , कहकशां - आकाश

साफ़ ज़ाहिर है निगाहों से कि हम मरते हैं ,
मुँह से कहते हुए यह बात मगर डरते हैं। -'अख्तर' अंसारी 130

नज़र उस हुस्न पर ठहरे तो आखिर किस तरह ठहरे ,
कभी तो फूल बन जाए , कभी रुखसार हो जाए।
चला जाता हूँ हँसता-खेलता मौजे-हवादिस से ,
अगर आसानियां हों,जिन्दगी दुश्वार हो जाए। -असगर गोंडवी 130
रुखसार - गाल , मौजे हवादिस - दुर्घटना की लहर , दुश्वार - मुश्किल

झुकती है निगाह उसकी मुझ से मिल कर ,
दीवार से धूप उतर रही है गोया। -जोश मलीहाबादी 130
गोया - मानलो

नजर मिला न सके हमसे वो, तो क्या गम है ,
कि दिल से दिल के धड़कने का सिलसिला तो मिला। -सरूर 130

शबाब आया कि उन नीची निगाहों ने गज़ब ढाया ,
ये फ़ितने सर उठाने के लिए तैयार बैठे हैं।
न वो अरामे-जाँ आया,न मौत आई , शबे-वादा ,
इसी धुन में हम उठ-उठकर हज़ारों बार बैठे हैं। -हसरत मोहानी 130
शबाब - जवानी , फितने - उपद्रव , अरामे जाँ - जान को आराम ,
शबे वादा - रात का वादा

तड़प शीशे के टुकड़े भी उड़ा लेते हैं हीरे की ,
मोहब्बत की नज़र जल्दी से पहचानी नहीं जाती।
नज़र जिसकी तरफ करके निगाहें फेर लेते हो ,
क़यामत तक फिर उस दिल की परेशानी नहीं जाती।
निगाह - नजर, कयामत - अंत -मुल्ला पंडित आनन्द नारायण 130

वह नज़र कामयाब हो के रही ,
दिल की बस्ती खराब हो के रही। -फानी बदायूनी 130
कामयाब - सफल , बस्ती -आबादी / गाँव

नज़रों को मिलाके मुस्करा दो तो कहूँ ,
दिल को थोड़ा-सा आसरा दो तो कहूँ।
होंठों में फँसी हुई है कब से इक बात ,
माथे पे शिकन जरा हटा दो तो कहूँ। -पं आनन्द नारायण 'मुल्ला' 130
शिकन - करचली / सिलवट

उठ नहीं सकती हया के बोझ से ,
रहम आता है निगाहे यार पर। -'दाग' 130
हया - लज्जा, रहम - दया

नजर से उनकी पहली ही नजर यूँ मिल गई अपनी ,
कि जैसे मुद्दतों से थी किसी से दोस्ती अपनी। -'जिगर' 130/257
मुद्दत - समय / दीर्घ काल

खुद अपनी निगाहों से गिरा जाता हूँ ,
क़तरा सा जमीन में समा जाता हूँ।
एहबाब मेरे दफ़्न की क्यों फ़िक्र में है ,
मैं शर्मे -गुनाह से खुद गड़ा जाता हूँ। 130/69
कतरा - बूंद , एहबाब - मित्र , शर्मे-गुनाह - लाज

हाँ पाक निगाहों से तुझे देखा था ,
नमनाक निगाहों से तुझे देखा था।
वो दिल था जिसने मुझको गाफिल पाके ,
बेबाक निगाहों से तुझे देखा था। -फिराक गोरखपुरी 130
पाक - पवित्र ,नमनाक निगाह -आंसुभरी आंख ,
निगाह - नजर , गाफिल -बे-सुध / असावधान, बेबाक - निडर

नज़र मिला के मेरे पास आ के लूट लिया ,
नज़र हटी थी कि फिर मुस्कुरा के लूट लिया। -जिगर मुरादाबादी 130/287

हरदम नज़र को ही न थी जल्वों की आरजू ,
जल्वों ने भी नज़र को पुकारा कभी-कभी। -मीना काजी 130
जल्वे/जलवे - दर्शन , आरजू - इच्छा/ प्रार्थना

निगाहे-यार मेरी काम कर गयी अपना ,
रुलाके उठे थे वो , मुस्कुराके बैठ गये। -नज्म 130
निगाहे - यार - यार की निगाह

दो घड़ी आँखों से जब भी तूं हुआ है ओझल ,
ढूँढने लगती है नजर तुझ को दिल के दर्पण में। -अनजान 130

हजार सही लाख सही , सारा जहाँ हँसी सही ,
मैं अपनी नज़र को क्या कहुँ , मुझे तूं ही एक पसंद है। 130

नजर आते थे तुम तो बेजुबां से यह बातें आ गयी तुमको कहां से ,
सुनाऊं दर्दे दिल तुमको कहां से छलक आते हैं आंसू दरमियां से। 130/4
दरमियां -बीच में

मुझी को सब ये कहते हैं , कि रख नीची नज़र अपनी ,
कोई उनको नहीं कहता न निकलो यूँ अंधे होकर। -अकबर इलाहाबादी 130

बिगड़ना हो तो पहले आप बिगड़ें अपनी सूरत पर ,
नज़र का जुर्म क्या है , यह नज़र को नज़र क्यों आई। -नूर नारवी 130

जो निगाह की थी जालिम तो फिर आँख क्यों चुराई ,
वहीं तीर क्यों न मारा जो जिगर के पार होता। -अमीर मिनाई 130
निगाह - नजर

आँचल सम्भालते है , वह सीने पर नाज से ,
यह कहके, पड़ रही है तुम्हारी नज़र कहाँ। -हसीन साहब 130
नाज - अभिमान/ गर्व

सौ-सौ उम्मीदे बंधती हैं इक-इक निगाह पर ,
मुझको न ऐसे प्यार से देखा करे कोई। -इकबाल 130

कैसा नजारा , किसका इशारा , कहाँ की बात ,
सब कुछ है और कुछ नहीं नीची निगाह में। -दाग 130
नजारा - मंजर

नज़र में उसने इस अन्दाज से देखा मुझको ,
मरते-मरते हुई जीने की तमन्ना मुझको। -*सालिक लखनवी* 130
नज़र - आखिरी सांस

नज़र का वक़्त है , बैठे रहिये ,
आप उठे तो कयामत होगी। -सफी लखनवी 130
नज़र - आखिरी सांस

वो आते हैं 'शकील' जब अपने दिल से हाथ धो बैठो ,
निगाहें-नाज़ की कीमत अदा करने का वक़्त आया है। -शकील बदायूनीं 130
निगाहें-नाज़ - मस्त नजर

वो दुश्मनी से देखते हैं , देखते तो हैं ,
मैं शाद हूं कि हूं तो किसी की निगाह में। -अमीर मीनाई 130
शाद - खुश

पहले तो शौके -दीद में सब कुछ भुला दिया ,
अब मैं नजर को ढूढ़ रहा हूं नजर मुझे। -तस्वीर खानम अमरोहवी 130
शौके दीद - दिखाने की इच्छा

अदब लाख था , फिर भी उस की तरफ ,
नजर मेरी अक्सर , बहकती रही। 130

132	रोना / रुलाना	10

दुनिया से अलम 'जौक' उठ जायेंगे ,
हम क्या कहें क्या आए थे क्या जायेंगें।
जब आए थे रोते हुए आए थे ,
अब जायेंगें औरों को रुला जायेंगें। -जौक 132
अलम - दुःख/ पीड़ा

जो पूछता है कोई , सुर्ख क्यों है आज आँखें ,
तो आँखें मलके मैं कहता हूँ , रात सो न सका।
हजार चाहूँ , मगर ये न कह सकूंगा कभी ,
कि रात रोने की ख्वाहिश थी मगर रो न सका। -अख्तर 132
सुर्ख - लाल रंग

जी बहुत चाहता है रोने को ,
        है कोई बात आज होने को।   -अ........ 132

जी उसका भी भर आया, रुलाकर मुझको ,
        ठण्डा भी न रहा खुद भी जलाकर मुझको।
खुद मिल गया ख़ाक में मिलकर आखिर ,
        क्या फतह हुई शिकस्त पाकर मुझको।   132
फतह - जीत , शिकस्त - पराजित/हारा हुआ

उसने रुलाने में कमी कुछ नहीं की ,
        पर होंठों पे मेरे अभी तक हँसी है।   -गिरिराजशरण अग्रवाल 132

नातवानी का बुरा हो, गश पे गश आने लगे ,
        दो घडी दिल खोलकर रोना भी मुश्किल हो गया।   -ययाना 132
नातवानी - कमजोरी , गश पे गश - बेहोश

मैं रो रहा हूँ जो दिल की बेकसी के लिए ,
        वरना मौत तो दुनियाँ में है सभी के लिए।   -सकिल 132/40
बेकसी - लाचार

दिल ही तो है न संग -ओ -खिश्त दर्द से भर न आए क्यों ,
        रोयेंगे हम हजार बार कोई हमें सताए क्यों।   -ग़ालिब 132
संग-ओ-खिश्त - पत्थर और ईंट

थमते-थमते थमेंगें आंसू ,
        रोना है कुछ हंसी नहीं है।   -फानी बदायूनी 132

सबब हर एक मुझसे पूछता है मेरे रोने का ,
        इलाही सारी दुनिया को मैं कैसे राजदां कर लूं।   -ताजवर नजीमाबादी 132
राजदां - रहस्य जानने वाला

कौन रोता है किसी और की खातिर ऐ दोस्त ,
सबको अपनी ही किसी बात पे रोना आया। -साहिर लुधियानवी 132

अगर जानते रोयेंगे जिन्दगी भर ,
तेरे प्यार में हम घड़ी भर न हँसते। -ललित 'शबाब' 132

187	भौहें / चितवन	10

भवें तनती हैं , खंजर हाथ में है तन के बैठे हैं ,
किसी से आज बिगड़ी है जो वो यूं बन के बैठे हैं। -दाग 187

204	काजल	10

आँखें जो मिली कुछ तेरे काजल ने कहा ,
उड़ते हुए कुछ जुल्फों के बादल ने कहा।
वो राज जो कह सका न खुलकर कोई ,
वो तेरे लिपटते हुए आँचल ने कहा। -जाँनिसार 'अख्तर' 98

295	तीर / तीरंदाज़	10

आपने तीर लगाया तो कोई बात न थी ,
जख्म मैंने जो दिखाया तो बुरा मान गये। -हमीद अजीमाबादी 295/129

जाती है दूर बात निकल कर जुबान से,
फिरता नहीं वह तीर जो निकला कमान से। -मस्त्ल बनारसी 51

300	पलकें	10

आते ही सामने झिझक ने की है देर ,
है देर तो अब पलक झपक ने की है देर।
बस जायेंगे तेरे दिल में हम आप ही आप ,
बस आँख उठा के तेरे तकने की है देर। -मनमोहन तल्खी 187/10

झिझक – झिझकना

फिर आ गया हूं आपकी पलकों को चूमने ,
इसके बगैर दर्द का चारा नहीं हुआ। -अज्ञात 300

11	जुल्फ / गेसू / बाल / केश	11

दिल को नाज है कि सुलझाओ , पर लेकिन मैंने देखा है ,
सुलझाने से और उलझा है , तेरी जुल्फ का एक -एक खम। 11
नाज - अभिमान , खम - बल , टेड़े

अभी 'अदम' क्या यकीन आए कि चाँदनी रात हो गयी है ,
जो जुल्फ बिखरी तो दिन ढलेगा वो चाँद निकला तो रात होगी। -अदम 11/49
यकीन - विश्वास
रात ने खोल दिये अपने मुलायम गेसू ,
मेरे सरताज ये माथे पे शिकन कैसी है।
सेज की गोद में हँसते हुए फूलों की कसम ,
आज हर बात में काँटों की चुभन कैसी है। 11/59
गेसू - केश-बाल , सरताज - सर्वेसर्वा ,
शिकन - सिकुड़न / सिलवट

मैं सोचता हूँ जमाने का क्या हाल होगा।
अगर ये उलझी हुई जुल्फ तूने सुलझाई। 11

तेरा ही नाम ले कर जिया करते हैं ,
तेरा ही जहराबे-हिज्र पिया करते हैं।
जूड़ा खुला तो जुल्फे सियाहफाम में फँसा ,
छूटा था दिल कफस से,सो फिर दाम में फँसा। 11
जुल्फें - बाल/ केश/ बालों की लट , सियाहफाम -काला,
कफस - कैद, फाम - काला , दाम - जाल

किस ने भीगे हुए बालों से ये झटका पानी ,
झूम के आई घटा , टूट के बरसा पानी। -आर्जू लखनवी 11

पड़ गयी पाँव में तकदीर की जंजीर मगर ,
हम तो इसको भी तेरी जुल्फ का बाल कहते हैं। -क़तील शिफ़ाई 11
तकदीर - भाग्य

बलाएँ जुल्फ-ए-जानाँ के अगर लेते तो हम लेते ,
बला यह कौन लेता अपने सर , लेते तो हम लेते। -नामालूम 11
बलाएँ - आफतें , जुल्फ-ए-जानो - बालों की लट

बहुत मुश्किल है दुनिया को सवाँरना ,
तेरी जुल्फों का पेचो-खम नहीं है। -मजाज 11
जुल्फें - बालों की लट , पेचो खम - बल/ टेडेमेडी

मैं न कहता था की सुलझा लो ये जुल्फे-मंतशिर ,
अब तुम्हीं देखो जमाना कितना उलझा जाए है। -सलाम मछ्ली शहरी 11
जुल्फे मंतशिर - उलझे बाल / बिखरे बाल

दरिया पे जब नहाकर कल उसने बाल बाँधे ,
हमने भी अपने दिल में क्या क्या खयाल बाँधे। -मुसहफ़ी 11/95

हम हुए,तुम हुए कि मीर हुए ,
उसकी जुल्फों के सब असीर हुए। -मीर 11
जुल्फें - बाल/ केश/ बालों की लट , असीर - बंदी/ कैदी

पूछा जो उनसे चाँद निकलता है किस तरह ,
जुल्फ़ों को रुख पे डाल के झटका दिया कि यूँ। -आरजू लखनवी 11/49
जुल्फें - बाल/ केश/ बालों की लट , रुख - चेहरा / गाल

जब तक तेरी निगाह ने तौफ़ीक़ दी मुझे ,
मैं तेरी जुल्फ़ बन के सँवरता चला गया। -अदम 11/130
तौफिक - ईश्वर कृपा

बिखरे जो हँसी जुल्फ बिखर जाने दे ,
इस वक्त को कुछ और संवर जाने दे।
बाकी न रहे सुबह का धड़का कोई ,
एक रात तो ऐसी भी गुजर जाने दे। -जाँनिसार 'अख्तर' 11

नहाने में जो लहराती है जुल्फ-ए-यार पानी में ,
तड़पने लगती हैं पानी पे मौजें मछिलयाँ होकर। -ख्वाजा वजीर 11
जुल्फ ए यार - प्रियसी के बाल , मौजें - लहरें

जहाँ-जहाँ तेरी जुल्फों से ओस टपकी थी ,
वहाँ -वहाँ से अभी तक गुबार उठता है।
जहाँ-जहाँ तेरी नज़रों के फूल बिखरे थे ,
वहाँ -वहाँ दिले-वहशी पुकार उठता है। -साहिर 11
गुबार - धूल , दिले वहशी -उन्मत्त दिल

तेरे पुरपेच गेसुओं की कसम ,
राहे-हस्ती में भी कई खम थे।
लाज रख ली तेरी जुदाई ने ,
वरना दुनिया में और भी गम थे। 11
पुरपेच - टेडा-मेडा , खम - बल

बिखेर दे जो वो बालों को अपने मुखडे पर ,
कि मारे शर्म के आई हुई घटा फिर जाए। -'मुसहफ़ी अमरोहवी' 11

यूँ न बिखराओ अपनी जुल्फों को ,
मुँह छुपाती फिरेगी ये रात कहाँ? -रईस रामपुरी 11
जुल्फें - बालों की लट

आइना देख-देख के ये कह रहे हैं वो ,
लूँ जुल्फ से वो काम जो जंजीर से न हो। -निस्ताख 11/15

न जिया तेरी चश्म का मारा ,
न तेरी जुल्फ का बँधा छूटा। -सौदा 11
चश्म - आंख

दम-ए-आखिर है , उलझन बढ़ रही है और उलझन पर ,
यह नाजुक वक़्त है तुम बाल बिखराये कहाँ आये। -रियाज खैराबादी 11
दम ए आखिर - आखिरी सांस/ आखिरी घड़ी

वो जुल्फें दोश पर बिखरी हुई हैं ,
जहाने आरजू थर्रा रहा है। -जिगर मुरदाबादी 11
जुल्फ/जुल्फें – बाल / केश / बालों की लट , आरजू –इच्छा , दोश - कंधा

गेसू में है बल कि मेरे खम को देखो ,
रुख हँसता है कि इस सितम को देखो।
इजहारे-कमाल में हर एक कामिल है ,
सब की यही ख़्वाहिश है कि हमको देखो। -अमजद हैदराबादी 11
गेसू - बाल , खम -बल , रुख -चेहरा / गाल , सितम - अत्याचार ,
इजहारे कमाल -कमाल का ऐलान करना , कामिल -परिपूण-पूरी मस्ती

चूम लेती हैं कभी लब , तो कभी रुखसार को ,
तुमने जुल्फों को बहुत सर पे चढ़ा रखा है। -अनजान 11
लब - होंठ, रुखसार - गाल , जुल्फ/जुल्फें - बाल / बालों की लट

उस जुल्फ का क्या कहना जो दोश पे लहराई ,
सिमटी तो बनी नागिन फैली तो घटा छाई। -शफीक जौनपुरी 11
दोश - कंधे

बिखरी हुई जुल्फ इशारो में कह गई ,
मैं भी शरीक हूँ तेरे हाले तबाह में। -जबील 11
जुल्फ/जुल्फें - बाल , तबाह - बरबाद , शरीक - मिला हुआ

ये कहकर सितमगर ने जुल्फों को झटका ,
बहुत दिन से दुनिया परेशां नहीं हैं।   -अज्ञात 11
परीशां - परेशान

काफिर गेसू वालों की रात बसर यूँ होती है ,
हुस्न हिफाजत करता है और जवानी सोती है।   -सागर निजामी 11
गेसू - केश-बाल

हँस पड़े आप तो बिजली चमकी ,
बाल खोले तो घटा लौट आई।   -आमिर मीनाई 51

135	संवरना	11

दुनिया जो सँवर जाये सँवर जाने दो ,
दुनिया जो निखर जाये निखर जाने दे।
ये फुर्सते -नजारा गनीमत है 'फिराक' ,
दिल पै जो गुजर जाये गुजर जाने दे।   -फिराक 135
फुर्सते-नजारा - फुरसत का दृश्य , फिराक - जुदाई

वो आप अपनी नज़र में समाये जाते हैं ,
सँवरतें जाते हैं और मुस्कराते जाते हैं।   -मुजतर मुजफ्फरपुरी 135/287

12	लब / होंठ / अधर / आरिज़	12

हस्ती अपनी हबाब की सी है ,
यह नुमाइश शराब की सी है।
नाजुकि उसके लब की क्या कहिए ,
पंखुड़ी इक गुलाब की सी है।   -मीर तकी 'मीर' 12
हबाब - बुलबुला , नुमाइश - दिखावट / प्रदर्शन ,
नाजुकी - सुकुमारता / कोमलता , लब - होंठ

अगर मरते हुए लब पर न तेरा नाम आएगा
तो मैं मरने से दरगुजरा , मेरे किस काम आएगा। -शाद अजीमाबादी 12

लब - होंठ , दरगुज़र - अलग / उपेक्षित

कभी कभी तेरे होठों की मुस्कराहट से ,
मुझे बहार की आहट सुनाई देती है।
तेरी निगाह की यह बेहिसाब सरगोशी ,
मुझे फवार सी पड़ती दिखाई देती है। 12

सरगोशी - गुमसुम , फवार - फव्वारा

तूं किसी और के दामन की कली है लेकिन ,
मेरी रातें तेरी खुशबु से भरी रहती है।
तूं कहीं भी हो तेरे फूल से आरिज की कसम ,
मेरी पलकें तेरी आंखों पे झुकी रहती है। 12

आरिज - गाल

सी लिए थे लब तो उनके रूबरू हमने मगर
ख़ामोशी ने बढ़के इज़हारे तमन्ना कर दिया। -मुईन कौसर 12/197

रूबरू - आमने-सामने / सम्मुख, इज़हारे - जाहिर करना

22	बोसा/चुंबन/चुम्बन/चुमना	22

लजा कर , शर्म खा कर , मुस्करा कर ,
दिया बोसा मगर कुछ मुँह बना कर। -गौहर 22
लिपटा मैं बोसा ले के तो बोले कि देखिये ,
यह दूसरी खता है वो पहला कसूर था। 22

खता - भूल

गुन्हेगार हूँ चुंबन अचानक , मैंने तुम्हारा ले लिया।
वापिस ले लो वहीं हैं , जहाँ से लिया जहाँ से किया। 22

पान लबों का बोसा ले हम खड़े देखा करें ,
क्या हमारी आबरू पत्ते के बराबर भी नहीं। 22
लब - होंठ , बोसा - चुंबन , आबरू - इज्जत

बोसा लबों का देने कहा कह के फिर गया ,
प्याला भरा शराब का अफसोस गिर गया।
कौल आबरू का था न जाऊँगा उस गली ,
होकर बेकरार देखो आज फिर गया। 22
बोसा - चुंबन , लब - होंठ , कौल - बुलावा , आबरू - इज्जत

हम बोसा लेके उनसे अजब चाल कर गये ,
यों बख्शवा लिया कि यह पहला कसूर था। 22
बोसा - चुंबन , बख्शवा - माफ

सुबह रुखसार उसके नीले थे , शब जो गुजरा ख्याल बोसे का ,
गालियाँ आप शौक से दीजे , रफा कीजे मलाल बोसे का। 3
रुखसार - गाल , शब - रात , ख्याल - विचार/ कल्पना ,
रफ़ा - हटाया हुआ / मिटाया हुआ , मलाल - दुःख

101	तब्बसुम	101

मेरे लबों का तबस्सुम तो सब ने देख लिया ,
जो दिल पे बीत रही है वो कोई क्या जाने। -'इकबाल' सफ़ीपुरी 101/12
लब - होंठ , तबस्सुम - हास्य/ स्मित

एक हल्का-सा तबस्सुम एक गहरा-सा खुमार ,
हाय वो आँखें कि तारे देखते हों कोई ख्वाब। -अख्तर 101
तबस्सुम - मुस्कुराहट/हंसी , खुमार -नशा, मद

दुआएँ दीजिये बीमार के तबस्सुम को ,
हमको तो मुस्कराए जमाना गुजर चुका। -आरिफ 101
तबस्सुम - मुस्कुराहट/हंसी

तबस्सुम और फिर उनके लबों पर ,
चमन की हर एक कली शरमा रही है। -मीना काजी 101
तबस्सुम – मुस्कान , लब - होंठ , चमन - बगीचे

मैं भी हैरान हूँ ऐ ‘दाग’ कि ये है क्या बात ,
वादा वो करते हैं आता है तबस्सुम मुझको। -दाग 101
तबस्सुम - हास्य

बिजलियों ने सीख ली उनके तबस्सुम की अदा ,
रंग जुल्फों का चुरा लायी घटा बरसात की। -सबा अफगानी 101/11
तबस्सुम - मुस्कान

287	मुस्कुराहट / मुस्कुराना	101

क्या आज तअरुफ़ तारूफ में लजाया कोई ,
क्या जानिये क्यों सँभल न पाया कोई।
मैंने जो कहा, 'जोश मुझे कहते हैं' ,
आँखों को झुकाके मुस्कराया कोई -जोश मलीहाबादी 287
तअरुफ़ - परिचय

नमी-सी आँख में और होंठ भी भीगे हुए-से हैं ,
यह भीगापन ही देखो मुस्कुराहट होती जाती है।
तेरे क़दमों की आहट को दिल यह ढूँढता हरदम ,
हर इक आवाज पे इक थरथराहट होती जाती है। -मीना कुमारी 287
नमी-सी - गीली , आहट - आवाज

महकते फूल से होठों पे मुस्कराहट ला ,
मुझे यकीन तो आए कि इश्क जिन्दा है। -अफसर आजरी 287

हमने सीने से लगाया दिल न अपना बन सका ,
मुस्कराकर तुमने देखा दिल तुम्हारा हो गया। -जिगर 101/9

सबब खुला यह हमें उनके मुँह छिपाने का ,
उड़ा न दे कोई , अन्दाज मुस्कराने का। -असगर 101/152

100	बदन / शरीर	12

ए गुल बदन नाजुक बदन , तूं बाम पर न जाया कर।
छु जायेगी चाँदनी तुझे , हो जाएगा मैला बदन। -शोहरत बुखारी 100
बाम – छत

104	तिल	12

माशुक के गोरे गालों पर एक काला-सा तिल है ,
वो तिल नहीं आशुक का जल-बुझ कर ख़ाक हो गया दिल है। 104
माशुक - प्रेमिका / प्रेयसी , आशुक - प्रेमी

116	सूरत	12

'जिगर' मैंने छुपाया लाख अपना दर्दे-गम लेकिन ,
बयां कर दीं मेरी सूरत ने कैफियतें दिल की। -जिगर मुरादाबादी 116
कैफियत - हाल / समाचार

कहीं देखी है शायद तेरी सूरत इससे पहले भी ,
कि गुजरी है मेरे दिल पे ये हालत इससे पहले भी।
न जाने कितने जलवे पेशरौ थे तेरे जलवों के ,
तुझी से बारहा की है मोहब्बत इससे पहले भी। -हफीज होशियारपुरी 116
जलवे - दर्शन , पेशरै - मुँह पर / सामने , बारहा - अनेक बार / प्रायः

अच्छी सूरत को देखते हैं सभी ,
हमने देखा तो क्या गुनाह किया। -ताँबा 116
गुनाह - अपराध

अफ़सोस , दिल का हाल कोई पूछता नहीं ,
यह कह रहे हैं सब, तेरी सूरत बदल गई। -दिलेर मारुहरबी 116

एक दिन वो था कि पहलु में सदा रहते थे ,
अब वही दिन रेन है कि सूरत को भी तरसते हैं। 116

तुम्हें पहले-पहल देखा तो दिल कुछ इस तरह धड़का ,
कोई भूली हुई सूरत मुझे याद आ गई जैसे। -मखमूर देहल्वी 116

इलाही कैसी -कैसी सूरतें तूं ने बनाई हैं ,
कि हर सूरत कलेजे से लगा लेने के काबिल है। -अकबर इलाहाबादी 116

मुझे हरगीज़ न जीने देगी बेचैनी मोहब्बत की ,
गजब तड़पा रही है याद एक भोली सी सूरत की। 116

141	चेहरा / चेहरे	12

बड़े सीधे साधे , बड़े भोले भाले ,
कोई देखे इस वक़्त नयन तुम्हारे। -आभा शाइर देहलवी 141

नजर मिला के मेरे दिल की बात पहचान ,
सुना है चेहरे को दिल की किताब कहते हैं। -फरुक 141

149	अंगड़ाई	12

इलाही, क्या इलाफा है वो जब लेता है अँगड़ाई ,
मेरे सीने के सब जख्मों के टाँके टूट जाते हैं। -'नामालूम' 149/129
इलाही - भगवान/ ईश्वर , इलाफा - मंजर / जलवा

अँगड़ाई भी वो लेने न पाये उठा के हाथ ,
देखा जो मुझको छोड़ दिये मुस्करा के हाथ। -निजाम रामपुरी 149
कौन ये ले रहा है अंगड़ाई ,
आसमानों को नींद आती है। -फिराक 149

अँगड़ाई पर अँगड़ाई लेती है रात जुदाई की ,
तुम क्या समझो , तुम क्या जानो बात मेरी तन्हाई की।
वस्ल की रात न जाने क्यों असरार था उनको जाने पर ,
वक़्त से पहले डूब गए , तारों ने बड़ी दानाई की। -कतील शिफाई 149/161
तन्हाई - अकेलापन , वस्ल - मिलन , असरार - भेद , दानाई - चतुराई

जब तकाज़ा नींद का हो और तन्हाई न हो ,
उफ़ वो कैफियत हो भी और अँगड़ाई न हो। -'असर' लखनवी 149/16
तकाजा - तगादा / माँगना / इच्छा , तन्हाई - अकेलापन
कैफियत - मस्ती

देखकर मुझको रही वो अंगड़ाई अधूरी उनकी ,
तीर चलने भी न पाया था कि कमां टूट गई। -अजीज लखनवी 149

अबस अंगड़ाइयां ले ले के क्यों मलते हो आँखों को ,
भला ये भी तो घर है सोती रहो गर नींद आती है। -अज्ञात 149
अबस – व्यर्थ

181	जबान / जबाँ	12

बात भी आपके आगे न जबाँ से निकली ,
लीजिये आए थे हम सोचके क्या क्या दिल में। -वजीर अली सहवा 181

जबाँ से तो हम कुछ न बोले थे लेकिन ,
निगाहों ने दिल की कहानी सुना दी। -फैज अहमद फैज 181/130

या कहते थे कुछ कहते , जब उस ने कहा कहिये ,
तो चुप हैं कि क्या कहिये, खुलती हैं जबां कोई।   -फानी 281

184	रुखसार / गाल	12

अल्लाह रे उनको फूलों-सी गालों की ताजगी दे ,
धूप आईने की देख के कुम्हलाये जाते हैं।   -हफीज जौनपुरी 184

अब मैं समझा तेरे रुखसार पे तिल का मतलब ,
दौलत-ए -हुस्न पे दरबान बिठा रखा है।   -मोहसिन अली नकवी 184/104
रुखसार - गाल , हुस्न - रूप/ सौंदर्य

236	कमर	12

सनम सुनते हैं तेरे भी कमर है ,
कहाँ है , किधर है , किस तरह की है।   236

239	नक्शा / नक़्शे या	12

जिंदगी है मौत का नक्शा ,
जिसको हम इन्तिज़ार कहते हैं।   -साहिर देहलवी 24

यह नक्शा हो गया है मेरा सौदा-ए-मुहब्बत में ,
मेरी सूरत मेरे यारों से पहिचानी नहीं जाती।   -बहादुर शाह जफ़र 116

बिगड़ कर कोई बनता है , कोई बन के बिगड़ता है ,
यही दुनिया का नक्शा है , इसी का नाम दुनिया है।   -फानी 34

तेरी जिक्र ने तेरी फ़िक्र ने , तेरी याद ने वो मजा दिया ,
कि जहाँ मिला कोई नक़्शे पा , वहीं हमने सर झुका दिया। -बहज़ाद लखनवी 27
नक़्शे पा - पैर का निशान

290	दीदार	12

किसी कीमत पे हो लेकिन तेरा दीदार हो जाए ,
फिर उसके बाद चाहे यह नजर बेकार हो जाए। -सिराज लखनवी 290/130
दीदार - दर्शन

मेरी आँखें और दीदार आपका ,
या कयामत आ गई या ख्वाब है। -आसी गाजीपुरी 290

खत से बढ़ के मुझको है दीदार की लगन ,
मैं भी चला चलूं न इसी नामा-बर के साथ। -अज्ञात 290/224

कुछ इतने दिये हसरते-दीदार ने धोके ,
वो सामने बैठे हैं यकीं हमको नहीं है। -निहाल लखनवी 290/91
हसरते-दीदार - दर्शन की इक्छा

13	दामन ओ गिरेबां / गिरेबां	13

तुं बचाये लाख दामन मेरा फिर भी है ये दावा ,
तेरे दिल में मैं ही मैं हूँ और कोई नहीं दूसरा। 13
दामन - आँचल /पल्लू

तेरे गजरों के लिए फूल कहाँ से लाऊँ
मेरे दामन में तो खार के सिवा कुछ भी नहीं। 13/59/114
दामन - आँचल /पल्लू , खार - कांटे

हजारों काँटों से दामन उलझ गया मखमूर ,
सजा मिली है ये फूलों से दिल लगाने की। 13/59
दामन - आँचल /पल्लू , मखमूर -नशे में चूर

मेरा दामन से लिपटना आप शायद भूल जायें ,
मुझको अब तक आपका दामन छुड़ाना याद है। -'नख्शब' जार्चवी 13

उलझ पड़ूँ किसी दामन से मैं वोह खार नहीं ,
वोह फूल हूँ जो किसी के गले का हार नहीं। -चकबस्त 13/59
दामन - आँचल /पल्लू , खार -कांटा

साल ही साल की तलाश के बाद जिंदगी के चमन से छाँटे हैं ,
आपको चाहिए तो पेश करूँ मेरे दामन में चंद काँटे हैं। 13/59
चमन - बाग , दामन - आँचल /पल्लू

सौ बार तेरा दामन हाथों में मेरे आया ,
जब आँख खुली देखा, अपना ही गिरेबाँ है। -असगर गोंडवी 13
गिरेबाँ - कमीज़ का कोलर

जिन्दगी आँख से टपका हुआ बेरंग कतरा ,
तेरे दामन की पनाह पाता तो आँसूं होता। -मीना कुमारी 13
कतरा - बूंद, पनाह - शरण

87	दुपट्टा	13

ये खैर है कि दुपट्टा उड़ा रही है हवा ,
छुपाते हैं जो वो सीना , कमर नहीं छुपती। -दाग 87

वो जानुओं में सीना छुपाना सिमट के हाय ,
और फिर संभालना वो दुपट्टा छुड़ा के हाथ। -निजाम रामपुरी 87
जानुओं - जंघा –छाती

98	आँचल	13

आँचल ढल रहा मस्त-ए-शबाब का ,
ओढ़ा गया कभी न दुपट्टा सँभाल के। -'रियाज' खैराबादी 98/87
मस्त ए शबाब - मस्त जवानी/जवानी के नशे में चूर

मिला के रंग में आँसूं जो होली खेली थी ,
निशान भी नहीं उसका आज मेरे दामन पर।
तमाम दाग सिमट आए मेरे आँचल में। -मीना कुमारी 98/182

तुम कहो तो मर भी जाऊँ मैं मगर इक शर्त है ,
बस कफ़न के वास्ते आँचल तुम्हारा चाहिए। -मुराद लखनवी 98/43

ये किसका ढलक गया है , आँचल तारों की निगाह झुक गई है ,
ये किसकी मचल गई है , जुल्फें जाती हुई रात रुक गई है -अख्तर 98/11

16	नकाब / निकाब	16

नकाब कहती है मैं परदेय क़यामत हूँ ,
अगर यकीन न हो देख लो उठा के मुझे।
मैं डर रहा हूँ , तुम्हारी नशीली आँखों से ,
कि लूट न ले किसी रोज पिला के मुझे। -जलील 16
नकाब - बुरखा/ पर्दा, परदेय - परदा , कयामत - अंत

है देखने वालों को संभलने का इशारा ,
थोड़ी -सी नकाब वो सरकाये हुये हैं। -अर्श मलसियानी 16
नकाब - बुरखा/ पर्दा

वो निकाब उठ भी जाता तो नजर कहाँ से लाते ,
तेरे रूबरू भी तेरा वही इन्तिज़ार होता। -शोर अलीग 16
निकाब - बुरखा/ पर्दा , रूबरू - आमने-सामने/ सम्मुख

मुस्कराकर डाल दी रुख पर नकाब ,
मिल गया जो कुछ कि मिलना था जवाब। -जज्बी 16
नकाब - बुरखा/ पर्दा , रुख - चेहरा

मैं न कहता था , उठाओ तुम न आरिज से नकाब ,
देख लो , वोह सुबह के फीके उजाले पड़ गये। -हीरालाल 'फलक' 16
आरिज - गाल

देखे बगैर हाल ये है इज्तिराब का ,
क्या जाने क्या हो पर्दा जो उठे निकाब का। -असर सहबाई 16
इज्तिराब -व्याकुलता / बेचैनी , निकाब - बुरखा

164	पर्दा / पर्दानशी / परदा	16

जब चाहा पर्दा उठाया , जब चाहा पर्दा कर बैठे ,
ये छोड़ और इक दीवाने से, मालूम नहीं क्या कर बैठे। -नातिक लखनवी 164
बेपरदा नजर आई कल चंद बीबियाँ ,
'अकबर' जमीं में कौमी गैरत से गड़ गया।
पूछा जब उनसे आपका परदा कहाँ गया ,
कहने लगी कि अक़्ल पे मरदों की पड़ गया। 164
गैरत - लज्जा/ आत्मसम्मान , कौमी - जातपात

या इलाही , मुझको किस पर्दानशीं का गम लगा ,
सीने में अंदर ही अंदर कुछ घुला जाता है दिल। -मोमिन 164
इलाही - भगवान/ ईश्वर , पर्दानशी - परदे में रहने वाली

जो फिरते हैं मेरी आँखों में,छिपते हैं वही मुझसे ,
जो रहते हैं मेरे दिल में , उन्हीं को मुझसे परदा है। -दाग 164

पर्दे में बहार छुप सके तो जानूँ ,
जल्वे का निखार छुपा सके तो जानूँ।
रख सर पे हजार बार आँचल लेकिन ,
सीने का उभार छुपा सके तो जानूँ। -अख्तर अन्सारी 164/98
जल्वे - दर्शन

परदा है कि चिलमन से लगे बैठे हैं ,
आप छुपते भी नहीं सामने आते भी नहीं। -दाग 164
चिलमन - परदा

यूँ न पर्दा करो खुदा के लिए ,
देखो दुनिया तबाह होती है। -जिगर 164
तबाह - बरबाद

14	मेहंदी / हिना	14

याद आया यहाँ आने का वायदा उन्हें कब ,
जब रात को वह पाँव में मेहंदी लगा चुके। 14

रुखसार पर है रंग-ए-हिना का फ़रोग़ आज ,
बोसे का नाम मैंने लिया वो निखर गये। -हकीम अजमल खां 'शैदा' 14/22
रुखसार - गाल , रंग ए हिना - मेहंदी का रंग ,
फरोग - प्रकाश, बोसा - चुंबन

सुर्खरू होता है इन्सां ठोकरें खाने के बाद ,
रंग लाती है हिना पत्थर पै पीस जाने के बाद। -डॉ. इकबाल 14/273
सुर्खरू - सफल / प्रतिष्ठितः , हिना - मेंहदी

यार था गुलजार था मय थी, सबा थी , मैं न था ,
लायके-पाबोसे-जाना क्या हिना थी, मैं न था। -बहादुर शाह जफ़र 14/51
गुलजार - बाग , मय - शराब , सबा – सुबह , हिना - मेंहदी ,
लायके-पाबसे-जाना - मेहंदी लगे पैरों को चूमने लायक

बर्गे-हिना पे लिक्खेंगे हम दर्दे-दिल की बात ,
शायद कि रफ्ता रफ्ता लगे गुलबदन के हाथ। -अकबर इलाहाबादी 14
बर्गे-हिना -मेहंदी का पत्ता , दर्दे दिल - दिल का दर्द ,
रफ्ता-रफ्ता - आहिस्ता-आहिस्ता , गुलबदन-फूल सा बदन

मेंहदी ने गजब दोनों तरफ आग लगा दी ,
तलवों में उधर और इधर दिल में लगी है। -अज्ञात 14

तलवों - पाँवों में

15	आईना / दर्पण / दरपन	15

आईने में वो देख रहे थे बहारे-हुस्न ,
आया मेरा खयाल तो शरमा के रह गए। -हसरत मोहानी 15

अन्दाज अपना देखती हैं आईने में वोह ,
और यह भी देखती हैं कि कोई देखता न हो। -निजाम रामपुरी 15/152

आईना देख वो सँवरने लगे , हमें देख फिर सँभलने लगे ,
इशारा जो किया तो घबराने लगे , थोड़ा थोड़ा फिर समझने लगे। 15

इतरा के आईने में चिढ़ाते थे अपना मुँह ,
देखा मुझे तो झेंप गए , मुँह छुपा लिया। -शौक किदवाई 15

इतरा - घमंड

जो सख्त बात सुने दिल , तो टूट जाता है ,
इस आईने की नजाकत किसी को क्या मालुम। -दाग 15

नजाकत - कोमलता

आईना चूम-चूम रहे थे वो बार-बार ,
देखा जो यक-बयक मुझे शरमा के रह गये। -जिगर 15

यक बयक - अचानक

आईना देख अपना-सा मुँह लेके रह गए ,
साहब को दिल न देने पे कितना गुरुर था। -ग़ालिब 15

गुरूर - घमंड

जब से आया है वो मुखड़ा नज़र आईने को ,
तब से अपनी भी नहीं है खबर आईने को। -मजनूं अजीमाबादी 15

मुझ को क्या काम कि आईने की हैरत देखूँ,
देख तूं आईना और मैं तिरि सूरत देखूँ। -'मोमिन' 15
हैरत - हैरानी

आईना अपने सामने से हटा,
यह न हो खुद से प्यार हो जाये। -फ़ना बुलन्दशहरी 15

आईने में वह देख रहे थे बहारे-हुस्न,
आया मेरा खयाल तो शरमा के रह गये। -हसरत मोहानी 15
हुस्न - रूप/ सौंदर्य

चाहे सोने के फ्रेम में जड़ दो,
आईना झूठ बोलता ही नहीं। -कृष्ण बिहारी नूर 15

260	शीशा	15

तुम्हारा दिल मेरे दिल के बराबर हो नहीं सकता,
वो शीशा हो नहीं सकता, यह पत्थर हो नहीं सकता। 260/273

नहीं मिलते तो इक अदना शिकायत है न मिलने की,
मगर मिलकर न मिलने की शिकायत और होती है।
ये माना शीशा-ए-दिल रौनके-बाजारे-उल्फत है,
मगर जब टूट जाता है तो कीमत और होती है। -वामिक जौनपुरी 260/29
अदना - छोटा, शीशा ए दिल - कोमल दिल,
रौनके बाजारे उल्फत - सुन्दर प्रेम के बाज़ार में

कुछ सोच के इस राहे-पुरखार से गुजरा था,
काँटे भी न रास आए, दामन भी न काम आया।
फ़ेंके हुए शीशों से दिल कितने बनाए हैं,
जब जाम कोई टूटा, दीवानों के काम आया। -नशूर वाहिदी 260
राहे पुरखार - कांटों से भरी राह

दिल उसका भी है मेरा भी है , फर्क 'शकील' इतना लेकिन ,
वो पत्थर था जो साबित है , यह शीशा था जो टूट गया। -शकील 260

17	तस्वीर	17

कुछ तेरा हुस्न भी है सादा-ओ-मासूम बहुत ,
कुछ मेरा प्यार भी शामिल तेरी तस्वीर में है। -नूर बिजनौरी 17

आप ने तस्वीर भेजी मैंने देखी गौर से ,
हर अदा अच्छी , ख़ामोशी की अदा अच्छी नहीं। -जलील मानिकपुरी 17/105

याद तो होगी वह अपनी बेरुखी ,
अब मेरी तस्वीर देखा कीजिए। -इमाम मजहर 17

तेरी सूरत से किसी की नहीं मिलती सूरत ,
हम जहाँ में तेरी तस्वीर लिये फिरते हैं। -'नासिर' 17/116

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरी फितरत नहीं ,
मेरी कोशिश है कि तस्वीर बदलनी चाहिये। -दुष्यंत कुमार 17
फितरत - स्वभाव

इक बार तुझे अक्ल ने चाहा था भुलाना ,
सौ बार जुनूं ने तेरी तस्वीर दिखा दी। -'माहिर'-उल-कादरी 17
जुनूं - पागलपन / उन्माद

भेज दी तस्वीर अपनी उनको ये लिखकर 'शकील' ,
आपकी मर्जी है , चाहे जिस नज़र से देखिये। -शकील बदायूनी 17

चन्द तस्वीर-ए-बुतां चन्द हसीनों के खतूत ,
बाद मरने के घर से ये सामां निकला। -ग़ालिब 17
तस्वीर-ए-बुतां - प्रेयसी की तस्वीर , खतूत - खत

फिर मैं नजर आया न तमाशा नजर आया,
जब तू नजर आया मुझे , तन्हा नजर आया।
उठे अजब अंदाज से वह होशे राज बम,
चढ़ता हुआ एक हुस्न का दरिया नजर आया। 17
दरिया - नदी , तन्हा - अकेला , राज बम - रहस्य

कितनी दिलकश हैं तेरी तस्वीर की रानाईयाँ ,
लेकिन ऐ पर्दा-नशीं तस्वीर फिर तस्वीर है। -शकील बदायुनी 17
दिलकश - मनमोहक , रानाईयां - चमक दमक
पर्दानशी - परदे में रहने वाली

माजी की याद , आज का गम, कल की उलझनें ,
सबको मिलाईये , मेरी तस्वीर बन जायेगी। -आरजू लखनवी 17
माजी – भूतकाल

सामान्य विषय

30	राज / प्रेमियों की बातें	30

क्या उसने कहा क्या हमने सुना , क्यों राज यह खुलता गैरों पर ,
खुद अपनी जबां से , हम अपनी रुसवाई की चर्चा कर बैठे।
इस कदर प्यार से न देख मुझे , फिर तमन्ना जवां न हो जाये ,
लुफ्त आने लगा है जफाओं में , फिर वो कहीं मेहरबां न हो जाये।
लुफ्त - मजा , जफा - बेवफाई , रुसवाई - बदनामी , गैरों - पराया -हफिज ’जालन्धरी

हुजूम-ए-शौक है दिल में , मगर खामोश रहता हूँ ,
छुपाया था यह हमने राज़ तुमसे , आज कहते हैं। -हसरत' मोहानी 30
हुजूम - लोगों का जमावड़ा / भीड़भाड़ , राज़ - रहस्य

बिगड़ें न बात-बात पे क्यों , जानते हैं वो ,
हम वो नहीं कि हमको मनाया न जाएगा।
तुमको हज़ार शर्म सही , मुझको लाख ज़ब्त ,
उल्फ़त वो राज़ है जो छुपाया न जाएगा। -ख्वाजा अलताफ हुसैन हाली 30

एक ऐसा राज दिया है मुझे छुपाने को ,
जिसे वो चाहें तो खुद भी छुपा नहीं सकते। -जज्वी' 30

मुद्दतों देख लिया चुप रह के , आओ कुछ उनसे भी देखें कह के ,
सच तो ये है कि नदामत ही हुई राज की बात किसी से कह के। -हैरत 30

नदामत - लाजशरम

क्योंकर हुआ है फाश ज़माने पे क्या कहें ,
वो राजे-दिल जो कह न सके राजदां से हम।
क्या क्या हुआ है हमसे जुनूं में न पूछिये ,
उलझे कभी जमीं से कभी आसमाँ से हम। -मजाज 30

फाश - प्रगट करना , राजदां - रहस्य जानने वाला ,
जुनूं - पागलपन / उन्माद

ये मेरे इश्क की मजबूरियाँ खुदा गवाह ,
तुम्हारा राज तुम्हीं से छुपा रहा हूँ मैं। -मजाज 30/169

सब राज मुहब्बत के गए , गीत गए ,
ऐ यादे-शबाब अब वो दिन बीत गए।
कहते हैं मगर हुस्न के तेवर अब तक ,
जो हार गए इश्क में वो जीत गए। -'अख्तर' अंसारी 30/109/5

यादे-शबाब - जवानी की याद

कोई किस तरह राज-ए-उल्फत छुपाये ,
निगाहें मिलीं और कदम डगमगाये। -'नख्शब' जार्ववी 30/130

राज ए उल्फत - प्रेम का रहस्य

राज -ए हकीकत जानने वाले देखिये अब क्या कहते हैं ,
दिल को अपना दिल नहीं कहते, उनकी तमन्ना कहते हैं। -फानी 30

134	गुफ्तगु / बातचीत	30

अब किसकी थी उस वक़्त , खता , याद नहीं ,
किस तरह से हम हुये,जुदा , याद नहीं।
है याद वो गुफ्तगु की तल्खी लेकिन ,
'आजाद' वो गुफ्तगु थी , क्या याद नहीं। -आजाद 134

खता - भूल , गुफ्तगु - वार्तालाप / बातचीत , तल्खी - कड़वा

223	कूचे यार / प्रेयसी की गली	30

जब मैं थी तब पियु नाही अब पियु है मैं नाही ,
प्रेम गली अति संकरि या में दूई न समाहि। 223

जब मैं चलता हूं तेरे कूचे से कतरा के कभी ,
दिल मुझे फेर के कहता है , उधर को चलिये। -मीर हसन 223

कूचे - गली / रास्ता , कतरा - बून्द

कभी थक के दर को खड़े रहे , कभी आह भर के चले गए ,
तेरे कूचे में जो हम आए भी तो ठहर-ठहर के चले गए। -मसहफ़ी 223

52	आशुक / माशुक / आशिकी	52

दिल में तुम आँखों में तुम , छिपते हो फिर किस वास्ते।
तुम को शर्म आती नहीं आशिक से शरमाते हुए। 52

ये भी फरेब-से हैं कुछ दर्दे-आशिकी के ,
हम मर के क्या करेंगे, क्या कर लिया है जी के। -असगर गोंडवी 52

फरेब - धोखा , दर्दे-आशिकी - प्रेम की पीड़ा

मुँद गई खोलते ही खोलते आँखें है ,
खूब वक्त आए तुम इस आशिके-बीमार के पास। -ग़ालिब 52/44

आशिक - प्रेमी

लोग कहते हैं आशिक़ी जिसको ,
मैं जो देखा बड़ी मुसीबत है। -मीर तकी मीर 52
आशिकी - प्रेम लीला

इस-इश्को-आशिकी के मजे हम से पूछिये ,
दौलत लुटाई रंज सही खो दिया शबाब। -बेखुद देहलवी 52
शबाब - जवानी , रंज - गम

फूल से आशिकी का हुनर सीख ले ,
तितलियाँ खुद रुकेंगी सदाएँ न दे। -बशीर बद्र 52
आशिकी - प्रेम लीला , सदाऐं - आवाज

71	महबूब / महबूबा	52

मैं ने मासूम बहारों में तुझे देखा है ,
मैं ने मौहूम सितारों में तुझे देखा है।
मेरे महबूब, तेरी पर्दानशीनी की कसम ,
मैं ने अश्कों की कतारों में तुझे देखा है। -अहमनदीम 'कासमी' 71
मौहूम - धुंधला सा, पर्दानशी - परदे में रहने वाली ,
अश्क - आंसू , महबूब – प्रेमी

145	दिलरुबा	52

आज इस राह दिलरुबा गुजरा ,
जी पे क्या जानिये कि क्या गुजरा। -'मीर' सोज 51

2	हम / मैं	2

न कुछ हम हँस के सीखे हैं , न कुछ हम रो के सीखे हैं ,
जो कुछ हम थोड़ा -सा सीखे हैं , किसी के होकर सीखे हैं। 1

गैरों से कहा तुमने गैरों से सुना तुमने ,
कुछ हमसे कहा होता कुछ हमसे सुना होता। -हसरत 51

मुद्दतें हो गई हैं चुप रहते ,
कोई कहता तो हम भी कुछ कहते।   -'महशर'   51
मुद्दत - समय / दीर्घ काल

हम तो क्या गर्दिशे दौराँ के कदम रुक जाय ,
आपने हमको सलीके से पुकारा ही नहीं।   51
गर्दिशे - परेशानियां , सलीके - ढंग/तरीका , दौराँ -चक्र

वो मेरे होके भी मेरे न हुए ,
उनको अपना बना के देख लिया।   51

मुझ को खुद मुझ से भी मिलने नहीं देती दुनिया ,
छुप के मिलता हूँ कभी जब नहीं होता कोई।   -अरीब 51

जो हम को बुरा कहते हैं , माजूर है 'अकबर' ,
हक़ यह है कि हम भी उन्हें अच्छा नहीं कहते।   -अकबर इलाहाबादी 51
माजूर - असमर्थ

जब भी आता है मेरा नाम तेरे नाम के साथ ,
जाने क्यों लोग मेरे नाम से जल जाते हैं।   -कतील 51

मुझसे जो पूछते हो तो हर हाल शुक्र है ,
यूँ भी गुजर गयी मेरी यूँ भी गुजर गयी।   51

अपनों का सताया हुआ हूँ , अपनों से ही हारा हूँ ,
अब न किसी का प्यारा हूँ , गमे दिल का सहारा हूँ।
खो गया हूँ अपनों की दुनिया से सब कहते है आवारा हूँ।   51

आए जो मेरे पास तो मुँह फेर के बैठे ,
ये नया आज आपने दस्तूर निकाला।   -जुरअत 51

लिखकर हमारा नाम जमीं पर मिटा दिया ,
उनका था खेल खाक में हमको मिला दिया। -अख्तर 51
खाक - राख/ धूल

रात भर दीदा-ए-नमनाक में लहराते रहे ,
सांस की तरह से आप आते रहे , जाते रहे। -मख्दूम 51
दीदा-ए-नमनाक - आंसु भरी आंख

जो तेरे पास से आता हूँ मैं पूछूँ हूँ यही ,
क्यों जी कुछ जिक्र हमारा भी वहाँ होता था। -सआदत यार खाँ 'रंगीन' 51

258	तुम/ तुझे/ तुम्हें/ तुम्हारे/ तूं	2

तुम मेरे पास होते हो गोया ,
जब कोई दूसरा नहीं होता। -मोमिन खां मोमिन 258
गोया - मानलो

तुम नहीं कोई तो सब में नजर आते क्यों हो ,
सब तुम ही तुम हो तो फिर मुँह को छुपाते क्यों हो। 258

तुम्हारे देखने से लोग मुझको जान जाते हैं ,
मैं वो खोई हुई एक चीज हूँ जिसका पता तुम हो। -बशीर 258

हाँ तुम को भूल जाने की कोशिश करूँगा मैं ,
तुमसे भी हो सके तो न आना ख्याल में। -सैफुद्दीन सैफ 258

वही प्यारे मधुर अलफाज , मीठी रस भरी बातें ,
वही रोशन रुपहले दिन , वही महकी हुई रातें।
वही मेरा ये कहना , तुम बहुत ही खुबसूरत हो ,
तुम्हारे लब पर ये फिकरा , तुम ही मेरी किस्मत हो। 258
अलफाज - शब्द , लब - होंठ , फिकरा - धोखा

दिन-रात तुझको याद करके रोते हैं हम ,
फिर भी तुझसे मोहब्बत किया करते हैं। 258
जहराबे-हिज्र - विरह का जहर

मेरे दिल की नैरंगी पूछते हो क्या मुझ से ,
तुम नहीं तो वीराना , तुम रहो तो बस्ती है। -अर्श 258
नैरंगी - जादूगरी/माया

तुम्हें चाहूँ तुम्हारे चाहने वालों को भी चाहूँ ,
मेरा दिल फेर दो मुझ से ये झगड़ा हो नहीं सकता। -दाग 258

हमी में थी न कोई बात याद न तुमको आ सके ,
तुमने हमें भुला दिया , हम न तुम्हें भुला सके। -'हफीज' जालंधरी 258/128

उनके भोलेपन पे सदक़े जाइये ,
कहते हैं , 'मुझसे तुम्हें क्या काम है'। -अज्ञात 258
सदके - ईश्वर के नाम पर दी गई वस्तु

तुम हमारे किसी तरह न हुए ,
वरना दुनियाँ में क्या नहीं होता। -मोमिन 258

तुम्हें गैरों से कब फुर्सत , हम अपने गम से कब खाली ,
चलो बस हो चुका मिलना , न तुम ख़ाली न हम ख़ाली। -दीवाना 258
गैरों - पराये

समाया है जब से तूं नज़रों में मेरी ,
जिधर देखता हूँ उधर तूं ही तूं है। -हाली 258

आने के वक़्त तुम तो कहीं के कहीं रहे ,
अब आए तुम तो फायदा , हम ही नहीं रहे। -मीर 258

तुम सलामत रहो हजार बरस ,
हर बरस के दिन हों पचास हजार। -ग़ालिब 258

सलामत - सकुशल

बे तुम्हारे मैं जी गया अब तक ,
तुमको क्या , खुद मुझे यक़ीन नहीं। -अज्ञात 258

तुम मुखातिब भी तो करीब भी हो ,
तुमको देखूँ कि तुमसे बात करूँ। -फिराक गोरखपुरी 258

मुखातिब - बोलने वाला/करार

कभी हम में तुम में भी चाह थी , कभी हम में तुम में भी राह थी ,
कभी हम भी तुम भी थे आशना , तुम्हें याद हो की न याद हो। -मोमिन 258

आशना - परिचित

हम तो दो बोल कहके हारे हैं ,
तुम हमारे हो न हो , हम तुम्हारे हैं। 258

जब मैं चलूँ तो साया भी अपना न साथ दे ,
जब तुम चलो , जमीन चले , आस्मां चले। -जलील मानिकपुरी 51

साया - छाया/ परछाई

गैर को आने न दूँ तुमको कहीं जाने न दूँ ,
काश , मिल जाये तुम्हारे दर की दरबानी मुझे। -हैरत 51

चाहें तो तुम को चाहें , देखें तो तुम को देखें ,
ख्वाहिश दिलों की तुम हो , आँखों की आरजू तुम। 60

एक ही माने नहीं रखती तुम्हारी हर नहीं ,
एक झुंझला कर नहीं है एक शरमा कर नहीं। -नबाब सआदत अली खां

93	रकीब / रफीक / दुश्मन	93

रफीकों से रकीब अच्छे जो जल कर नाम लेते हैं ,
गुलों से खार बहतर जो दामन थाम लेते हैं। -"अज्ञात" 93
रफीकों - मित्रों , रकीब - प्रेमिका का दूसरा प्रेमी / प्रतिद्वंद्वी / प्रतिस्पर्धी
गुल - फूल , दामन - आंचल/पल्लू , खार – कांटे

136	यार	93

पहलु-ए-यार से उठने को तो उठे लेकिन ,
दर्द की तरह उठे, गिर पड़े आँसू की तरह। -दाग 136
पहलु-ए-यार - यार के पास

पहिचान ही लिया हमें यारों ने ऐ 'जफ़र' ,
हम वाँ हजार भेस बदल रात को गये। -बहादुर शाह जफ़र 136

कमर बांधे हुए चलने को यहां सब यार बैठे हैं ,
बहुत आगे गए बाकी जो है तैयार बैठे हैं। -इन्सा 136

257	दोस्त / दोस्ती	93

दिल अभी पूरी तरह टुटा नहीं ,
दोस्तों की मेहरबानी चाहिये। 257

तेरे जलवों ने मुझे घेर लिया है ऐ दोस्त ,
अब तो तन्हाई के लम्हें भी हसीं लगते हैं। -सीमाब 257/70
जलवे - दर्शन , तन्हाई - अकेलापन

गुल का क्या जिक्र कि ऐ दोस्त मेरे दामन पर ,
एक मुद्दत से किसी खार का एहसां भी नहीं। -शोर अलीग 257
गुल - फूल , दामन - आंचल/पल्लू , मुद्दत - समय/दीर्घ काल ,
खार -कांटें , एहसां - अहसान

जिन्दा रखा है सिसकने के लिये ,
वाह अच्छे दोस्तों से पाला पड़ा। 257

मैं मुद्दतों जिया हूँ किसी दोस्त के बगैर ,
अब तुम भी साथ छोड़ने को कह रहे हो , खैर। -फिराक 257/285

तेरे करीब रह के भी दिल मुतमईन न था ,
गुजरी है मुझ पे ये भी क़यामत कभी कभी।
ऐ दोस्त हमने तर्के-मोहब्बत के बावजूद ,
महसूस की है तेरी जरुरत कभी-कभी। -नासिर काजमी 257
मुतमईन - संतुष्ट , कयामत - अंत , तर्के मोहब्बत - प्रेम का त्याग

खोते हैं अगर जान तो खो लेने दे ,
ऐ दोस्त जो हो जाए वो हो लेने दे।
तुझसे जो छूटे सब्र भी कर लेंगे कभी ,
इस वक़्त तो जी खोल के रो लेने दे। -फिराक गोरखपुरी 257/77
सब्र - धीरज

तोरगी के घने हिजाबों में दूर के चाँद झिलमिलाते हैं ,
जिन्दगी की उदास रातों में बेवफा दोस्त याद आते हैं। -अदम 257/32
तोरगी - अंधेरा , हिजाब - संकोच/ शर्म

कल जिन्हें दोस्ती का दावा था ,
उनसे अब बात भी नहीं होती। -साजन पेशावरी 257

मसर्रत पे रिवाजों का सख्त पहरा है ,
न जाने कौन -सी उम्मीद पे दिल ठहरा है।
तेरी आँखों में झलकते हुए इस गम की कसम ,
ऐ दोस्त, दर्द का रिश्ता बहुत ही गहरा है। -मीना कुमारी 257/4
मसर्रत - सुख / ख़ुशी

खिजां के फूल से आती कभी बहार नहीं ,
मेरे नसीब में ऐ दोस्त तेरा प्यार नहीं।
तेरी कसम है मेरा कोई एतबार नहीं ,
मेरे नसीब में ऐ दोस्त तेरा प्यार नहीं। 257
खिजां - पतझड़ , एतबार - भरोसा/विश्वास

कहां है तूं कि तेरे इन्तिज़ार में ऐ दोस्त ,
तमाम रात सुलगते हैं दिल के वीराने। -नासिर काजमी 257

आसमान से तोड़ कर सितारा दिया है,
आलम-ए-तन्हाई में एक शरारा दिया है,
मेरी किस्मत भी नाज करती है मुझपे,
खुदा ने दोस्त ही इतना प्यारा दिया है। 257
आलम-ए-तन्हाई - दुनिया में अकेलापन, शरारा - चिनगारी

ना तुम दूर जाना , ना हम दूर जायेंगें,
अपने अपने हिस्से की "दोस्ती" निभाएंगे।
बहुत अच्छा लगेगा जिंदगी का ये सफर ,
आप वहां से याद करना, हम यहाँ से मुस्कुराएंगे। 257

277	गैर	93

सुनी थी शब को मैंने भी सदा ग़ैरों के हँसने की ,
तुम्हारी बज्म में कोई तो मेरा नाम लेता था। -नासिरी' 277/56
शब - रात , ग़ैर - अन्य, दूसरा, बज्म - महफिल

चलो अच्छा हुआ अपनों में कोई गैर तो निकला ,
अगर होते सभी अपने तो बेगाने कहां जाते। -शकील बदायूनी 277
बेगाने - पराये

इलाही क्यों नहीं आती क़यामत माजरा क्या है ,
हमारे सामने पहलू में वो गैरों के बैठे हैं। -दाग 277
इलाही - भगवान/ ईश्वर , माजरा - दृश्य

हुद्दे जात से बाहर निकल के देख जरा ,
न कोई गैर न कोई रकीब लगता है। -मिर्जा रफ़ी सौदा 136/93
हुद्दे जात - सीमा , रकीब – प्रेमिका का दूसरा प्रेमी / प्रतिद्वंद्वी

284	पहचान	93

वो यूँ दिल से गुजरते हैं कि आहट तक नहीं होती ,
वो यूँ आवाज देते हैं कि पहचानी नहीं जाती। -जिगर 280

23	वादा / वादे	23

उम्मीद तो बन जाती तस्कीन तो हो जाती ,
वादा न वफ़ा करते वादा तो किया होता। -इकबाल 23
तस्कीन - संतोष

वह फिर वादा करते हैं मिलने का ,
यानी कुछ दिनों और जीना पड़ेगा हमें। -आसी 23

बरसों में उसने मिलने का वादा किया है आज ,
इस शर्त पर के हरफ न आए निबाह का। 23
हरफ - शब्द , निबाह - निभाव

मैं जानता हूँ आपका वादा गलत नहीं ,
पर दिल को एतबार न आए तो क्या करूँ।
आना तो चाहिये उसे आज शब जरूर ,
ए कल्बे बेकरार न आए तो क्या करूँ। 23
एतबार - भरोसा/विश्वास , शब - रात , संगीन - घोर तथा दंडनीय ,
कल्बे - दिल / बेचैन दिल

देख कर आपकी जवानी को आरजू ए शराब होती है ,
रोज वादे को तोड़ता हूँ रोज नियत खराब होती है। 23
आरजू - इच्छा/ प्रार्थना

अय मेरा वायदा भूलने वाले ,
डुबने के करीब है तारे। 23

झूठे वादे भी नहीं करते आप ,
कोई जीने का सहारा ही नहीं। -अज्ञात 23

तुम तो ऐ मेहरबान अनूठे निकले ,
जब आन के पास बैठे झूठे निकले।
क्या कहिये वफ़ा एक भी वादा न किया ,
यह सच है कि तुम बहुत झूठे निकले। 23

वादा किया था फिर भी न आए मजार पर ,
हम ने तो जान दे दी इसी एतबार पर। -अजीज लखनवी 23
मजार - कबर, एतबार - भरोसा/विश्वास

वादे के अपने सच्चे थे आते वह ख्वाब में।
'नाजिम' तुम्हीं को नींद न आयी तमाम रात। -नाजिम 23/20
ख्वाब - सपना

वो झूठे वादे हजार करते हैं ,
हम यकीन बार बार करते हैं। 23

भूलने वाले को शायद , याद वादा आ गया ,
मुझको देखा, मुस्कराया खुद-ब-खुद शरमा गया। -'अमीर' लखनवी 23

वादे पे तुम न आए तो कुछ हम न मर गये ,
कहने की बात रह गई और दिन गुजर गये। -रिन्द 23

वादे का नाम लब पे न आए पयाम्बर ,
कहना फ़क़त यही कि बहुत दिन गुजर गए। -जलील मानिकपुरी 23
लब - होंठ , पयाम्बर - संदेशवाहक , फकत -केवल / सिर्फ़

कभी दामाने-दिल पर दागे-मायूसी नहीं आया ,
इधर वादा किया उसने , उधर दिल को यकीं आया।
ऐ शमअ , तुझ पे रात ये भारी हे जिस तरह ,
मैंने तमाम उम्र गुजारी हे इस तरह। -नातिक लखनवी 26
शमअ - दीया
झूठे वादों पर थी अपनी जिंदगी ,
अब तो वो भी आसरा जाता रहा। -अजीज लखनवी 23

तेरे वायदे पर जिए हम तो ऐ जान झूठ जाना ,
कि ख़ुशी से मर न जाते अगर ऐतबार होता। -ग़ालिब 23/281
एतबार - भरोसा/विश्वास

झूठा ही क्यों न कीजिये , वादा तो कीजिए ,
इन्कार सुनते सुनते वर्षों गुजर गए हैं। -बेखुद देहलवी 23/208

हवाएँ तेज थी , बारिश भी थी , तूफ़ान भी था ,
लेकिन , तेरा ऐसे में भी वादा निभाना , याद आता है। -इसरार अंसारी 23

वादे तो वफाओं के हमसे न किये होते ,
प्रीतम मेरी दुनिया में दो दिन तो रहे होते। 23

हजार बार भी वादा वफ़ा न हो लेकिन ,
मैं उनकी राह में आँखें बिछा के देख तो लूं। -महेंद्रसिंह बेदी 23/64

किसी ने वादा किया है , शब का यकीं भी हमको आ गया है ,
इलाही किस वक़्त शाम होगी , इलाही कब दिन तमाम होगा। 23
शब - रात , इलाही - अल्लाह

वादा झूठा कर लिया , चलिए तसल्ली हो गई ,
है जरा सी बात खुश करना दिल-नाशाद का। -दाग 23
दिल-नाशाद - अभागा दिल

वादा न दिलाओ याद उनका ,
नादिम हूं खुद ऐतिबार करके। -बाकी सिद्दकी 23/281
नादिम - शर्मिन्दा

62	कसम	23

खुदा की कसम उसने खाई है आज ,
कसम है खुदा की , मज़ा आ गया। -दाग 62

चुप रहने दो तुम ये तार , ना निकले इनसे झन्कार ,
तुम्हें कसम है पीड़ा की , जग जायगा सोया प्यार। 62

आएगा कब यकीन तुम्हें मेरी बात का ,
मानो भी अब तुम्हारी कसम खा रहा हूँ मैं। 62

मुझे बावर है तुम झूठे नहीं , वायदे के सच्चे हो ,
कसम क्यों खाओ , नाजाइज कसम यूँ भी है और यूँ भी। -साइल देहलवी 62
बावर - विश्वास, नाजाईज - अनुचित / अनुपयुक्त

कसम जनाजे पै मेरे आने की खाते है 'ग़ालिब' ,
हमेशा खाते थे जो मेरी जान की कसम आगे। -ग़ालिब 62
जनाज़ा - शव / अरथी

आपके सर की कसम , ‘दाग’ को परवा भी नहीं ,
आपसे मिलने का होगा जिसे अरमां होगा। -दाग 62

खुलेगा किस तरह मज़्मूं मेरे मकतूब का यारब ,
कसम खाई है उस काफिर ने कागज़ के जलाने की। -ग़ालिब 62
मकतूब - लिखा हुआ पत्र , काफिर - पापी , मज़्मूं -विषय

172	अमानत	23

दिल उनको भेज देना ‘जफ़र’ यही मुनासिब था ,
अमानत उनकी थी इसे उनके घर पहुंचाना था। 172
अमानत - धरोहर , मुनासिब - उचित / वाजिब

मेरे रोने पे मुस्कराये कोई , आप की भी अजीब आदत है ,
यों लगाये हुए हूँ सीने से , दर्दो गम आपकी अमानत है। 172
अमानत - धरोहर

मौत यह कह कर छोड़ गयी , कि दो चार दिन की मोहलत है ,
जब भी माँगोगे पेश कर दूँगा , जिंदगी आपकी अमानत है। 172
मोहलत - समय , अमानत - धरोहर

64	वफा	63

वफा भी कर के देखा है , नहीं उन पर असर कोई ,
वे जब मिलते हैं , तब हम से बड़े बेजार दिखते हैं।
इलाही माजरा क्या है कि जब हम जुदा होते हैं ,
तो उन लमहों में वो मायूस और बीमार दिखते हैं। -स्वदेश मेहता 64/70
बेजार - नाराज , इलाही - भगवान/ ईश्वर , मायूस - निराश ,
लमहा - क्षण / पल , माजरा - दृश्य

वफा है वफादार कोई नहीं है ,
मेरा इश्क है आजमाने के काबिल। -जिमा 64

तुम मुझे भूल गए मेरी हर वफ़ा के बाद ,
तुम मुझे याद रहे, अपनी हर जफ़ा के बाद। -आतिश 64/84
जफा - बेवफाई

हम भी कुछ खुश नहीं वफ़ा करके ,
तुमने अच्छा किया, निबाह न की। -मोमिन 64
निबाह - निभाव

वफ़ा के नाम पे तुम क्यों संभल के बैठ गए ,
तुम्हरी बात नहीं , बात है जमाने की। -'मजरूह' सुल्तानपुरी 64

अपने अहदे वफ़ा को भूल गये ,
तुम तो बिलकुल खुदा को भूल गए। -मुजितर 64
अहदे वफा - वफादारी का वचन

और क्या अहदे वफा होते हैं ,
लोग मिलते हैं , जुदा होते हैं।
आप हमसे क्यों खफा होते हैं। 64

63	बेवफ़ाई / बेवफा	63

बताओ क्या तुम्हारे दिल पे गुजरे ,
अगर कोई तुम्हीं सा बेवफा हो। -जिगर 63

हमसे क्या हो सका मुहब्बत में ,
तुमने तो खैर बेवफाई की। -'फिराक' गोरखपुरी 63
बेवफ़ाई - कृतघ्नता

आता नहीं खयाल अब अपना भी ऐ 'जलील' ,
इक बेवफा की याद ने सब कुछ भुला दिया। -जलील मानिकपुरी 63

मैं अभी से किस तरह उन को बेवफा कहूँ ,
मंजिलों की बात है , रास्ते में क्या कहूं। -नशूर वाहिदी 63

जानते हैं कि बेवफा हैं वो ,
फिर भी हम एतबार करते हैं। -साजन पेशावरी 63/281
एतबार - भरोसा/विश्वास

कभी खामोश हो जाना , कभी फ़रियाद कर लेना ,
मगर इस बेवफा को कभी चुपके चुपके याद कर लेना। 63

हम न भूले कभी वफ़ा की राह , इश्क ने रहनुमाई ऐसी की ,
इक हमीं से नहीं ‘जफ़र’ उसने जिससे की बेवफाई ऐसी की। 63
रहनुमाई - मार्ग दर्शन

नहीं शिकवा मुझे कुछ बेवफाई का तेरी हरगिज ,
गिला तब हो अगर तूने किसी से भी निबाही हो। -मीर दर्द 63
शिकवा - शिकायत , गिला - फरियाद , हरगिज - कदापि

गम तो इसका है कि एहद-ए-वफ़ा टूट गया ,
बेवफा कोई भी हो , तुम न सही हम ही सही। -रही मासूमरजा 63
एहद-ए-वफ़ा - वफादारी का वचन

वफ़ा जिससे की , बेवफा हो गया ,
जिसे बुत बनाया , खुदा हो गया। -'हफिज' जालन्धरी 63

कल आके जिन्होंने बेवफा को पाकर
मैं तर्क किया था इश्क कसमें खाकर
सुन आज की बात क्या कहेंगे मुझको
किस मुँह से दिखाऊँगा मुँह उनको जाकर। -मिर्जा मुहम्मद रफ़ी 'सौदा' 63

मत आइए ऐ वादा-फ़रामोश तूं अब भी ,
जिस तरह कटा रोज़ , गुजर जायेगी शब भी। 193/23
वादा फरामोश - वादा भूल जाने वाला , शब - रात

शबे-वस्ल उनका यूँ घबरा के कहना ,
बता दीजिये, हम से क्या कीजियेगा। 193
शबे-वस्ल - मिलन की रात

कितना हसीन था वो शबे-वस्ल का समा ,
तुम रूठते गये, मैं मनाता चला गया। -सहर सीतापुरी 193/68
शबे-वस्ल - मिलन की रात

शबे -विसाल है रोशन करो चरागों को ,
ख़ुशी की बज्म है जलने दो जलनेवालों को। -कैफ़ी आजमी 193/82
शबे विसाल -मिलन की रात

हमारी यह शब कैसी शब है इलाही ,
न रोते कटे है न सोते कटे है। -मीर 193
शब - रात , इलाही - भगवान/ ईश्वर

वो बिगड़ना वस्ल की रात का वो न मानना किसी बात का ,
वो नहीं-नहीं की हर अदा तुम्हें याद हो कि न याद हो।-मोमिन 193/105
वस्ल - मिलन

यही है मुख़्तसर हाले-शबे-वस्ल ,
खुदा ने दिन बढ़ाया रात कम की। -दाग 193
मुख़्तसर - छोटा किया हुआ / थोड़ा / सारांश ,
हाले-शबे-वस्ल - मिलन की रात का हाल

अच्छा किया , जो शबे वस्लसे इन्कार कर गए ,
खुशी से मर गए होते अगर इकरार हो जाता। 193

अदा आई, जफ़ा आई,गरूर आया , हिजाब आया ,
हज़ारों आफ़तें लेकर हसीनों का शबाब आया।
शबे-ग़म किस तरह गुजरी,शबे-ग़म इस तरह गुजरी ,
न तुम आए , न चैन आया , न मौत आई , न ख्वाव आया। -नूह नारवी 51
अदा - हावभाव , जफा - बेवफाई , गरूर - अभिमान ,
हिजाब - संकोच/ शर्म, शबाब - जवानी , शबेगम - गम की रात

शब को किसी के ख़्वाब में आया न हो कहीं ,
दुखते हैं आज उस बुत-ए-नाजुक बदन के पाँव। -ग़ालिब 294
शब - रात , ख्वाब - सपना ,
बुत-ए-नाजुक -प्रेयसी के नाजुक पांव

और कुछ देर न गुजरे शबे-फ़ुर्कत से कहो ,
दिल भी कम दुखता है वो याद भी कम आते हैं। -फैज अहमद फैज 294
शबे -फ़ुर्कत - वियोग की रात

शबे-गम किस आराम से सो गए हम ,
फ़साना तेरी याद का कहते कहते। -हसरत मोहानी 65
शबे गम - गम की रात , फसाना - कथा/ कहानी

270	मुलाकात / मिलना / मिले	193

कहाँ वो शोख मुलाकात खुद से भी न हुई ,
बस एक बार हुई फिर कभी न हुई।
ठहर ठहर दिले बेताब प्यार तो कर लूँ ,
अब इस के बाद मुलाकात फिर हुई न हुई। 270
*शोख़ - नटखट / चंचल , बेताब - व्याकुल/बेचैन*चंद

चंद कलियां ‘ निसाम ’ की चुनकर , मुद्दतों महवे पास रहता हूँ ,
तेरा मिलना खुशी की बात सही , तुझसे मिलकर उदास रहता हूँ। 270
महवे - तरबतर -निसाम

नहीं मिलते न मिलिये खैर कोई मर न जायेगा ,
खुदा का शुक्र है पहले मुहब्बत आपने कम की थी। -आगा 'शाइर' देहलवी 270

राह में उनसे मुलाकात हुई ,
जिससे डरते थे वही बात हुई। -हसरत 270

मिलते भी हैं कहीं तो वो मिलते हैं इस तरह ,
गोया कभी मैं उनसे कहीं भी मिला नहीं। -मोहन सिंह दीवान 270
गोया - जैसे / मानलो

गर तुझको नहीं मिलने की परवा ,
तो क्या है हम भी तेरे वास्ते मजबूर नहीं हैं। 270
गर - अगर / यानी
अब वो मिलते भी हैं तो यूं कि कभी ,
हम से कुछ वास्ता न था गोया। -हसरत मोहानी 270/51
गोया - मानलो

अब कौन बात रह गई , ये बात भी गई ,
यानी कभी कभी की मुलाकात भी गई। -मुबारिक अजीमाबादी 270

मैंने माना कि मुझे उन से मुहब्बत न रही ,
हमनशीं फिर भी मुलाकात से जी डरता है। -हसन नईम 270
हमनशीं - साथी

इरादे थे कि उनसे हाले-दिल सब मिल के कह देंगे ,
मगर मिलने पे हमसे आज होता है कल कहना। -हसरत मोहनी 270

298	वस्ल	193

थी वस्ल में भी फ़िक्र जुदाई की ,
वो आए तो भी नींद न आई तमाम शब। -मोमिन 193
वस्ल - मिलन , शब - रात

298
वस्ल में रंग उड़ गया मेरा ,
क्या जुदाई को मुंह दिखाऊंगा। -मीर 193

31	हिज्र / विरह की रात / शबेहिज्र	31

हिज्र की रात काटने वाले ,
क्या करेगा अगर सहर न हुई। -'अजीज' लखनवी 31
हिज्र -विरह

क्यों हिज्र के शिकवे करता है क्यों दर्द के रोने रोता है ,
अब इश्क किया है तो सब्र भी कर , इसमें तो यही कुछ होता है। 31
हिज्र - विरह -हफीज जालन्धरी

खफा न हो तो ये पूछूं कि तेरी जान से दूर ,
जो तेरे हिज्र में जीता है मर भी सकता है। -फानी 31
हिज्र - विरह

मेरी जिन्दगी तो गुजरी तेरे हिज्र के सहारे ,
मेरी मौत को भी प्यारे कोई चाहिए बहाना। -'जिगर' मुरादाबादी 31/40

32	उदासी / उदास	31

थकी-थकी सी फिजायें , बुझे-बुझे तारे ,
बड़ी उदास घडी है , जरा ठहर जाओ।
दमे-फिराक में जी भरके तुम्हें देख तो लूँ ,
ये फैसले की घडी है , जरा ठहर जाओ। -सैफ 32
दमे-फिराक - जुदाई की घडी

जो हो सके तो चले आओ आज मेरी तरफ ,
मिले भी देर हुई और जी भी उदास है। -अजीम मुर्तुजा 32

आदत सी पड़ गई है शायद वर्ना ,
रक्खा है 'फिराक' उदास रहने ही में क्या। -फिराक गोरखपुरी 32

दिल को क्या हो गया खुदा जाने ,
क्यों है ऐसा उदास क्या जाने। -'मीर' 32

जान-ओ-दिल है उदास से मेरे ,
उठ गया कौन पास से मेरे। -'मीर' 32
जान ओ दिल - मन और दिल

हाँ कम नहीं तेरे पास रह लेना भी ,
हाँ कम नहीं तेरी आस रह लेना भी।
यूँ दिल को न हो सब्र बहुत है वर्ना ,
तुझ से छूटकर उदास रह लेना भी। -फिराक गोरखपुरी 32/268
सब्र - धीरज

शाम का यह उदास सन्नाटा ,
धुँधलका , देख , बढ़ता जाता है।
नहीं मालूम यह धुआँ क्यों है ,
दिल तो खुश है कि जलता जाता है। -मीना कुमारी 32/53

उदासी तबीयत पे छा जायेगी , उन्हें जब मेरी याद आयेगी ,
मुझ इश्के दर पर है मरना मंजूर , मेरी यह अदा उनको भा जायेगी।
तुम्हें याद आयेगी मेरी वफ़ा , मेरे साथ मेरी वफ़ा जायेगी।
दर - दरवाजा/ घर/ चौखट , अदा - हावभाव -जिगर मुरादाबादी 32/105

बैठे उदास , उठे परेशां , खफा चले ,
पूछे तो कोई आपसे , क्या आए क्या चले। -दाग 32

कहें न तुमसे तो फिर जा के किससे कहें ,
सियाह जुल्फ़ के सायो , बड़ी उदास है रात। -फिराक 32

सियाह - काल , सायो - परछाई

आपका साथ है उदास हूँ मैं ,
हाथ में हाथ है उदास हूँ मैं।
जाने क्या हो गया मेरे दिल को ,
चाँदनी रात है , उदास हूँ मैं। -इशरत 32

85	तड़पन / तड़पना / तपिश	31

जर्रे दिवार खड़े हैं तेरा क्या लेते हैं ,
देख लेते हैं , तपिश दिल की बुझा लेते हैं। -गालिब 85

जर्रे - अत्यंत छोटा टुकड़ा / कण , तपिश - गर्मी, ताप

यूं तड़पकर दिल ने तड़पाया सरे-महफिल मुझे ,
उसको कातिल कहने वाले कह उठे कातिल मुझे। 85/175

दिल तो शौके-दीद में तड़पा किया ,
आँख ही कमबख्त शरमाती रही। -ख़ुशी अहमद नाजिर 85/179

शौके दीद - दिखाने की इच्छा , कमबख्त - कम नसीब

तड़प-तड़प के गुजारी तमाम रात 'नसीम',
सहर हुई तो सितारों ने साथ छोड़ दिया। -नसीम शाहजहांपुरी 85/58

नसीम - हवा/ गहरी हवा , सहर - सुबह

जाओ भी , अब न दो मुझे झूठी तसल्लियाँ ,
मर जायेंगे तड़प के तुम्हारी बला से हम। -हफीज जालंधरी 85

तड़पूं तो राज खोलूं , संभलूं तो इश्क नाखुश ,
जिस हाल को मैं समझा अच्छा , वही बुरा था। -साकिब लखनवी 85/30

आप जब आँख फेर लेते हो , कोई उम्मीद ही नहीं रहती ,
हमें मालूम न था कि प्यार में , इतनी तड़पन होती है।
इतना रूठना इतना मनाना होता , तो हमने प्यार किया न होता ,
चमकी बिजली सी पर न समझे हम , हुस्न था या जमाल था क्या था? 85/68
जमाल – सौंदर्य

86	आह	31

आह तो बेअसर थी बरसों से , नगमा भी बेअसर है क्या कहिये ,
हुस्न है अब न हुस्न के तलब , अब नजर ही नजर है क्या कहिये। 86/133
नग़मा - गाना/ गीत , तलब - मांगना -मजाज

हम आह भी भरते हैं तो हो जाते हैं बदनाम ,
वो कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता। -अकबर इलाहबादी 86

आह को चाहिये इक उम्र असर होने तक ,
कौन जीता है तेरी जुल्फ के सर होने तक। -ग़ालिब 86
आह - अफसोस , सर - दिमाग

पाता ही नहीं राह किसी दिल में इलाही ,
मैं किस दिले-नाकाम की आहों का असर हूं। -मीर हसन देहल्वी 86
दिले-नाकाम - असफलता

क्या जानिये ये आह है कि क्या है ,
कुछ आग सी आई है जबां पर। -मीर शबीर अली अफ़सोस 86

जख्म पे जख्म खा के जो, अपने लहू के घूँट पी ,
आह न कर लबों को सी , इश्क है दिल्लगी नहीं। -एहसान दानिश 129
जख्म - घाव , लब - होंठ , दिल्लगी - हँसी-मज़ाक / मनोविनोद

हर नए ज़ख्म पे अब रूह बिलख उठती है ,
होंठ अगर हँस भी पड़ें , आँख छलक उठती है।
जिन्दगी एक बिखरता हुआ दर्दाना है ,
ऐसा लगता है कि अब खत्म पर अफसाना है। -मीना कुमारी 129/55
जख्म - घाव , रूह - आत्मा , दर्दाना - दर्द की कहानी ,
अफसाना - कहानी , बिलख -रो पड़ना

तुम्हारे शहर में कुछ लोग इस तरह भी जिए ,
किसी ने जख्म छुपाए किसी ने होंठ सिए। -अमीर कजलबाश 129

समय कोई जख्म देता है इसीलिये ,
घडी में फूल नहीं कांटें होते हैं।
समय जख्म भरता है इसीलिये ,
किसी ने मरहम नहीं बांटे हैं। 129

जख्मे-दिल पर मेरे हँस-हँस के छिड़कते हो नमक ,
जो मजा इश्क का हासिल न हुआ था , सो अब हुआ। -हसरत अजीमाबादी 129

आगे कुछ लोग हमें देख के हँस देते थे ,
अब ये आलम है , कोई देखने वाला भी नहीं।
दर्द वो आग कि बुझती नहीं , जलती भी नहीं ,
याद वो जख्म कि भरता नहीं , रिसता भी नहीं। -राही 129/57
आलम - स्थिति , रिसता - मिटता / घाव का भरना

लोग कांटों से बच के चलते हैं ,
मैंने फूलों से जख्म खाये हैं। -राही 3

161	तन्हा / तन्हाई / तनहाई	31

तेरे पहलू से उठकर खो गये हम ,
ख़यालों की बनी तनहाइयों में। -अहमद 161/95
पहलू - पास , तनहाई - अकेलापन

बेख़वर अंजुमने-नाज में सोने वाले ,
रात भर तुझको पुकारा मेरी तन्हाई ने। -आसी उल्दूनि 161
अंजुमने - महफिल , नाज - अभिमान/ गर्व

मैं हूं , दिल है , तन्हाई है ,
तुम भी जो होते अच्छा होता। -फिराक गोरखपुरी 161
तन्हाई – एकांत

27	याद	27

उजाले अपनी यादों के, हमारे साथ रहने दो ,
न जाने किस गली में , जिंदगी की शाम हो जाये। -इकबाल 27

तुझ से तो तेरी याद अच्छी जो आने को शरमाती नहीं ,
तूं आकर चली जाती है वो आ के जाती नहीं। 27

तुम तो भूलकर भी याद करते नहीं कभी ,
हम तो तुम्हारी याद में सब कुछ भुला चुके। -जौक 27

रहने लगी उनकी याद हरदम ,
अब और हमें रहेगा क्या याद। 27

दिल को उनकी याद से आबाद रख ,
भूलना अच्छा नहीं है याद रख। 27
आबाद - बसा हुआ / संपन्न

जिस को तुम भूल गए याद करे कौन उसे ,
जिस को तुम याद हो वो और किसे याद करे। -जोश मलीहाबादी 27

तुम्हारी याद के जब जख्म भरने लगते हैं ,
किसी बहाने तुम्हें याद करने लगते हैं। -फैज 27

नहीं आती तो याद उनकी महीनों तक नहीं आती ,
मगर जब याद आते हैं तो अकसर याद आते हैं। -हसरत मोहानी 27
हम उनकी याद में आह सब कुछ भूल गये ,
उन्होंने हमें भूलकर भी न कभी याद किया। 27

मुद्दत गुज़री तेरी याद भी आई न हमें ,
और हम भूल गये हों तुझे , ऐसा भी नहीं। -'फ़िराक़' गोरखपुरी 27

दिल में इक दर्द उठा , आँख में आँसू भर आए
बैठे-बैठे हमें क्या जानिये क्या याद आया। -वजीर अली 'सबा' 27

तुम जिसे याद करो फ़िर उसे क्या याद रहे ,
न खुदाई की हो परवा, न खुदा याद रहे। -'जौक' 27/35

जिस रोज किसी और पे बेदाद करोगे ,
यह याद रहे हमको बहुत याद करोगे। -सौदा 27
बेदाद - जुल्म

जब सुना तुम भी मुझे याद किया करते हो ,
क्या कहूँ , हद न रही कुछ मिरी हैरानी की। -'हसरत' मोहानी 27

आँखों में छुपाए फिर रहा हूँ ,
यादों के बुझे हुए सवेरे। -नासिर काजमी 27

आप अपने को न पहचान सके हम से दूर ,
उन से बिछड़े तो अजब सूरते-हालत हुई।
रोज मय पी है, तुम्हें याद किया है लेकिन ,
आज तुम याद न आए , ये नई बात हुई। -मखमूर सईदी 27

याद उसकी है ऐसी कि बिसरती भी नहीं ,
नींद आती भी नहीं, रात गुजरती भी नहीं।
शाम होती है तो इक अजनबी दस्तक के सिवा ,
दिल से पहरों कोई आवाज उभरती भी नहीं। -शिहाब जाफरी 27
बिसरती - भूलती , दस्तक - दरवाजा खड़खड़ाना , पहरों - पहर तक

तुझको सौ -सौ तरह से करके याद ,
तुझको सौ-सौ तरह भुलाता हूँ। -फिराक 27/128

याद आओ मुझे लिल्लाह , न तुम याद करो ,
मेरी और अपनी जवानी को न बरबाद करो। -अख्तर शिरानी 27
लिल्लाह - भगवान के लिए

जब से वो गए उधर नहीं याद किया ,
भेजी नहीं कुछ खबर नहीं याद किया।
हम याद में जिसकी आह सब कुछ भूले ,
उसने हमें भूल कर नहीं याद किया। -मोमिन 27

मैंने परदेसियों से सीखी है , यह किस देस की रीत ,
जो तुम्हें याद करे , उसको न तुम याद करो। -अख्तर शिरानी 27

भुलाई नहीं जा सकेंगी ये बातें ,
बहुत याद आयेंगे हम, याद रखना। -हफिज जालन्धरी 27

याद में तेरी जहाँ को भूलता जाता हूँ मैं ,
भूलने वाले कभी तुझ को याद आता हूं मैं। -आगा शाइर 27

आज क्यों हिचकियां आई दिले-नाशाद मुझे ,
शायद उस शोख ने भूले से किया याद मुझे। -अज्ञात 27
दिले नाशाद - अभागा दिल

वो याद जो महवे-होश पाती है मुझे ,
चौंका के अजब समाँ दिखाती है मुझे।
हर बू में झलकता है रूखे यार का रंग ,
हर रंग में बू-ए-यार आती है मुझे। -फानी बदायूनी 27

महवे होश - होश में रहना , बू - सुगंध,
रूखे यार - यार का चेहरा , बू ए यार - प्रेयसी की सुगंध

अगर आप की याद न होती तो हम कभी के बरबाद हो जाते ,
अगर वो आग भी होती तो हम जलकर ख़ाक हो जाते। 27

तुम आ गए जब याद तो कुछ भी न रहा याद ,
कब तुमने भुलाया मुझे कब तुमने किया याद। -जगन्नाथ आजाद 27

याद इक जख्म बन गई है वर्ना ,
भूल जाने का कुछ ख्याल तो था। -अदम 27/129

कई साल बाद आज ऐसा हुआ ,
बड़ी देर तक खुद को हम याद आए। -बशीर बदर 27

जाने वाले कभी नहीं आते ,
जाने वालों की याद आती है। -वज्द 27

रात यूँ दिल में तेरी खोई हुई याद आई ,
जैसे वीराने में चुपके से बहार आ जाए।
जैसे सहराओं में हौले से चले वादे-नसीम ,
जैसे बीमार को बेवजह करार आ जाए। -फैज अहमद फ़ैज़ 27

मैं बैठा हूँ जीवन में उन्माद लिए ,
ये घिर आए मेघ तुम्हारी याद लिए। -आरसीप्रसाद सिंह 27

अब इसके सिवा और मुहब्बत में रहा क्या ,
आई जो तेरी याद तो आँसूं निकल गए। -मुश्ताक अख्तर 108/27

128	भूलना / भुलाना / भूल	27

एक तुम हो कि पल भर को भुलाए नहीं जाये ,
एक हम है कि खुद को भी नहीं आए कभी याद। 128

तुम भुलाते रहो प्यार की जिंदगी ,
हम इसी भूलने को भूलाते रहे।
याद की राह में तुम मिलो न मिलो ,
दर्द के गीत तुम को बुलाते रहे। 128

यह भूल हुई भूले से कभी , हम तेरी तमन्ना कर बैठे ,
दिल पछताता है रह-रह कर , क्या करना था , क्या कर बैठे। 128

एक मुद्दत से पयमान किया था ,
दिल से उनको भूल जाने का।
वोह याद आए इस सिफ़त से ,
हम उनको भूलाना भूल गये। 128
पयमान - संदेश , सिफत - तेजी

वो मुझे भूल गई इसकी शिकायत क्या है ,
रंज तो ये है कि रो रो के भुलाया होगा। 128/29
रंज - गम

अफ़सोस है कि मुझको वह यार भूल जावे ,
वो रस्म , वो मुहब्बत , वो प्यार भूल जावे। -शाह मुबारक 'आबरू' 128/256

हम तुम्हें याद भी आयें तो कभी भूले से ,
तुम हमें भूल भी जाओ तो बहुत याद करें। -शायर आगा मुजफ्फ़र 128/27

अब इस फिक्र में रात दिन कट रहे हैं ,
तुझे भूल जाएँ कि खुद को भुला दें। -शफक टोंकवी 128

तुझे भूल जाना तो है गैर-मुमकिन ,
मगर भूल जाने को जी चाहता है। -जिगर 128

गैर-मुमकिन - असंभव

भूले से यह भूल हुई जो तुम्हें याद करे ,
चाहे याद न आए तो फिर कौन याद करे। 128

दुनिया की फ़िक्र , दिल की बातें , खुदा की याद ,
सब कुछ भुला दिया , तेरे दो दिन के प्यार में। -अख्तर शिरानी 128

20	ख्वाब / सपने	20

अब के हम बिछड़े तो शायद कभी ख्वाबों में मिले।
जिस तरह सूखे हुए फूल किताबों में मिले। 20

आसान नहीं इस दुनिया में ख्वाबों के सहारे जी सकना ,
रंगीन हकीकत है दुनिया ये कोई सुनहला ख्वाब नहीं। 20

ख्वाब - स्वप्न , सुनहला -चमकीला

तुम ख्वाब में भी आए तो मुँह को छिपा लिया ,
देखो जहाँ में परदानशीं और भी तो है। 20

मेरे ख्वाबों के झरोंखों को सजाने वाली ,
तेरे ख्वाबों में कहीं मेरा गुजर है कि नहीं।
पूछ कर अपनी निगाहों से बता दे मुझको ,
मेरी रातों के मुकद्दर में सहर है कि नहीं। 20

निगाह - नजर , मुकद्दर - नसीब , सहर - सुबह

यह पक्का मानना है कि रात को मैंने उनका ख्वाब देखा है ,
सुबह जब आँखें खोलीं तो उसमें से एक आँसूं निकला। 20

एक मुअम्मा है , समझने का न समझाने का ,
जिन्दगी काहे को है , एक ख्बाब है दीवाने का। -अज्ञात 20

मुअम्मा - समस्या

प्यार इक ख्वाब था, इस ख्वाब की ताबीर न पूछ ,
क्या मिली जुर्मे-वफ़ा की हमें ता'बीर न पूछ। -मीना कुमारी 20

ताबीर - स्वप्नफल

है नहीं मुमकिन कि ख्वाबों में भी तुमसे मिल सकूँ ,
जागते रातों को कटती है हमेशा जिन्दगी। -शकर प्रसाद करगेती 20/33

ख्वाब - सपना

इश्क में ख्वाब का ख्याल किसे ,
न लगी आँख जब से आँख लगी। -मेरे महम्मद हयात , हसरत 20

95	ख्याल	20

कुछ इस कदर मैं खो गई तेरे ख्याल में ,
मालूम खुद नहीं है अपनी खबर मुझे। -नाज 95

दिल पर यों छोड़ गया तेरा ख्याल अपने नकुश ,
जिस तरह रेत पर लहरों के निशान। 95

नकुश - निशान

मर कर तेरे खयाल को टाले हुए तो हैं ,
हम जान दे के दिल को सँभाले हुए तो हैं। -'फानी' 95/9

मैं तुझ को भूल चूका था कि इक उम्र के बाद ,
तेरा खयाल किया था कि चोट उभर आई। -नदीम 95

सीने में जैसे फाँस खटकती है दम-ब-दम ,
तेरा ख्याल दर्दे-जिगर बन के रह गया। -वज्द 95
दमबदम - हरदम , दर्दे-जिगर - कलेजे का दर्द

अच्छा हुआ कि छूटी मुझसे फ़िक्रे-दुनिया ,
जितना खयाल करते उतना मलाल होता। -आसी उल्दनी 95
मलाल - दुःख

दिन कट गया तो रात का कर नाम मुहाल है ,
वो गुफ्तुगु कि फिराक मेंअब मेरा हाल है ।
पहलु में दिल है दिल में तुम्हारा ख्याल है ,
ऐसा ख्याल जिसका अब भुलाना मुहाल है। 95
गुफ्तगु - बातचीत , मुहाल - असंभव ,
फिराक - विरह / जुदाई , पहलु - पास में

बुझ गया दिल ख्याल बाकी है ,
छुप गया चाँद रात बाकी है।
हाले दिल कह चुके उनसे सौ बार ,
अब भी कहने की बात बाकी है। 19

137	खबर / बेखबर	20

मुझे खबर नहीं है ऐ हमदमो, सुना ये है ,
कि देर देर तक अब मैं उदास रहता हूँ। 137/32
हमदमो - मित्र

पहुँची जिस वक़्त खबर उसकी मुझे आने की ,
सुध रही मुझको न अपने की न बेगाने की। -'मिर्जा' हसन 137

मुझको तो होश नहीं तुमको खबर हो शायद ,
लोग कहते है कि तुमने मुझे बरबाद किया। -'जोश मलीहाबादी 137/249

खबर वो रक्खेंगें क्या किसी की ,
उन्हें खुद अपनी खबर नहीं है। -जिगर मुरादाबादी 137

वाकिफ़ गमे-उल्फ़त से न दिल हो न जिगर हो ,
यूँ मुझसे मिलो तुम कि मुझे भी खबर न हो। -जिगर 137
वाकिफ़ - जानकार , गमे-उल्फ़त - प्रेम का गम

है गर्क-फ़ना मौज उभरने वाली ,
पलटी है कहीं वफ़ा न करने वाली।
ऐ अहले-जमाना क्या खबर थी हमको ,
यह उम्र है धोखे में गुजरने वाली। -अमजद हैदराबादी 137/139
गर्क-फना - ख़ौफ़नाक / भयानक / भीषण , अहले-जमाना - उम्र का होना

थी खबर गर्म कि 'ग़ालिब' के उड़ेंगे पुर्जे ,
देखने हम भी गये थे , पै तमाशा न हुआ। -ग़ालिब 137

अनजान तुम बने रहे , यह और बात है ,
ऐसा तो क्या है , तुमको हमारी खबर न हो। -बेताब अजीमावादी 137

आने की खबर है उनकी लेकिन ,
आता नहीं ऐतबार दिल को। -जुरअत 137
ऐतबार - भरोसा/विश्वास

अब तक न खबर थी मुझे उजड़े हुए घर की ,
तुम आए तो घर बे-सर-ओ-सामाँ नज़र आया। -'जोश' मलीहाबादी 137
बे सर ओ सामाँ - बिना सामान

हम वहाँ हैं जहाँ से हमको भी ,
कुछ हमारी खबर नहीं आती। -ग़ालिब 137

इलाही कौन याद आया है मुझको ,
तबियत आज काबू में नहीं है ।
खुदा जाने वो क्या समझें हैं दिल में हमें ,
आखर जो हमसे बेखबर है । 137/27

हाले-दिल पूछते हैं यूँ मुझसे ,
जैसे उनको तो कुछ खबर ही नहीं। -सीमाब सुल्तानपुरी 137

152	अंदाज	20

है और भी दुनिया में सख़ुनवर बहुत अच्छे ,
कहते हैं कि 'गालिब' का है अंदाजे बयां और। -गालिब 152
सखुनवर - शांति प्रिय , बयां - बताना

सबब खुला है हमें उनके मुँह छुपाने का ,
उड़ा न ले कोई अंदाज मुस्कराने का। 152
सबब - कारण

अपने ग़मखाने में बैठा हूँ इस अंदाज से आज ,
जैसे मुझको तेरे आने की जरुरत न रही -माहिरूल 'कादरी 152/64
ग़मखाने - दुख का घर

यूं देखती है जैसे नहीं देखती नज़र ,
जालिम के देखने का ये अंदाज देखना। -शकील बदायूनीं 152/189
जालिम - अत्याचारी / क्रूर

180	जुस्तुजू / तलाश	20

ये किस मुकाम पे ले आई जुस्तुजू तेरी ,
कोई चराग नहीं और रोशनी है बहुत। -कृष्णबिहारी नूर 180
जुस्तजू - तलाश खोज , चिराग – दीपक

233	तसव्वुर / कल्पना	20

रात भर उनका तसव्वुर दिल को तड़पाता रहा ,
एक नक्शा सामने आता रहा , जाता रहा।
सब न मिलने तक की बातें थीं , अब आकर मिल गए ,
सारे शिकवे मिट गए , सारा गिला जाता रहा। -अख्तर शीरानी 233
तसव्वुर - कल्पना , शिकवा - शिकायत ,
गिला - फ़रियाद करना / शिकायत करना

पेशे -नज़र रहे वह तसव्वुर के सुबह तक ,
कब सामने से चश्म के ढल रात को गये। -बहादुर शाह जफ़र 233
पेशे नजर - नजर के सामने , तसव्वुर - कल्पना
चश्म - आंख

233
फिर नज़र में फूल महके , दिल में फिर शम्ए जलीं ,
फिर तसव्वुर ने लिया उस बज्म में जाने का नाम। -फैज अहमद फैज 223/56
तसव्वुर - कल्पना , बज्म - महफिल

26	शम्ए / शमा / शम्मा	26

शमा में वो हिम्मत कहाँ जो एक परवाने में हैं ,
लुफ्त जीने में नहीं जल जल के मर जाने में है। 26
शमा - दीपक, परवाना - पतंगा , लुफ्त - मजा

बुझी बुझी सी रही शम्मे-आरजू दिल की ,
तुम्हारे बाद इस घर में फिर रोशनी न हुई। 26
शम्मे आरजू - इच्छा का दीपक

न बाग़बाँ ने इज़ाज़त दी सैर करने की ,
खुशी से आए थे रोते हुए चमन से चले। -जफर 26
बतौर - बजाय , शमअ - दीया , अंजुमन - महफिल

ऐ शमा तेरी उम्र तबई है एक रात ,
हँस कर गुजार या उसे रो के गुजार दे। -असगर 26
शमा - दीया , तबई - निश्चित

शम्अ भी कम नहीं कुछ इश्क में परवाने से ,
जान देता है अगर वो तो ये सर देती है। -जौक 26

काम करती है आँधियाँ अपना ,
हम भी शमाएँ जलाए जाते हैं। -सीमाब सुल्तानपुरी 26
शमाऐं - दीपक/ मोमबत्ती

बुझी हुई शमा का धुआँ हूँ , और अपने मर्कज को जा रहा हूँ ,
के दिल की हस्ती मिट चुकी है , अब अपनी हस्ती मिटा रहा हूँ। -अज्ञात 26
शमा - दीपक/ मोमबत्ती , मर्कज - कबर , हस्ती - जीवन

इक न इक शम्मा अँधेरे में जलाये रखिये ,
सुबह होने को है माहौल बनाये रखिये। -सौदा 26
शम्मा - दीपक , माहौल - वातावरण

मुझ में और शम्अ में होती थीं ये बातें शब भर ,
आज की रात बचेंगे तो सहर देखेंगे। -मीर फसाहत 178/58
सहर - सुबह

बुझती हुई शम्मएँ होती हैं , डूबे हुए तारे होते हैं ,
महफ़िल के उजड़ने से पहले आसार ये सारे होते हैं।
बर्बादे-मोहब्बत पर ऐसा इक दौर भी आ ही जाता है ,
आगोश में सूरज होता है , पलकों पे सितारे होते हैं। -शोर अलीग 51
शम्मएँ - दीये , महफ़िल - सभा , आगोश - आलिंगन ,
आसार - पूर्वानुमान / लक्षण , बर्बादे-मोहब्बत - मोहब्बत में बर्बाद होना

ऐ शमा सुबह होती है , रोती है किस लिए ,
थोड़ी सी रह गयी है उसे भी गुजार दे। -हकीम आगा जान ऐश 26

174	परवाना	26

कुछ खेल न था यों भी परवाने का जल बुझना ,
जल कर न बुझे ऐसे परवाने को क्या कहिए। -'फानी' बदायूनी 174
परवाना - पतंगा

नजर में ढल के उभरते हैं दिल के अफ़साने ,
ये और बात है , दुनिया नज़र न पहचाने।
वो बज़्म देखी है मेरी निगाह ने कि जहाँ ,
बग़ैर शमअ भी जलते रहे हैं परवाने। -तबस्सुम गुलाम मुस्तफा 174
अफसाना - कहानी , बज्म - सभा , शमअ - दीया

तुझसे मिलकर इस कदर अपनों से बेगाने हुए ,
अब तो पहचाने नहीं जाते हैं पहचाने हुए।
इसको क्या कहिये कि हम हर हाल में जलते रहे ,
दूरियों में चाँद थे कुर्बत में परवाने हुए। -खातिर गजनवी 174
बेगाने - पराये , कुर्बत - सामीप्य / नजदीकी,
दूरियों - दूरी

यह भीनी-भीनी सी मस्त खुशबू ,
यह हल्की -हल्की सी दिलनशीं बू।
यहीं कहीं तेरी जुल्फ के पास ,
कोई परवाना जल रहा है। -अदम 174
दिलनशीं - दिल मे समा जाना , बू - सुगंध , परवाना - पतंगा

हुस्न और इश्क का रिश्ता भी अजब होता है ,
शमां जलती है तो परवाने भी जल जाते हैं। -स्वरुप नारायण "दिल' 174/26
शमां - दीपक/ मोमबत्ती , परवाना - पतंगा

जिस शोख नजर की महफ़िल में आंसू भी तब्बसुम बन जाए ,
वहाँ शमए जलाई जाएगी , परवाने का मातम क्या होगा।-मजरूह सुल्तानपुरी 174
तब्बसुम -मधुर मुस्कान , मातम - शोक

296	जलना	26

जल रहा है ये कहीं दुनिया न जान ले ,
दिल, जल तूं इस तरह कि जरा भी धुंआँ न हो। -जाकिर 296

60	आरजू	60

दफनाना देखभाल के हसरत भरे की लाश।
लिपटी हुई कफ़न में कोई आरजू न हो। 60
हसरत - इच्छा , आरजू - इच्छा/ प्रार्थना

अजब आरजू है अनोखी तलब है ,
तुझी से तुझे माँगना चाहता हूँ। -वज्द 60
अजब - अनोखा , आरजू - इच्छा/ प्रार्थना , तलब - मांगना

आरजू तेरी बरकरार रहे ,
दिल का क्या है रहा , रहा न रहा। -हसरत मोहनी 60
बरकरार -सही / पक्का

हम क्या करें , अगर न तेरी आरजू करें ,
दुनिया में और भी कोई तेरे सिवा है क्या। -हसरत 60
आरजू - इच्छा

मरते हैं आरजू में मरने की ,
मौत आती है , पर नहीं आती। -ग़ालिब 60/40

दिल में फिर आरजूओं की शमअ न जल पड़ें ,
इतना भी मत सताओ कि आँसू निकल पड़ें। -साहिर 60

गमे-हयात ने आवारा कर दिया वरना ,
थी आरजू कि तेरे दर पे सुबहो-शाम करें। -'मजरूह' सुल्तानपुरी 60
गमे हयात - जीवन की पीड़ा , आरजू - इच्छा

मुझे ये डर है तेरी आरजू न मिट जाये ,
बहुत दिनों से तबीयत मेरी उदास नहीं। -नासिर काजिमी 60
आरजू - इच्छा

मुझको ये आरजू वो उठायें नकाब खुद ,
उनको ये इन्तजार तकाज़ा करे कोई। -मजाज 60
आरजू - इच्छा/ प्रार्थना , नकाब - बुरखा , तकाजा - तगादा / माँगना

तुझसे मिले न थे तो कोई आरजू न थी ,
देखा तुझे तो तेरे तलबगार हो गये। -जिया अकबराबादी 60
आरजू - इच्छा , तलबगार - मांगने वाला / भिक्षुक

हर एक पेड़ से साये की आरजू न करो ,
जो धूप में नहीं रहते वो छाँव क्या देंगें। -कृष्ण बिहारी नूर 60
आरजू - इच्छा/ प्रार्थना

खैर गुजरी कि तूं नहीं दिल में ,
अब कोई आरजू नहीं दिल में। -अल्हड बीकानेरी 60
आरजू - इच्छा/ प्रार्थना

अब और आरजू नहीं , अय खुदा मुझे ,
क्या दर्दे दिल दिया , सब दिया मुझे। 60
आरजू - इच्छा

कुछ ठोकरें खानी हैं अभी किस्मत में ,
मरने की तमन्ना में जिये जाता हूँ। -महमूद इसराइली 40/280

सर में सौदा भी नहीं , दिल में तमन्ना भी नहीं ,
लेकिन इस तर्के-मोहब्बत का भरोसा भी नहीं। -फिराक गोरखपुरी 280
तमन्ना - इच्छा/ कामना , तर्के मोहब्बत - प्रेम का तर्क ,
सर - दिमाग, सौदा - व्यापार

इस नजर से तुमने क्यों देखा मुझे ,
हर तमन्ना ख्वाब बन कर रह गई। -वज्द 280
तमन्ना - इच्छा/ कामना , ख्वाब - सपना

अभी जिन्दा हूँ लेकिन सोचता रहता हूँ ख़लवत में ,
कि अब तक किस तमन्ना के सहारे जी लिया मैंने।
बस अब तो दामने-दिल छोड़ दो बेकार उम्मीदो ,
बहुत दुःख सह लिया मैंने बहुत दिन जी लिया मैंने। -साहिर लुधियानवी 280/78
खलवत - एकांत , तर्क - छोड़ देना , दामने-दिल - दिल का दामन,

मुमकिन हो तो फर्ज़े-इश्क पूरा कर लें ,
मुमकिन हो तो दिल में दर्द पैदा कर लें।
अपना कर लें तुझे ये किस्मत में कहाँ ,
दुःखते दिल से तेरी तमन्ना कर लें। -फिराक गोरखपुरी 280
मुमकिन - संभव , फर्जे इश्क - इश्क की फरज

इक तर्जे-तगाफुल है, सो वो उनको मुबारिक ,
इक अर्जे -तमन्ना है , सो हम करते रहेंगें। -फैज अहमद फैज 280
तर्जे-तगाफुल - काल्पनिक उपेक्षा ,
अर्जे-तमन्ना - ख्वाहिश या आरजू की अभिव्यक्ति

जब तक मिले न थे तो जुदाई का था मलाल ,
अब यह मलाल है कि तमन्ना निकल गयी। -जलील 280/25
मलाल - दुःख , तमन्ना - इच्छा

पलट कर यूँ न देखो तुम मुझे बस ,
तड़पता छोड़ दो बिस्मिल समझ कर।
तमन्नानों ने यूँ झटका है दामन ,
नाकामे -जीस्त को बुझदिल समझ के। -मीना कुमारी 280
बिस्मिल - क़त्ल किया हुआ , नाकामे-जीस्त - असफल जिंदगी ,
बुझदिल - कायर

अगर थी तो ये ही थी बस तमन्ना आखरी अपनी ,
किनारे पर वोह होते और कस्ती डूबती अपनी। 60

जो तमन्ना दिल में थी वो दिल में घुट कर रह गयी ,
उसने पूछा भी नहीं हमनें बताया भी नहीं। -सिराज लखनवी 280

'फानी' जब दिल नहीं तो दुनिया भी नहीं ,
अब ऐश अजीज क्या गवारा भी नहीं।
जीने की तमन्ना को जमाना गुजरा ,
अब खैर से मरने की तमन्ना भी नहीं। -'फानी' बदायूनी 280
फानी - नश्वर , अजीज - प्रिय , तमन्ना - इच्छा
गवारा - पसंद , ऐश -भोग-विलास

68	रूठना / मनाना	68

बहाने बनाना कोई उनसे सीखे ,
बनाकर मिटाना कोई उनसे सीखे।
सबब रूठने का भी होता है लेकिन ,
यूँ ही रूठ जाना कोई उनसे सीखे। 68
सबब - कारण

रूठने वालों से इतना कोई जाकर पूछे ,
खुद ही रूठे रहे, या हमसे मनाया न गया। -जज्बी 68

वीराँ है मैकदा , खुम-ओ-सागर उदास हैं ,
तुम क्या गये कि रूठ गये दिन बहार के। -'फैज' 68/32
वीराँ - उजड़ा हुआ / बर्बाद , मैकदा - मयखाना,
खुम ओ सागर – प्याला / सुराई

एक बात भला पूछूं , तुम कैसे मनाओगे ,
जैसे कोई रूठा हो, और तुमको मनाना हो। -असर 68

उन्हें मालूम है हमको मनाना खूब आता है ,
इसी वाइस वो हमसे रूठकर हमको सताते हैं। -शमशीर हैदराबादी 68
वाइस - कारण

पहले इसमें एक अदा थी , नाज था , अन्दाज था ,
रूठना अब तो तेरी आदत में शामिल हो गया।
इसलिए कहते थे , देखा मुँह लगाने का मज़ा ,
आइना अब आपका मद्दे-मुकाबिल हो गया। -शायर आगा मुजफ्फ़र 68
अदा - हावभाव , नाज - अभिमान ,
मद्दे-मुकाबिल - विपक्षी / शत्रु / प्रतिद्वंदी

251	रुसवाई / रुसवा	68

जाने तेरी सखियों ने क्या कहा होगा तुझ से ,
हम तो हो गये रुस्वार अपने हमनसीनों में। 251/194
रुस्वार - बदनाम , हमनसीनों - दोस्त

दोनों ने किया है मुझ को रुस्वा ,
कुछ दर्द ने और कुछ दवा ने। 251
रुस्वा - अपमानित

अपनी रुसवाई का गम था जब हमें ,वो दिन गए ,
अब तो ये ग़म है कि ऐसी फिर न रुसवाई हुई। -नातिक गुलावही 251
रूसवाई - बदनाम

इश्क जब तक न कर चुके रुसवा ,
आदमी काम का नहीं होता। -मिर्जा हादी रुस्वा 251
रूसवा - बदनाम

मुझको एहसास हुआ जब तेरी रुसवाई का ,
रुक गया हाथ मेरा जा के गिरेबां के करीब। -तबस्सुम देहल्वी 251
रुसवाई - बदनाम , गिरेबां - गला

इश्क दिल में रहे तो रुसवा हो ,
लब पे आए तो राज हो जाए। -फैज अहमद फैज 251/30

रुसवा अगर न करना था आलम में यूं मुझे ,
ऐसी निगाहे-नाज से देखा था क्यों मुझे। -आफताब राय 'रुसवा' 25
आलम – संसार

91	हसरत / हसरतों	91

है जनाज़ा भारी इसलिये मेरा ,
हसरतें दिल की लिये जाते है हम। 91/41
जिन्हें हासिल है तेरा क़ुर्बे खुश किस्मत सही लेकिन ,
तेरी हसरत लिये मर जाने वाले और होते हैं। -हरिचन्द अख्तर 91
क़ुर्बे - नजदीक / पास

चल साथ कि हसरत दिले मरहूम से निकले ,
आशिक का जनाज़ा है , जरा धूम से निकले। -'फिदवी' अजीमाबादी 91
हसरत - इच्छा , मरहूम - मृत

दम न निकला सुबह तक शामे ए अलम ,
हसरतों ने रात भर पहरा दिया। 91
शाम ए अलम - दुःख भरी शाम , हसरत - इच्छा

ये तो ठीक है की तेरी जफ़ा भी है इक अता मेरे वास्ते ,
मेरी हसरतों की कसम तुझे, कभी मुस्करा के भी देख ले। 91/62
अता - कला -आनन्द नारायण मुल्ला

जब तक थे हम अनजान ख़ुशी के दिन थे ,
हसरत थी न अरमान ख़ुशी के दिन थे।
बचपन के साथ हो गए वो रुखसत ,
दो रोज के मेहमान ख़ुशी के दिन थे। -'महरुम' तिलोकचंद 91
रुखसत - बिदायी

मैंने हसरत से कहा , 'तुमसे मुहब्बत है मुझे' ,
तुमने शरमाते हुए मुझको जवाब इसका दिया।
आह , लेकिन दिले-नाशाद ये गारत हो जाय ,
इस कदर जोर से धड़का कि मैं कुछ सुन न सका। -अख्तर 91
दिले नाशाद - अभागा दिल , गारत - लूट-मार / ध्वस्त / बरबाद

165	अरमां / अरमान	91

अरमान है वो धूप जो ढलती ही नहीं ,
हसरत वो शै है जो निकलती ही नहीं।
मतलूब तो हर रोज बदल जाते हैं ,
कमबख्त तलब है कि बदलती ही नहीं। -जोश मलीहाबादी 165/91
अरमान - इच्छा , हसरत - इच्छा , शै - चीज ,
तलब - मांगना , मतलूब -इच्छित वस्तु

आ गई है तेरे बीमार के मुँह पर रौनक ,
जान क्या जिस्म से निकली कोई अरमां निकला। -फानी 165

जिद है उन्हें पूरा मेरा अरमाँ न करेंगे ,
मुँह से जो नहीं निकली , अब हाँ न करेंगे। -अकबर इलाहाबादी 165/51
अरमाँ - इच्छा

168	प्यास	91

अभी तो होंठ प्यासे हैं , ये प्यासी रात बाकी ,
सुन लो कुछ देर और अभी कुछ गीत बाकी।
न जब तक गीत पूरे हों ,
अधूरा छोड़ के उन्हें न जाओ तुम। 168

इक हमें गर्दिशे-अय्याम से फुर्सत न मिली ,
वर्ना कब तेरी निगाहों ने इशारा न किया।
खूने-दिल से भी यहाँ प्यास बुझा लेते हैं ,
हमने साकी , तेरे वादों पे गुजारा न किया। -रियाज 168/204
गर्दिशे अय्याम - उलटफेर

292	तिश्नगी / तश्नगी / तशनगी	91

वस्ल उनका खुदा नसीब करे ,
'मीर' , दिल चाहता है क्या क्या कुछ कहें। -मीर 292

राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा ,
और भी गम हैं जमाने में मुहब्बत के सिवा। -फिराक गोरखपुरी 292
वस्ल - मिलन

तुम कहाँ , वस्ल कहां , वस्ल की उम्मीद कहाँ ,
दिल के बहलाने को इक बात , बना रक्खी है। -आगा शायर 292
वस्ल – मिलन

127	अर्ज / मिन्नत / आजीजी	127

इक अर्जे-वफ़ा भी कर न सके ,
कुछ कह न सके , कुछ सुन न सके।
याँ हमने जबाँ ही खोली थी ,
वाँ आँखें झुकी , शरमा भी गये। -मजाज 127/64
अर्जे वफा - वफादारी का जिक्र

मेरी अर्जे तमन्ना में भी आखिर कुछ तो जादू है ,
नहीं भी अब निकलती है तुम्हारे मुँह से हाँ हो कर।
जो न देखा था आज तक हम ने ,
दिल की बातों में आ के देख लिया। -अर्श मलसियानी 217
अर्जे-तमन्ना -ख्वाहिश या आरजू की अभिव्यक्ति

304	गुजारिश	127

जाते हो खुदा हाफिज , हाँ इतनी गुजारिश है ,
जब याद हम आ जाएँ , मिलने की दुआ करना। -जलील 270/195
गुजारिश - विनती

74	बेखुदी / बेचैनी / बेबसी	74

आए थे मुझसे मिलने मगर मैं जब न मिला ,
वो मेरी बेखुदी से मुलाकात कर गये।
मैं उम्र भर 'अदम' न कोई दे सका जबाब ,
वो एक नज़र में इतने सवालात कर गये। -अदम 74
बेखुदी - अपने में लीन , बेखुदी - बेशुद्धी/ आत्मलीनता , अदम - यमलोक

बेखुदी में हम तो तेरा दर समझ कर झुक गये ,
अब खुदा मालुम काबा था के वो बुतखाना था। -तालिब बागपती 74
बेखुदी - बेशुद्धी/ आत्मलीनता , बुतखाना - प्रेयसी का घर ,
काबा - मुसलमानों का धर्म का स्थान

गर जिन्दगी में मिल गए फिर इत्तफाक से ,
पूछेंगे अपना हाल तेरी बेबसी से हम। -साहिर लुधियानवी 74
बेबसी - विवशता

बेचैनियां समेट के सारे जहान की ,
जब कुछ न बन सका तो मेरा दिल बना दिया। -जिगर 74

भोले बन कर हाल न पूछो बहते हैं अश्क तो बहने दो ,
जिससे बढ़े बेचैनी दिल की ऐसी तसल्ली रहने दो। -आर्जू लखनवी 78
अश्क – आंसू

178	बेक़रार / बेताब / बेकसी	74

आप पहलू में जो बैठे हैं तो संभल कर बैठें ,
दिले-बेताब को आदत है मचल जाने की। -जलील मानिकपुरी 178
दिले बेताब - व्यथित हृदय

जान ही दे दी ' जिगर ' ने पा-ए-यार पर ,
उम्र भर की बेकरारी को करार आ ही गया। -जिगर 178
करार - चैन , पा-ए-यार -प्रेयसी के चरण

फिर आ गया क़रार दिल-बेक़रार को ,
फिर एक बार देख लो मुझको इसी तरह। -बेखुद देहलवी 178
करार - चैन

क्या आ गया खयाल दिले-बेकरार में ,
खुद आशियाँ को आग लगा दी बहार में। -जिगर 178/125
आशियाँ - घोंसला / बसेरा

रह-रहके तड़प जाती है सीने में कोई चीज ,
ऐसा न हो , बेताब तुम्हारी ही नज़र हो। -जिगर 178

अब दिल है मुकाम बेकसी का ,
यूँ घर न तबाह हो किसी का। -'दाग' 178
मुकाम - मंजिल , बेकसी - लाचार , तबाह - बरबाद

क्यों भीड़ लगाईं है मुझे देख के बेताब ,
क्या कोई तमाशा है तड़पना मेरे दिल का। -'तसलीम' 178
बेताब - व्याकुल/बेचैन

सुरत दिखा के फिर मुझे बेताब कर दिया ,
एक लुफ्त आ चला था गमे इंतज़ार में। 178/24
लुफ्त - मजा , बेताब - बेचैन

कल जहां से उठा लाये थे अहबाब मुझे ,
ले चला आज वहीं दिल-ए-बेताब मुझे। -जौक 178
अहबाब -मित्र , दिल-ऐ-बेताब - बेकरार दिल

अपने दिल-बेताब से मैं खुद हूं परीशां ,
क्या दूं उन्हें-इल्जाम मैं कुछ सोच रहा हूं। -साकिब कानपुरी 178/121
दिले बेताब - व्यथित हृदय, परीशां -परेशान

खुद अपनी बेकसी की उड़ाई है यूं हंसी ,
आए जो अश्क आंख में हम मुस्करा दिये। -मौज 178
बेकसी - लाचार

मुझे भी नींद आ जाएगी , हम भी सो ही जाएंगे ,
अभी कुछ बेकरारी है , सितारों तुम भी सो जाओ। -क़तील शिफ़ाई 31

यह सोच के घर से निकले थे ,
सब शिकवे उनसे कह देंगें।
जब आँख से आँख मिली ,
लब पर एक लफज का लाना भूल गये। 29
शिकवा - शिकायत , लब - होंठ , लफज/ लफ्ज - शब्द

अब मुझको उनसे कोई शिकायत नहीं रही
इसकी भी उनको मुझसे शिकायत है क्या करूँ। 29

दिल ले के मुफ्त कहते हैं कुछ काम का नहीं ,
उल्टी शिकायतें हुई , एहसान तो गया। -दाग 29

न दोस्तों से शिकायत न दुश्मनों का गिला ,
किसी ने मुझको भुलाया , किसी ने याद किया। -कमर जलालाबादी 29/257

तुम इसे शिकवा समझ किसलिये घबरा गये ,
बाद मुद्दत के जो देखा तो आँसू आ गये। -'अनवर' साबरी 29
शिकवा - शिकायत

कुछ कहूं उनसे मगर ये ख्याल होता है ,
शिकायतों का नतीजा मलाल होता है। -परवीन शाकिर 29
मलाल - दुःख

शिकवा तुं क्यूँ करे हे , मेरे अश्को सुर्ख का ,
तेरी आस्ती कब मेरे लहु से भर गई। 29
अश्क - आंसू, सुर्ख - लाल , आस्ती - बाहें

मैं करूँ शिकवा जो कुछ उनको अगर मोहब्बत हो ‘जफर’ ,
जब मोहब्बत ही नहीं है तो शिकायत क्या हो। 29

आपके होते दुनिया वाले , मेरे दिल पर राज करे ,
आपसे मुझे शिकवा है खुद आपने बेपरवाही की। -कनीज़ शैदाई 29

कह के ये और कुछ कहा न गया ,
कि मुझे आप से शिकायत है। -आरजू लखनवी 29

हर आन एक ताजा शिकायत है आप से ,
अल्लाह , मुझको कितनी मुहब्बत है आप से। -जलालुद्दीन अकबरी 29

बेमहल बात भली भी तो बुरी होती है ,
शुक्र करते हुए डरता हूं , शिकायत कैसी। -दाग 29
बेमहल - अनुचित

'अर्श' पहले ये शिकायत थी , ख़फ़ा होता है वो ,
अब ये शिकवा है कि वो जालिम खफा होता नहीं। -अर्श मलसियानी 29
शिकवा - शिकायत , जालिम - अत्याचारी / क्रूरखफा - नाराज़

76	इंतकाम / इन्तकाम	29

दिल है , लेकिन दिल में कोई गम नहीं ,
ये मुसीबत भी तो आखिर कम नहीं।
ये वफ़ा की सख्त राहें , ये तुम्हारे पाँव नाजुक।
न लो इंतकाम मुझ से , मेरे साथ साथ चल के। -'खुमार' बाराबंकवी 64/76
इंतक़ाम - बदला लेना

121	इल्जाम / दोष	29

बिन माँगे मोती मिलते हैं , माँगे से मिलती भीख नहीं ,
छीन ले आकर दिल को मेरे , तुझ पर यह इल्जाम सजेगा।
दोपहर की गर्मी है और छाँव नीम की ठंडी है ,
बैठे ही जा इस छाँव में , तुझ पर यह आराम सजेगा। -मीना कुमारी 121
इल्जाम - दोष

दिले-आशुफ्ता पे इल्जाम कई याद आए ,
जब तेरा जिक्र छिड़ा नाम कई याद आए।
आज तक मिल न सका अपनी तबाही का सुराग ,
यूँ तेरे नाम-ओ-पैगाम कई याद आए। -आली 121/206

दिले आशुफ्ता - पागल दिल , इल्जाम - आक्षेप ,
तबाह - बरबाद , नामा-ओ-पैगाम - पत्र/ संदेश

दिल पे आए हुए इल्जाम से पहचानते हैं ,
लोग अब मुझको तेरे नाम से पहचानते हैं। -कतील शफाई 121

मुझ पे रखते हैं हश्र में इल्जाम ,
आ न जाए जबां पे नाम तेरा। -फानी 121

हश्र – कयामत

263	फरयाद / फरियाद	29

फ़रियाद कर रही है यह तरसी हुई निगाह ,
देखे हुए किसी को जमाना गुजर गया। -'रजा' लखनवी 263/66

जिन्हे हैं इश्क सादिक , वह कहाँ फ़रियाद करते हैं ,
लबों पर मुहर ख़ामोशी है दिल में याद करते हैं। -शोरिश 263

सादिक - सच , लब - होंठ , मुहर - खामोश / मौन

264	हाकिम	29

हमने सोचा था कि हाकिम से करेंगे फरियाद ,
वह भी कमबख्त तेरा चाहने वाला निकला। 162/264/263

हाकिम - प्रधान या बड़ा अधिकारी , कमबख्त -कम नसीब

21	तस्कीन / संतोष	21

खामोशी से मुसीबत और भी संगीन होती है ,
तड़प ए दिल तड़पने से जरा तस्कीन होती है। -शाद अजीमाबाद 72
तस्कीन - संतोष , संगीन - घोर तथा दंडनीय

78	उम्मीद	21

कहते हैं जीते हैं उम्मीद पे लोग ,
हम को जीने की भी उम्मीद नहीं। -ग़ालिब 78

तेरी उम्मीद , तिरा इन्तज़ार जब से है ,
न शब को दिन से शिकायत , न दिन को शब से है। -फैज अहमद फैज 78
शब - रात

वह सोच के छोड़ दी है मिलने की उम्मीद ,
उसका भी तो ऐसा ही इरादा होगा। -मनमोहन तल्खी 31
हिज्र - बिछोह/ विरह

268	आशा / निराश / आस	21

आस उस दर से छूटती ही नहीं ,
जा के देखा , न जा के देख लिया।
वो मेरे हो के भी मेरे न हुए ,
उन को अपना बना के देख लिया। -फैज अहमद 'फैज' 268
दर - चौखट ; घर की चौखट

रक्खा है किसी की आस रखने ही में क्या ,
रक्खा है किसी के पास रहने ही में क्या। -फिराक गोरखपुरी 268

24	इन्तज़ार / इन्तिज़ार	24

दिल को न सब्र न जी को करार रहता है ,
तुम्हारे आने का नित इंतज़ार रहता है। -जीना बेगम 24

तो फिर न इंतजार में नींद आए उम्र भर ,
आने का वादा कर गए आए जो ख्वाब में। -गालिब 24
ख्वाब - सपना

न कोई वायदा , न कोई यक़ीन न कोई उम्मीद ,
मगर हमें तो तेरा इन्तिज़ार करना था। -फिराक गोरखपुरी 24

अल्ला री बेखुदी कि तेरे पास बैठकर ,
तेरा ही इन्तिज़ार किया है कभी-कभी। -नरेश कुमार 24
बेखुदी - बेसुधी / बेख़बरी

साँसें अटकी रही थी जिनके इंतज़ार में ,
वह धड़कनो पे बर्क गिराकर चले गये।
जो दर्द बर्फ बन के जमे दिल में पड़े रहे ,
वह आँसुओं की राह पिघल कर चले गये। 24
बर्क – बिजली

143	इकरार	24

हया से टूट के , आह काँपती बरसात आई ,
आज इकरार-ए-जुर्म कर ही लें , वह रात आई।
धनुक के रंग लिए बिजलियाँ-सी आँखों में ,
कैसी मासूम उमंगों की यह बारात आई। 143/241
इकरारे-जुर्म - जुर्म का इकरार , धनुक - धनुष्य , हया - लज्जा

इकरार में कहाँ है इन्कार की सी खूबी ,
होता है शौक ग़ालिब उसकी नहीं -नहीं पर। -फानी 143
इकरार - स्वीकृति , शौक - लालसा

इस वादे का मतलब क्या समझूँ ,
इकरार भी है , इनकार भी है।
अबरू पे है बल होंठों पे हँसी ,
इनकार भी है इकरार भी है। -वहशी शाहजहांपुरी 143/208
इकरार - स्वीकृति , अबरू - भौंहें

दूर ही दूर से इकरार हुआ करते हैं ,
कुछ इशारे पस-ए-दीवार हुआ करते हैं। -दाग 143
इकरार - स्वीकृति , पस-ए-दीवार - दीवार के पीछे

कैसी शोखी ओ शबाब कर बैठा मैं तुम्हें इकरार कर बैठा ,
मैं समजता था जिन्दगी तुमको मैं जिन्दगी को खराब कर बैठा। 143
शबाब - जवानी , इकरार – स्वीकृति

197	इजहार / ऐलान करना	24

इजहारे-मोहब्बत पर इस तरह वो शरमाए ,
सब उनकी हया मेरी आँखों में उतर आई। -जज्बी 197
इजहार - ऐलान करना , हया - शर्म

कुछ मुझे जुरअत हुई कुछ उनकी आँखें झुक गई ,
होते-होते यूं ही इजहारे-तमन्ना हो गई। -हफीज होशियारपुरी 197
जुरअत - साहस , इजहारे-तमन्ना - इच्छा बताना

208	इनकार / इन्कार	24

इन्कार कीजे आप , मगर शक्ल आपकी ,
कहती है मैं बनी हूँ तेरे प्यार के लिए। -साग 208

231	इबित्त्दा / इब्तदाए	24

इब्तिदा वो थी कि जीने के लिये मरता था ,
इन्तिहा ये है कि मरने की भी हसरत न रही। -साहिर होशियारपुरी 231/40
इब्तिदा - शुरूआत / आरंभ , इंतिहा - अंत, हसरत - इच्छा

इब्तिदा वो थी कि था जीना मुहाल ,
इन्तिहा ये है कि अब मरना भी मुश्किल हो गया। - जिगर मुरादाबादी 231
इब्तिदा - शुरूआत / आरंभ , मुहाल - असंभव , इन्तिहा - अंत

261	इन्तहा / इन्तिहा	24

आग थे इब्तदाए-इश्क में हम ,
अब जो हैं खाक इन्तहा हैं यह। -मीर तकी मीर 231
इब्तदाए -इश्क या प्रेम की शुरुआत , खाक - राख/ धूल
तेरी खबर नहीं मगर इतनी तो है खबर ,
तूं इब्तिदा से पहले है , तूं इन्तिहा के बाद। -जिगर मुरादाबादी 137
इब्तिदा - शुरूआत / आरंभ , इन्तिहा - अंत

वो उम्मीद क्या जिसकी हो इन्तिहा ,
वो वादा नहीं जो वफ़ा हो गया। -ख्वाजा अलताफ हुसैन हाली 78

25	जुदाई / जुदा	25

क्या कहिए हाल दिल का जुदाई की रात में ,
गुजरी है कब कहानी कहे से, यह शब है और। -मीर 25
शब - रात

हम कब के मर चुके थे जुदाई में ऐ अजल ,
जीना पड़ा कुछ और तेरे इन्तिज़ार में। -हफीज जौनपुरी 25/24
अजल - मौत

मगर उसने रोका न उसने बुलाया ,
न दामन ही पकड़ा न मुझको बिठाया।
न आवाज ही दी न मुझको बुलाया ,
मैं आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ता ही गया। 25

यहाँ तक उससे जुदा हो गया मैं ,
तुझसे अब मिल के तअज्जुब है कि अर्सा इतना।
आज तक तेरी जुदाई में ये क्योंकर गुजरा। `-हसरत मोहानी 25
तअज्जुब - आश्चर्य, अर्सा -समय

सिया-बख्ती में कब कोई किसी का साथ देता है ,
कि तारीकी में साया भी जुदा होता है इन्सां से। -'नासिर' 25
सिया-बख्ती - समाधी / कबर , तारीकी -अंधेरा , साया - परछाई

जुदाई का आलम कोई उससे पूछे ,
सहर हो गई हो जिसे रोते -रोते। -शोरिश 25

222	दूरी व नजदीकी	25

क्या कीजिए शिकवा दूरी का , मिलना भी गजब हो जाता है ,
जब सामने वो आ जाते हैं , एहसासे-अदब हो जाता है। -क़तील शिफ़ाई 270/29
शिकवा - शिकायत , एहसासे-अदब - शिष्टता का एहसास

कौन जाने मुलाकात फिर हो न हो ,
आज ही क्यों न खोलें फरेबे करम।
दिल की दूरी तो है खेल तकदीर का ,
फासिले क्या नजर के भी होंगे न कम। 270
फरेब - धोखा , फासिले –दूरी

46	गुस्सा / खौफ	46

उनको आता है प्यार पर गुस्सा ,
मुझ को गुस्से पे प्यार आता है। -'जिगर' मुरादाबादी 256

ऐ हुस्न हमको हिज्र की रातों का खौफ क्या ,
तेरा खयाल जागेगा , सोया करेंगे हम। -जज्बी 31
हिज्र - विरह , खौफ - डर

मुश्किल था कुछ तो इश्क की बाजी को जीतना ,
कुछ जीतने के खौफ से हारे चले गए। -शकील 5
खौफ - डर

112	खफा / नाराज	46

तुम भी खफा हो हम भी खफा हैं ,
लेकिन ये नजरें क्यों मिल रही हैं? -उम्मतुलरुफ़ नसरी 112
खफा - नाराज़
एतबारे-इश्क की खाना-खराबी देखना ,
गैर ने की आह , लेकिन वो खफा मुझ पर हुआ। -ग़ालिब 112
एतबारे इश्क - प्रेम का विश्वास , खाना खराबी -संपूर्ण नष्ट ,
गैर -अन्य / दूसरा , आह - अफसोस , खफा - नाराज़

225	मिजाज	46

कुछ इस अदा से यार ने पूछा मेरा मिजाज ,
कहना पड़ा कि शुक्र है परवरदिगार का। -जलील मानिकपुरी 105
मिजाज - स्वभाव , परवरदिगार - भगवान

दिल दे तो इस मिजाज का , परवरदिगार दे ,
जो रंज की घड़ी भी ख़ुशी में गुजार दे। -दाग 9
मिजाज - स्वभाव , परवरदिगार - भगवान , रंज - गम

तुमने आकर मिजाज पूछ लिया ,
अब तबीयत कहाँ संभलती है। -जलील मानकपुरी 146

245	गाली	46

तेरी तस्वीर में यह बात तुझसे भी निराली है ,
कि जितना जी चाहे चिम्टा लो , न झिड़की न गाली है। -शकील 17
झिड़की - डांट

सभों को बोसे दिये हँस के और हमें गाली ,
हजार शुक्र भला इस कदर तो प्यार हुआ। -नजीर 22

89	मुसीबत	89

अश्क आँख से , दिल हाथ से , जी तन से चला जाए ,
ए वाए मुसीबत , कोई किस किसको सँभाले। -मीर 'मदद उल्लाह 89
अश्क - आंसू , ए वाए - व्याख्या करना

रोने वाले यूँ मुसीबत पे न रो ,
जिन्दगी इक दर्दे-सर हो जाएगी।
जिक्र अपना जा-ब-जा अच्छा नहीं ,
सारी कहानी बेअसर हो जाएगी। -वज्द 89
दर्दे-सर - पीड़ादायक , जिक्र - चर्चा , जा-ब-जा - इधर उधर

हम बैठे अगर दिल में समा के बैठे ,
उठे भी अगर आग लगा के उठे।
इक हम हैं कि झेलते मुसीबत बैठे ,
और तुम हो कि ढा रहे हो आफत बैठे। -फिराक गोरखपुरी 89

समझ सके हैं वही हयात का मकसद ,
मुसीबतों में भी जो मुस्कुराये हैं। -ताहिरा 89/287
हयात - जिन्दगी/ जीवन , मकसद – उद्देश्य

84	जफ़ा	63

पसंद आई जफ़ा ही उनको वर्ना ,
अदायें और भी थी दिलबरी की।
कोई जब रास्ता मिलता न देखा ,
निकल कर आसुँओं ने रहबरी की। -हैरत 84

दिलबरी - प्यार/ प्रेम , रहबरी - पथप्रदर्शक

जफ़ा करना तेरी आदत , वफ़ा करना मेरा शेवा ,
वह तेरा काम है साकी , यह मेरा काम है साकी। -शोरिश 84

जफा - बेवफाई , शेवा - ढंग/ तरीक़ा

जफ़ा जो इश्क में होती है वह जफ़ा ही नहीं ,
सितम न हो तो मुहब्बत में कुछ मजा ही नहीं। -डॉ. इकबाल 84

जफा -बेवफाई , सितम - अत्याचार

जफाओं से अपनी न वो बाज आए ,
वफाओं की हमने भी आदत न बदली। 84

120	आफत	89

परेशानियाँ मेरी उनसे जाकर न कहना ,
सुनेगें तो वो भी परेशान हो जायेंगें। 120

वादा करके और भी आफत में डाला आप ने ,
जिंदगी मुश्किल थी , अब मरना भी मुश्किल हो गया। -जलील मानिकपुरी 120

इक इश्क का गम आफत और उस पे ये दिल आफत ,
या गम न दिया होता या दिल न दिया होता। 120

मुझको तुमसे जो कुछ मुहब्बत है ,
यह मुहब्बत नहीं है , आफ़त है। -दर्द 120

169	मजबूर / मजबूरी	89

दिल की मजबूरी भी क्या शै है कि दर से अपने ,
उसने सौ बार उठाया तो मैं सौ बार आया। -'हसरत' मोहानी 169

शै -आसक्त / फ़िदा

नाशाद किसे कहते हैं और शाद किसे ,
मजबूर किसे कहते हैं आजाद किसे। -फिराक गोरखपुरी 169

इधर से भी है ज्यादा उधर की मजबूरी ,
कि हमने आह तो की , उनसे आह भी न हुई। -जिगर मुरादाबादी 169/86

जिन्दगी है अपने कब्जे में , न अपने बस में मौत ,
आदमी मजबूर है और किस कदर मजबूर है। -उमीद 169

199	कहर	89

मैं उन्हें छेड़ूँ और वे कुछ न कहें ,
चल निकलते जो मय पीये होते।
कहर हो या ख्याल हो जो कुछ भी हो ,
काश ही तुम मेरे अपने लिये होते। -ग़ालिब 36

कहर - दुःख/क्रोध

235	तौबा	89

रात का ख्वाब इलाही तौबा ,
आप सुनियेगा तो शरमाइयेगा। -हजरते सफी 20

ख्वाब - सपना के विचार

आप पछतायें नहीं , जौर से तौबा न करें ,
आपके सर की कसम 'दाग' का हाल अच्छा है। -'दाग' 62

जौर - जबरदस्ती , तौबा - बाधा

मौत आती नहीं करीने की , ये सजा मिल रही है जीने की ,

मय से परहेज , शैख़ तौबा करो , एक यही चीज़ तो है पीने की।

तुम को कहता है आइना खुदाबीं बात सुनते हो उस कमीने की। -तपिश 36

परहेज - अलग रहना , खुदाबीं - खुदा जानने वाला,

करीने - नजदीक , शैख़ - धर्मगुरु

वो कौन हैं जिन्हें तौबा की मिल गयी फुर्सत ,

हमें गुनाह भी करने को जिन्दगी कम है। -आंनद नारायण मुल्ला 69

गुनाह - अपराध

मय पी तो सही तौबा भी हो जाएगी जाहिद ,

कमबख्त क़यामत अभी आई नहीं जाती। -दाग 75

जाहिद - भक्त संयमी

तौबा तो कर चूका था मगर इसका क्या इलाज ,

वाइज की जिद ने फिर मुझे मजबूर कर दिया। -जिगर 234

वाइज - धर्मगुरु

249	बर्बादी / बरबाद / बरबादी	89

दिल को बरबाद कर के बैठा हूँ ,

कुछ खुशी भी है कुछ मलाल भी। -जिगर मुरादाबादी 249

मलाल - दुःख

यों ही बात चलते चलते अफवाह हो गई ,

मुहब्बत मेरी सरे-राह बरबाद हो गई। 249

सरे राह - रास्ते में

ऐ दिल-नादां न तूं कुछ और सोच ,

इश्क में तो जिन्दगी बरबाद हैं। -साजन 94/249

दिले नादां - नासमझ दिल

कोई महमिल-नशीं क्यों शाद या नाशाद होता है ,
गुबारे-कैस खुद उठता है खुद बर्बाद होता है। -असगर गोण्डवी 249
महमिल-नशीं - ऊँट की काठी , शाद - प्रसन्न ,
नाशाद - खिन्न , गुबार कैस - धूल के बादल

इस तरह से मुझे बर्बाद किया है उसने ,
कि गया कुछ भी नहीं और रहा कुछ भी नहीं। -मैकश 249

क्या कहिये किस तरह से जवानी गुजर गई ,
बरबाद करने आई थी , बरबाद कर गई। -दाग 249

वो मेरी बरबादियों पर हँस के यह कहने लगे ,
आपसे किसने कहा था दिल लगाने के लिए। -शहीद देहलवी 249

इक दिल है कि सौ भेस बदलता है 'फिराक' ,
बरबाद किसे कहते है आबाद किसे। -फिराक गोरखपुरी 249

तुझको खबर नहीं मगर इक सादा-लौह को ,
बर्बाद कर दिया तेरे दो दिन के प्यार ने। -साहिर लुधियानवी 249
सादा -लौह को/भले को

इसका रोना नहीं , क्यों तुमने किया दिल बर्बाद ,
इसका गम है कि बहुत देर में बर्बाद किया। -'जोश' मलीहाबादी 249

276	परेशानी / परेशां	89

मैं परीशां था , परीशां नई बात नहीं ,
आज वो भी हैं परीशां खुदा खैर करे। -'उमर' अंसारी 276
परीशां - परेशान

अपनी हालत का खुद अहसास नहीं है मुझको ,
मैंने औरों से सुना है कि परीशान हूँ मैं। -अब्दुल बारी आसी 276

303	तबाही	51

अपनी तबाहियों का मुझे कोई गम नहीं ,
तुमने किसी के साथ मुहब्बत निभा तो दी। -साहिर लुधयानवी 109
तबाहियों - बरबादियाँ

305	हंगामें	89

आह दुनिया दिल समझती है जिसे वो दिल नहीं ,
पहलु-ए-इन्सां में , इक हंगामा-ए-खामोश है। -इकबाल 9
पहलु-ए-इन्सां - आदमी के पास ,
हंगामा-ए-खामोश - चुप रहने वाला शोर

आरजू भी , हसरत भी , दर्द भी , मसरत भी ,
सैकड़ों हैं हंगामें जिंदगी मगर तनहा। -इक़बाल सफ़ीपुरि 33
आरजू - इच्छा/ प्रार्थना , हसरत - इच्छा , मसरत - ख़ुशी / सुख

हंगामा है क्यों बरपा थोड़ी सी जो पी ली है
डाका तो नहीं डाला , चोरी तो नहीं की है। -अकबर इलाहाबादी 51/36
बरपा - किया

119	अंजाम	119

आप तलवार उठायें , मैं झुका दूँ गर्दन ,
पूछते क्या हो कि अन्जामे-मुहब्बत क्या है। -ग़ालिब 119
अन्जामे मोहब्बत - प्रेम का परिणाम

242	इम्तिहां / इम्तिहान	119

सितारों के आगे जहाँ और भी है ,
अभी इश्क के इम्तिहां और भी है। -नदामत 242

कहीं ये अपनी मोहब्बत की इम्तिहां तो नहीं।
बहुत दिनों से तेरी याद भी नहीं आई। -राही 242
इम्तिहां - परीक्षा

तेरे इश्क की इन्तिहा चाहता हूँ ,
मिरी सादगी देख क्या चाहता हूँ। -इकबाल 242

यही है आजमाना तो सताना किसको कहते हैं ,
अदू के हो लिए जब तुम तो मेरा इम्तिहां क्यों हो। -गालिब 242
अदू - शत्रु / दुश्मन , इम्तिहां - परीक्षा

248	फैसला	119

तुम मुझसे फैसला यहीं कर लो तो खूब हो ,
आपस की बात है जाए न परवर-दिगार तक। -शकील 248
परवर-दिगार - भगवान

इलाही , एक दिल है , तूं ही इसका फैसला कर दे ,
वो अपना दिल बताते हैं , हम अपना दिल समझते हैं। -जिगर 248
इलाही - भगवान/ ईश्वर

124	लुफ्त / मजा	124

क्या लुफ्त कि मैं अपना पता आप बताऊँ ,
कीजे कोई भूली हुई ख़ास अपनी अदा याद। -जिगर मुरादाबादी 124/105
लुफ्त - मजा,आनन्द

हुस्न की एकएक अदा पर जाने दिल सदके मगर ,
लुत्फ कुछ दामन बचा कर ही निकल जाने में है। -जिगर मुरादाबादी 124/105
सदके - ईश्वर को अर्पण, लुफ्त - मजा, दामन - आंचल/पल्लू

उसने कुछ लुत्फ़ से पूछा कि 'असर' कैसे हो ,
बेखुदी का हो बुरा कह दिया कुछ याद नहीं। -'असर' लखनवी 124

154	ख़ुशी	124

जो कहोगे तुम , कहेंगे हम भी हां , यूं ही सही ,
आपकी गर यूं ख़ुशी है मेहरबां यूं ही सही। -जौक 154
मेहरबां - कृपालु/ दयालु

159	दिल्लगी	124

कहते हैं आसुंओं से बुझाएंगें हम तुझे ,
यह दिल्लगी भी करते हैं दिल की लगी से हम। -दाग 159
दिल्लगी - हँसी-मज़ाक / मनोविनोद

212	करार	124

अक्सर तेरे बगैर हमें चैन आ गया ,
तूं आए तभी हमको करार आए ऐसा नहीं है। -अख्तर 212

275	हँसी/ हँसना/ हँसाना	124

जब हँसने हँसाने के दिन थे , हम आठ पहर रोते ही रहे ,
अब वक्त जो आया रोने का हम अश्क बहाना भूल गये। 275
अश्क - आंसू

आगे आती थी हाले -दिल पे हँसी ,
अब किसी बात पर नहीं आती। -ग़ालिब 275

हँसी थमी है इन आँखों में यूँ नमी की तरह ,
चमक उठे हैं अँधेरे भी रौशनी की तरह।
तुम्हारा नाम है या कोई चीज़ होंठों पर ,
महक गई मेरी गुमगश्ता जिन्दगी की तरह। -मीना कुमारी 275
गुमगश्ता - खोयी हुई

कही जो बात मतलब की तो वो कहने लगे हँसकर ,
कि सब कुछ और मुमकिन है पर ऐसा हो नहीं सकता। -रश्क 275
मुमकिन - संभव

दिल-जलों से दिल्लगी अच्छी नहीं ,
रोने वालों से हँसी अच्छी नहीं। -रियाज 275/296

जमाना हँस रहा है और मैं रो भी नहीं रहा ,
यह हालत , किस कदर मजबूरियों की जिन्दगानी है। -सहर रामपुरी 275/169

अपनी ख़ुशी में मेरे भी गम को निबाह लो ,
इतना हंसो कि आंख से आंसू निकल पड़ें। -अज्ञात 275

69	गुनाह / गुनहगार	69

दिल में किसी के राह किये जा रहा हूँ मैं ,
कितना हँसी गुनाह किये जा रहा हूँ मैं। 69
राह - रास्ता , गुनाह - अपराध

रोते रहे थे रात भर जो उनकी याद में ,
वह आँसुओं पे रंग चढ़ाकर चले गये।
वह कौनसा गुनाह हमसे हो गया 'कबीर' ,
जो खाके-दिल अबीर उड़ाकर चले गये। -कबीर 69
खाके-दिल - दिल की राख, अबीर - गुलाल

हाँ आपको देखा था मोहब्बत से हमीं ने ,
जी, सारे जमाने के गुनहगार हमीं है । -अहसान दानिश 69

अब तक खबर न थी कि मोहब्बत गुनाह है ,
अब जान कर गुनाह किये जा रहा हूँ मैं। 69

उन के कहने से गुनहगार हुए बैठे हैं ,
उन की खातिर ही सजावार हुए बैठे हैं।
एक कारण है महज अपनी मुस्कराहट का ,
उन की नजरों में गिरफ्तार हुए बैठे हैं। -शेरजंग गर्ग 69
सजावार - दंड देने योग्य

तुम्हें चाहा , खता दिल की , वफ़ा क्यों की , सजा दिल की ,
गुनहगारे-मोहब्बत हूँ न खुलवाओ जबां मेरी। -असर लखनवी 69
खता - भूल

उनकी जबान चलती है तलवार की तरह ,
और हम अदब से चुप हैं , गुनहगार की तरह। -हुक्म मदरासी 69

क्या क्या न किया खुदा ने जन्नत में जतन ,
आदम ने मगर गुनाह करके छोड़ा -जोश मलीहाबादी 69
आदम -मनुष्य / व्यक्ति

गुनाह गिन के मैं क्यों अपने दिल को छोटा करूं ,
सुना है तेरे करम का कोई हिसाब नहीं। -यास यगाना चंगेजी 69
करम - मेहरबानी

इक फुर्सते-गुनाह मिली वो भी चार दिन ,
देखे हैं हमने हौसले परवरदिगार के। -फैज अहमद फैज 69
फुर्सते-गुनाह - अपराध से फुरसत

80	खता/ कसूर/ गलती/ खताएं	69

इसी का नाम हो शायद मुहब्बत ,
खता उनकी है, हम शरमा रहे हैं। -सोहन लाल साहिर 80/109
खता - भूल

न आते , हमें इस में तकरार क्या थी ,
मगर वादा करते हुए आर क्या थी।
तुम्हारे प्यामी ने सब राज खोला ,
खता इस में बंदे की सरकार क्या थी। -इकबाल डाकटर शैख़ 80
तकरार - लड़ाई , प्यामी - संदेशा , खता - भूल ,
आर - दिक्कत

मुझे दिल की खता पर 'यास' शरमाना नहीं आता ,
पराया जुर्म अपने नाम लिखवाना नहीं आता।
सरापा ऱाज हूँ , मैं क्या बताऊँ , कौन हूँ क्या हूँ ,
समझता हूँ मगर दुनिया को समझाना नहीं आता। -यास यगाना चंगेजी 80/117
खता - भूल , सरापा - नख-शिख सहित, संपूर्ण

मेरी भी खता भुला सको तो जानूँ ,
ओ अपनी खतायें भूल जाने वाले? -मनमोहन तल्ख 80
खता – गलती

सजाएं तो हर हाल में लाजिम थीं ,
खताएं न करके परेशानियां है। -आजाद अंसारी 80
लाजिम -आवश्यक और उचित , खताएं - भूलें

अगर इक ले लिया बोसा खता इसको नहीं कहते ,
मुहब्बत करते हैं तर्के-हया इसको नहीं कहते। -तस्वीर 80/22
बोसा - चुंबन , खता - भूल , तर्के-हया - शर्म को त्यागना

सिर्फ इतनी -सी खता पर हमें दुश्मन जाना ,
सर को क़दमों पे झुकाया तो बुरा मान गये। -हसरत मोहानी 80
खता - भूल

थी खता उनकी मगर जब आ गये वो सामने ,
झुक गई मेरी ही आँखें रस्मे उल्फत देखिये। -ग़ालिब 80

खुदा ने गलतियाँ बना के बड़ी गलती की ,
आदमी ने मुस्करा के बड़ी गलती की।
मेरी गलती की अब हकीकत सिर्फ इतनी है ,
कि इस जहाँ में आकर मैंने बड़ी गलती की। 265

175	कातिल	162

आज फिर हमसे खफा है जिन्दगी ,
फिर किसी कातिल को हम याद आ गए। -ललित शबाब 175

जिंदगी आ तुझे कातिल के हवाले कर दूं ,
मुझ से अब खूने-तमन्ना नहीं देखी जाती। -शकील बदायूनी 175/33
मेरा कातिल ही मेरा मुंसिफ है ,
क्या मेरे हक में फैसला देगा। -सुदर्शन फ़ाकिर 175
कातिल -कत्ल करने वाले, फैसला - निर्णय
मुंसिफ - न्याय करने वाला

मुकर जाने का कातिल ने निराला ढंग निकाला है ,
हर इक से पूछता है , इसको किसने मार डाला है। -सोज मीर मोहम्मद 175
मुकर - मना करना

189	जालिम	162

फूल जो कब्र पर चढ़ा दिये , एहसान क्या किया,
जालिम हमने तो तेरी याद में मरकर दिखा दिया। 189/114

नया बिस्मिल हूँ मैं वाकिफ नहीं रस्मे-शहादत से ,
बता दे तूं ही ऐ जालिम तड़पने की अदा क्या है। -चकबस्त लखनवी 189
बिस्मिल - कत्ल किया हुआ , शहादत - गवाही , रस्मे - रिवाज

मेरे हाले-दिल की किस सूरत से रुसवाई हुई ,
रोक ली जालिम ने होठों पर हँसी आई हुई। -माहिरुल कादिरी 189/251
रुसवाई - बदनाम , जालिम - अत्याचारी / क्रूर

201	काफिर	162

मालूम न था कि ले जायेगी दिल की लगी , उस मंजिल तक ,
मैं इश्क में इतना महव हुआ , काफिर को सजदा कर बैठा। 201
महव - तरबतर , काफिर - पापी , सजदा - नमस्कार

ले तो लूँ सोते में उसके पाँव का बोसा , मगर ,
ऐसी बातों से वो काफ़िर बद्‌गुमां हो जाएगा। -'ग़ालिब' 201/22
बद्‌गुमां - बदमिजाज

तुझे ऐ बज्मे-हस्ती कौन काफिर याद रखेगा ,
मुसाफिर राह की बातों को अक्सर भूल जाते हैं। -अदम 201

कुछ तुम्हारी निगाह काफिर थी ,
कुछ मुझे भी खराब होना था। -मजाज 130
निगाह - नजर , काफिर - पापी

203	सैयाद / शिकारी	162

इसे सैयाद ने कुछ गुल ने कुछ बुलबुल ने कुछ समझा ,
चमन में कितनी मानीखेज थी इक खामोशी मेरी। -जिगर मुरादाबादी 114
सैयाद - शिकारी, चमन - बाग, मानीखेज - अर्थपूर्ण

92	दीवानगी / दीवाना	92

तुम हो कि मुददतों में भी मेरे न हो सके ,
मैं हूँ कि एक बार में दिवाना हो गया। 92

अक्ल के भटके हुओं को राह दिखलाते हुए ,
हमने काटी जिंदगी दीवाना कहलाते हुए। -आंनद नारायण मुल्ला 92

लोग तो दामन सी लेते हैं , जैसे हो जी लेते हैं ,
'आबिद' हम दीवाने हैं , जो बाल बिखेरे फिरते हैं। -आबिद 92
दामन - आंचल/पल्लू

अब इसे दार पै ले जाके सुला दे साकी ,
यूँ बहकना नहीं अच्छा तेरे दीवाने का। -फानी 92
दार - शूली , दीवाने - पागल

कभू रोना कभू हंसना , कभू हैरान हो रहना ,
मुहब्बत क्या भले चंगे को दीवाना बनाती है। -मीर दर्द 92
कभू - कभी

दीवाना कर , दौड़ के कोई लिपट न जाये ,
आँखों में आँखें डाल के देखा न कीजिये। -यगाना चंगेजी 92

साँस भरने को तो जीना नहीं कहते या रब ,
दिल ही दुखता है , न अब आस्तीं तर होती है।
जैसे जागी हुई आँखों में चुभें काँच के ख्वाब ,
रात इस तरह दीवानों की बसर होती है। -मीना कुमारी 92/118
ख्वाब - सपना , स्तीं - बाहें

हर इक सूरत , हर इक तस्वीर , मुबहम होती जाती है ,
इलाही क्या मेरी दीवानगी कम होती जाती है। -आनन्दनारायण मुल्ला 92
मुबहम - अस्पष्ट , इलाही - भगवान/ ईश्वर

कोई नासेह है , कोई दोस्त है , कोई गमख्वार ,
सबने मिलकर मुझे दीवाना बना रक्खा है। -'आसी' उल्दनी 92
नासेह - उपदेशक , गमख्वार -हमदर्द

94	नादानी / नादान / नादां	92

नादां सही , पर इतने भी नादां नहीं हैं हम ,
खुद हमने जान-जान के कितने फरेब खाए।
कहते थे तुमसे छूट के क्योंकर जियेंगे हम ,
जीते हैं तुमसे छूट के तकदीर जो दिखाए। -अंदलीब शादानी 94

नादां - नासमझ / नासमझी , फरेब - धोखा , तकदीर - भाग्य

117	समझ / नासमझ / समझाना	92

न पूछो कि चाहा तुम्हें क्या समझकर ,
वो क्या इश्क होता जो होता समझकर।
उसी ने किया हम को बरबाद ,
दिया जिस को दिल अपना समझकर। 117

मेरी हर बात को उल्टा वो समझ लेते हैं ,
अब की पूछा तो यह कह दूँगा कि हाल अच्छा है। -जलील मानकपुरी 117

गलत फहमियों में जवानी गुजरी ,
कभी वोह न समझे कभी हम न समझे। 117

मुहब्बत की मुहब्बत तक ही जो दुनिया समझते हैं ,
खुदा जाने वो क्या समझे हुए हैं , क्या समझते हैं।
जमाले रंगों बू तक हुस्न की दुनिया समझते हैं ,
जो सिर्फ इतना समझते हैं , व आखिर क्या समझते हैं। 117

जमाले रंगों बू - सौंदर्य

बुरे को हम भला समझे , भले को हम बुरा समझे ,
पड़े पत्थर समझ पर ऐसी, हम समझे तो क्या समझे। -जौक 117

कभी कभी यूँ भी हमने जी को बहलाया है ,
जिन बातों को नहीं समझे औरों को समझाया है। -निदा फाजली 117

गुजरती है जो दिल पर , लब पै वो ला के क्या होगा ,
समझ कर जो न समझे , उसको समझा के क्या होगा। -नूर इन्दौरी 117

लब - होंठ

मैं खाक होके इश्क में बरबाद हो गया ,
दामन तलक पर उसके न पहुंचा किसी तरह।
समझाया तूने हमको सो सो तरह नसिहा ,
लेकिन हमारा दिल न समझा किसी तरह। 117

दामन - आंचल/पल्लू , नसिहा - अच्छी सलाह , ख़ाक -राख

मुझे समझाने आए हैं कि मैं रोने से बाज आऊँ ,
मेरे समझाने वालों की नज़र नम होती जाती है। -आनन्द नारायण मुल्ला 117

बाज - रोकूं

न समझने की ये बातें हैं न समझाने की ,
जिन्दगी उचटी हुई नींद है दीवाने की। -फिराक 117

171	पागल	92

मचलते हुए दिल की धड़कन न सुलझे ,
जो काजरां से छूटे तो आँचल से उलझे।
तंग आ गए दिल की एक-एक जिद से ,
खुदा की पनाह , कैसे पागल से उलझे। -मीना कुमारी 204/171

काजरां - काजल , पनाह - शरण

182	दाग	92

ऐ 'अर्श' असर गम का दिल से न गया हरगिज ,
ये दाग मिटा जितना उतना ही उभर आया। -अर्श मलसियानी 182

अर्श - आकाश

वह चोट जो दिल पर खाई थी उस चोट का अब अहसास कहाँ ,
एक दाग सा बाकी है जिसकी हम याद बनाए बैठे हैं। 182

होगा सुकूँ भी होते होते सो जाऊँगा रोते रोते ,
आखिर दिल है ठहर जाएगा शामो-सहर के होते होते।
वहशतनाक है ख्वाबे-हस्ती चौंक पड़ा हूँ सोते सोते ,
दागे दिल अश्कों से मिटेगा धुलते धुलते , धोते धोते। -ताबिश देहलवी 182
सुकूँ - चैन , शामो सहर - सुबह शाम , वहशतनाक - डरावना ,
ख्वाबे हस्ती - जीवन का सपना

दागे-गम दिल से किसी तरह मिटाया न गया ,
मैंने चाहा भी मगर तुमको भुलाया न गया। -जज्बी 182/128
दागे-गम - गम का दाग

247	बदनामी / बदनाम	92

होंगें बदनाम तो हो लेने दो ,
हमको जी खोल के रो लेने दो। -'अजीज' लखनवी 247

मेरा ही नाम जमाने ने कर दिया बदनाम ,
मैं जिस नाम पर मरता हूं उसका कहीं नाम नहीं। -रस्सा जालंधरी 247

97	तग़ाफ़ुल / दगा	97

हमने माना कि तग़ाफ़ुल न करोगे लेकिन ,
ख़ाक हो जायेंगे हम तुमको खबर होने तक। -'ग़ालिब' 137
तग़ाफ़ुल - उपेक्षा , खाक - राख/ धूल

216	ईमान	97

जाहिद शराब पीने से काफिर हुआ मैं क्यों ,
क्या डेढ़ चुल्लू पानी में ईमान बह गया। -ग़ालिब 36
जाहिद - भक्त संयमी , काफिर - पापी

259	छल	97

जहां पाँव तुम्हारे पड़ चुके , परिचित गलियारे लगते हैं ,
जो साथ तुम्हारा बरस चुके , लोचन अनियारे लगते हैं।
यह तो कोई भी कह देगा , मैं बुरी तरह से छला गया ,
पर मेरी मजबूरी ऐसी , यह छल भी प्यारे लगते हैं। 259
गलियारे - गलियां , लोचन - आँखें , अनियारे - नुकीला

267	धोखा	97

जिंदगी एक हँसी धोखा है ,
हमने सोचा है हमने समझा है।
कौन समझेगा मेरे दर्द को आह ,
रूह का ज़ख्म किसने देखा है। -अख्तर अंसारी 129/267
रूह - आत्मा
किया है मैंने इजहारे-तमन्ना जाने किस-किस से ,
मुझे अकसर तेरी सूरत का धोखा हो ही जाता है।
हमें तो उम्र भर का गम , कि ऐसा क्यों हुआ होगा ,
हमें अब कौन समझाए कि ऐसा हो ही जाता है। -शाज तमकनत 197
इजहारे-तमन्ना - इच्छा बताना

साथ भी छोड़ा तो कब , जब सब बुरे दिन कट गए ,
जिन्दगी तूने यहाँ आकर दिया धोखा मुझे। -नातिक गुलावही 33

हमें जब भी धोखा दिया दोस्तों ने ,
हमें अपने दुश्मन बहुत याद आए
दोस्त भी हैं अजीज दुश्मन भी।
गुल तो गुल खार से मुहब्बत है। 257
अजीज - प्रिय , गुल - फूल , खार -कांटे

तुम्हें कह दिया सितमगर यह कसूर था जबाँ का ,
मुझे तुम माफ़ कर दो , मेरा दिल बुरा नहीं है। 107
सितमगर - सितम ढाहने वाले , कसूर - दोष

सितमगर पूछता है कि दर्द किस जगह होता है ,
अगर एक जगह हो तो बता दें कि यहाँ होता है। 107/4
सितमगर - सितम ढाहने वाले

हसीनों के सितम को मेहरबानी कौन कहता है,
अदावत को , मुहब्बत की निशानी कौन कहता है।
यहाँ हरदम नए जल्वे , यहाँ हरदम नए मंजर ,
ये दुनिया है नई , इस को पुरानी कौन कहता है। -अर्श मलसियानी 107/34
सितम - अत्याचार , अदावत - दुश्मनी , जल्वे -दर्शन , मंजर - नजारा

तुम न सितम करो तो क्यों दिल मेरा बेकरार हो,
मैं नहीं चाहती कि तुम गुनाहगार हो। -शौक किदवई 107/69
सितम - अत्याचार , गुनाहगार - अपराधी

तेरे वायदे पे सितमगर अभी और सब्र करते ,
अगर अपनी जिन्दगी का हमें इतबार होता। -शकील 107/23
सितमगर - सितम ढाहने वाले , इतबार - विश्वास , सब्र -धीरज

सितमगर की निगाहें-नाज भी कितनी सितमगर हैं ,
जो सीधी हो तो नावक है जो टेढ़ी हो तो खंजर है। -महर 107
सितमगर - सितम ढाहने वाले , निगाहें नाज - प्यार की झलक
नावक - तीर

ये भी इक सितम था कि ख़्वाब में मुझे अपनी शक्ल दिखा गये ,
कभी नींद बरसों में आई थी सो वो इस तरह से जगा गये। -हसरत जाफर अली 107

सितम करके सितमगर की नजर नीचे ही रहती है ,
बुराई फिर बुराई है , नदामत आ ही जाती है। -नदामत 107
सितमगर - सितम ढाहने वाले , नदामत - लाज

सितम कर जौर कर जुल्मो -जफ़ा कर ,
पर ऐ जालिम , कभी मुझसे मिला कर। -गौहर 107
सितम - अत्याचार , जौर - अत्याचार ,
जुल्मों-जफा - जुल्म की जफा, जालिम - अत्याचारी / क्रूर

हमारे आगे तेरा जब किसी ने नाम लिया ,
दिले सितमजदा को हमने थाम -थाम लिया। -मीर 107
सितमजदा - सितम करने वाला

किसी के जौर-ओ-सितम का तो इक बहाना था ,
हमारे दिल को बहर-हाल टूट जाना था। -नरेशकुमार शाद107
जौर-ओ-सितम -जुल्म / अत्याचार , बहर-हाल - हर हालत में

253	जुल्म	107

कत्ल करते हो मगर हुकम तड़पने का नहीं ,
जुल्म भी करते हो और कहते हो फरियाद न कर। 253
कत्ल - हत्या , हुकम - आज्ञा

आप ही अपने जुल्मों पर जरा गौर करें ,
अगर हम कहेंगे तो शिकायत होगी। 253

होता है सितम जाबांज पर गैरों पर इनायत होती है ,
इस जुल्म को उनके -क्या कहिये कहिये तो शिकायत होती है। 253
सितम - अत्याचार , इनायत - कृपा , जाबांज - बहादुर

मरीजे -हिज्र को लाज़िम है तेरे जुल्म की याद ,
दवा यही है मगर हमने आजमाई नहीं। -शाद अजीमाबादी 253/44
मरीजे हिज्र - वियोगी , लाजिम -आवश्यक और उचित

214	भरोसा	214

अब उन का क्या भरोसा वो आएँ या न आएँ ,
आ, ऐ गमे मुहब्बत , तुझ को गले लगाएँ। -'जिगर' मुरादाबादी 214
गमे मुहब्बत - प्रेम की पीड़ा

246	बदगुमानी / मिथ्या संदेह	214

उधर वो बदगुमानी है , इधर ये नातवानी है ,
न पूछा जाए है उनसे , न बोला जाए है हमसे। -ग़ालिब 51
बदगुमानी - कुधारणा / शक , नातवानी - कमजोरी

कहीं जवाब है इस हद की बदगुमानी का ,
कि शुक्र भी जो करूँ आप उसे गिला कहिए। -शाद अजीमाबादी 126
बदगुमानी - कुधारणा / शक , गिला - फरियाद , शुक्र - आभार

281	एतिबार / एतबार	214

आपका ऐतबार कौन करे ,
रोज का इन्तिजार कौन करे। -दाग देहलवी 281

अन्य विषय

53	शाम ओ सहर / सुबह शाम	53

सुबह को आए हो भूले शाम के ,
जाओ भी अब तुम रहे किस काम के।
हाथापाई से यही मतलब भी था ,
कोई मुँह चूमे कलाई थाम के। 53

सारी उम्मीद रही जाती है ,
हाय फिर सुबह हुई जाती है। -'बिसमिल'अजीमाबादी 53/78

शामे-फिराक़ अब न पूछ , आई और आ के टल गई ,
दिल था कि फिर बहल गया , जां थी कि फिर संभल गई।
बज़्मे ख्याल में तेरे हुस्न की शम्मा जल गई ,
दर्द का चाँद बुझ गया , हिज्र की रात ढल गई। -फैजअहमद 'फैज' 53
शामे-फिराक - विरह की शाम , बज्मे ख्याल - विचारों की सभा ,
शम्मा - दीया , हिज्र - बिछोह/ विरह

तुम्हारी याद का है फैज वर्ना ,
हमारी सुबह क्या है , शाम क्या है? -रफ़अत सुल्तानी 53
फैज - लाभ

तुम यहाँ से क्या गये हो मिरी दुनिया बदल गई ,
वो लुफ्त नहीं , वो सहर-ओ-शाम नहीं है। -'जलील' मानकपुरी 53
तुम थे तो मिरी शाम में था सुबह का आलम ,
तुम जब से गये शाम झलकती है सहर में। -'फानी' 53

शाम भी थी धुआँ-धुआँ , हुस्न भी था उदास उदास ,
दिल को कई कहानियाँ याद-सी आके रह गईं। -फिराक गोरखपुरी 53

आई न फिर नजर कहीं जाने किधर गई ,
अब तक तो साथ गर्दिशे-शामो-सहर गई।
आ देख मुझ से रूठने वाले तेरे बगैर ,
दिन भी गुजर गया, मेरी शब भी गुजर गई। -बाकी सिद्दीकी 53
गर्दिशे शामो सहर - सुबह से शाम तक परेशानी , शब - रात

तुम न आए तो क्या सहर न हुई ,
हाँ , मगर चैन से बसर न हुई। -नामालूम 53
सहर - सुबह , बसर -जीवन निर्वाह , गुज़ारा

सहर से शाम हुई , शाम को यह रात मिली ,
हर एक रंग समय का बहुत घनेरा है।
खुदा के वास्ते गम को भी तुम न बहलाओ ,
इसे तो रहने दो मेरा , यही तो मेरा है। -मीना कुमारी 65/53

57	रात / दिन	53

शब वही शब है दिन वह दिन है ,
जो तेरी याद में गुजर जाए। -हसरत मोहानी 57
शब - रात

वही रात उन की वही रात मेरी ,
कहीं बढ़ गई है , कहीं घट गई है। -साकिब 57

मालुम थी मुझे तेरी मजबूरियाँ मगर ,
तेरे बग़ैर नींद न आई तमाम रात। -'माइल नकवी' 57

आधी से ज़ियादा शब-ए-गम काट चुका हूँ ,
अब भी अगर आ जाओ तो यह रात बड़ी है। -'साकिन' लखनवी 57
ज़ियादा - ज्यादा , शब ए गम - दुःख भरी रात

इक हूक-सी दिल में उठती है , इक दर्द जिग़र में होता है ,
मैं रात को उठकर रोता हूँ , जब सारा आलम सोता है।
हूक - पीड़ा / दर्द -ज़ियाउद्दीन 'जिया' 57/34

जब से ओझल है तूं , इन आँखों से ,
रात कैसी कि दिन अँधेरा है। -'आर्जू' लखनवी 57

दिन-रात की ये बेचैनी है , ये आठ पहर का रोना है ,
आसार बुरे हैं फुर्कत मैं मालुम नहीं क्या होना है। -अकबर इलाहाबादी 57
फ़ुरकत / फ़ुर्कत - वियोग

चुपके से जाइये न महो-साल की तरह ,
आँचल में नींद बाँध के , ऐ रात आ भी जा।
ये दिन लगा है जान को जंजाल की तरह। -नईम 57/98
महो-साल - महीने और साल/ एक वर्ष के भीतर

फ़रमाइये रात आपकी क्यूँकर गुजरी ,
हर आन क़यामत मेरे दम पर गुजरी
थी बस कि ख़बर जोशे-मरज की मुझे रात ,
बिमारी की रात से भी बदतर गुजरी। -मोमिन खाँ मोमिन 57
जोशे मरज - रोग /बीमारी का आवेग
बदतर - खराब , कयामत - अंत

शबे -फिराक जिक्रे-जवानी में कट गई ,
क्या रात थी कि एक कहानी में कट गई। -अजीज लखनवी 57
शबे फिराक - विरह की रात

इन्सान के हालात हैं किसके बस में ,
उड़ते हुए लम्हात हैं किसके बस में।
इक रात मिली थी इत्तिफाकन वर्ना ,
दुनिया तेरे दिन रात हैं किसके बस में। -जगन्नाथ आजाद 57/102
लम्हात - क्षण/ पल , इत्तिफाकन - अचानक

आँख होंठ की बात समझ लो , दिन से जैसे रात अलग है ,
मुद्दत हो गई अब तो रोए , बरसों से बरसात अलग है। -मीना कुमारी 57

वैसे ही अकेला बेचारा इस एक अकेले दिल को ,
हम फिर कैसे -कैसे बहलाएँ।
कि रात की बात ही सारी है और रात गुजरने वाली है। 57

दिन गुजरता नज़र नहीं आता ,
रात काटे से भी नहीं कटती।
रात और दिन के इस तसलसुल में ,
उम्र बाँटे से भी नहीं बँटती। -मीना कुमारी 57
तसलसुल - बहता हुआ

कटी है रात तो हंगामा गुस्तरी में तेरी ,
सहर करीब है अल्लाह का नाम ले साकी। -इकबाल 57
गुस्तरी - गुस्ताखी

न मैं बात करना जानता ,
कि यूं बात करने में जाएगी रात। -दाग 57

77	वक़्त / समय	77

वक्त हर जख्म को हर गम को मिटा देता है ,
वक्त के साथ ये सदमा भी गुजर जायेगा। 77
सदमा - आधात

पुतलियाँ तक भी तो फिर जाती हैं वक्ते निजा ,
वक्त पड़ता है तो सब आँख चुरा जाते हैं। -अमीर मीनाई 77
वक्ते निजा - मरते समय

उनका जिक्र , उनकी तमन्ना , उनकी याद ,
वक़्त कितना कीमती है इन दिनों। -शकील 77
जिक्र - चर्चा , तमन्ना - इच्छा , वक्त - समय

मेहरबाँ हो के बुला लो मुझे चाहो जिस वक्त ,
मैं गया वक्त नहीं हूँ कि फिर आ भी न सकूँ। -ग़ालिब 77
मेहरबां - कृपालु

गुज़री यह नसीम सरसराहट सुनना ,
ख़ामोश लबों की गुनगुनाहट सुनना।
'अख्तर' न दबे पाँव निकल जाये कहीं ,
मद्धम है बहुत वक़्त की आहट सुनना। -अख्तर अन्सारी 77
नसीम - हवा/ गहरी हवा

वक़्त दो गुजरे हैं मुश्किल , मुझ पै सारी उम्र में ,
एक आप के आने से पहले , एक आप के जाने के बाद। -अदम 77

66	जमाना	77

यादगारें जमाना हैं हम लोग ,
देख लो तुम , फसाना है हम लोग। 66

ज़माने का शिकवा न कर रोनेवाले ,
जमाना नहीं साथ देता किसी का। -'लतीफ़' अनवर गुरुदासपुरी 66
शिकवा - शिकायत

न दो कदम भी जमाना चला हमारे साथ ,
हमीं को साथ में चलना पड़ा जमाने के।
मैं अकेला चला था जानिबे-मंजिल मगर ,
लोग आते गये साथ और कांरवाँ बनता गया। -मजरूह 66/205
जानिबे मंजिल - मंजिल की तरफ , कारवाँ - यात्रियों का समूह/काफिला

तुम्हारी , ग़ैर की , नासेह की , अब तो सब की सुनते हैं ,
किसी की हम नहीं सुनते थे , वो भी एक जमाना था। -शौक किदवाई 66
गैर -अन्य / दूसरा , नासेह - उपदेशक

अब मुझको है क़रार तो सब को करार है ,
दिल क्या ठहर गया कि जमाना ठहर गया। -'सीमाब' अकबराबादी 66

अपना जमाना , आप बनाते हैं अहले -दिल ,
हम वे नहीं , कि जिसको ज़माना बना गया। -जिगर मुरादाबादी 66
अहले दिल - दिलवाले

सुनी एक भी बात तुमने न मेरी ,
सुनी मैंने सारे जमाने की बातें। -अमीर 66

285	मुद्दत	77

हमने पाला मुद्दतों पहलू में, हम कुछ भी नहीं ,
तुमने देखा इक नज़र और दिल तुम्हारा हो गया। -आसी रामनगरी 285
मुद्दत - समय / दीर्घ काल

उसकी बातें मुझ से क्या पूछो हो तुम ,
मुद्दतें गुजरी कि देखा भी निगाह नहीं। -दर्द 285
मुद्दत - समय / दीर्घ काल

286	फुरसत / फुर्सत	77

कभी राहत मिली तो जी लेंगे ,
अभी फुरसत नहीं है जीने की। -अफसर आबरी 286/5

28	खत	28

ले के खत उनका किया जब्त बहुत कुछ लेकिन ,
थरथराते हुए हाथों ने भरम खोल दिया। -जिगर मुरादाबादी 28

वो भी शायद रो पड़े वीरान कागज देखकर ,
मैंने उसको आखरी खत में लिखा कुछ भी नहीं। -नजर 28
वीरान - उजड़ा हुआ / बर्बाद

बरसों से कान में है कलम इस उम्मीद पर ,
लिखे जाएं मुझ से खत तेरे खत के जवाब में। -अज्ञात 28

लिखिये उसे खत में कि सितम उठ नहीं सकता ,
पर जौंक से हाथ में कलम उठ नहीं सकता। -'जौंक' 28

किसी को भेज के ख़त हाय यह कैसा अजाब आया ,
कि हर इक पूछता है नामा-बर आया ? जवाब आया? -'अहसान' मारहरवी 28

अज़ाब - पाप के बदले में मिलनेवाला दुःख / पीड़ा ,
नामा-बर - डाकिया

लिक्खा था अपने हाथ से जो तुमने एक बार ,
अब तक हमारे पास है वो यादगार खत। -'हसरत' मोहानी 28

लिक्खो सलाम गर के खत में गुलाम को ,
बन्दे का बस सलाम है ऐसे सलाम को। -'मोमिन' 28

आदमी पहचान जाते हैं कयाफा देखकर ,
खत का मजमूँ भांप लेते हैं लिफाफा देखकर।
आरजू है वफ़ा करे कोई ,
जीना चाहे तो क्या करे कोई। -ग़ालिब 28/60

कयाफा - हुलिया , मजमूँ - विषय , आरजू - इच्छा/ प्रार्थना

क़ासिद के आते आते खत एक और लिख रखूँ ,
मैं जानता हूँ जो वो लिखेंगे जवाब में। -ग़ालिब 28

कासिद - पत्रवाहक

खत लिखेंगे गर्चे मतलब कुछ न हो ,
हम तो आशिक है तुम्हारे नाम के। -ग़ालिब 28

गर्चे - मगर

मेरा खत उसने पढ़ा , पढ़ के नामा-बर से कहा ,
यही जवाब है इसका कि कुछ जवाब नहीं। -अमीर मीनाई 28

पुर्जे उड़ा के खत के ये एक पुर्जा लिख दिया ,
लो अपने एक के ये सौ खत जबाब में। -बिस्मिल देहलवी 28
पुर्जे - टुकड़ा

मेरा खत पढ़ के बोले नामा-बर से 'जा खुदा-हाफिज ,
जवाब आया मेरी किस्मत से लेकिन लाजवाब आया। -शकील बदायूनी 28
नामा-बर - डाकिया

एक मुद्दत से न कासिद है न खत है न प्याम ,
अपने वादे को तूं कर याद मुझे याद न कर। -जलील 28
मुद्दत - समय / दीर्घ काल , कासिद - संदेशा ले जानेवाला ,
प्याम - पत्र/ संदेश

नामा-बर तूं ही बता तूंने तो देखे होंगे ,
कैसे होते हैं वो खत जिनका जवाब आता है। -कमर बदायूनी 28
नामा-बर - डाकिया

क़यामत है ये कहकर उसने लौटाया है कासिद को ,
कि उनका तो हर एक खत आखिरी पैगाम होता है। -'शेरी' भोपाली 28
कासिद - संदेशा ले जानेवाला / पत्रवाहक

तुम्हारे खत में नया इक सलाम किसका था ,
न था रकीब तो आखिर वो नाम किसका था। -दाग 28/215
सलाम - प्रणाम , रकीब - प्रेमिका का दूसरा प्रेमी / प्रतिद्वंद्वी

तूं देख रहा है जो मेरा हाल है कासिद ,
मुझ को यही कहना है कि मैं कुछ नहीं कहता। -कैफ़ी देहल्वी 28
कासिद - संदेशा ले जानेवाला / पत्रवाहक

106	लफ्ज / हर्फ़ / हरफ	28

इतने बिगड़े हैं वो मुझ से , कि अगर नाम उनके ,
खत भी लिखता हूँ तो , सब हर्फ बिगड़ जाते हैं। 106/28
हर्फ - शब्द

राज-ए-उल्फत अयाँ है , क्या कहिये ,
हर लफ्ज खुद जबां है , क्या कहिये। -शकील बदायुनी 106/81
राज-ए-उल्फत - प्रेम का रहस्य , लफ्ज - शब्द ,
अयाँ - खुला / ज़ाहिर

जख्म तलवार के गहरे भी हों मिट जाते हैं ,
लफ्ज तो दिल में उतर जाते हैं भालों की तरह। -सागर पालनपुरी 106
जख्म - घाव , लफज/लफ्ज - शब्द

मिट चले मेरी उम्मीदों की तरह हर्फ़ मगर ,
आज तक तेरे खतों से तेरी खुशबू न गई। -अख्तर शीरानी 28/106
हर्फ - शब्द

126	सवाल / जवाब	28

कुछ कटी हिम्मते-सवाल में उम्र ,
कुछ उम्मीदे-जवाब में गुजरी। -मजाज लखनवी 126

उलझे उलझे , धागे-धागे से ख्यालों की तरह ,
हो गया हूँ इन दिनों तेरे सवालों की तरह। -खातिर गजनवी 126

जो चीज़ आप चाहें वह हाजिर जनाब है ,
गर माँगिए उधार तो कोरा जवाब है। -कुदरत शाहजहांपुरी 126

जवाब सोच के दिल में वो मुस्कराते हैं ,
अभी जबां पे मेरी सवाल भी तो न था। -बेखुद देहलवी 126

इजहारे-हाले गम पे उनका जवाब आया ,
तड़पा करे हमेशां , दम भर न चैन पाए। -ओम प्रकाश खुशदिल 126
इजहारे हाल - ऐलान/ हालात बयान करना

वो लजाये मेरे सवाल पर कि उठा न सके झुका के सर ,
उड़ी जुल्फें चेहरे पे इस तरह कि शबों के राज मचल गये।
शब -रात , राज - भेद -मजरुह सुल्तानपुरी 126

सवाल उनका , जवाब उनका , सुकूत उनका खिताब उनका ,
हम उनकी अंजुमन में सर न करते खम , तो क्या करते। -मजरूह सुल्तानपुरी 126
सुकूत -खामोशी , खम - बल /टेड़े , अंजुमन - सभा ,
सर - सही , खिताब - पदवी/इनाम

काश उसके रूबरू न करें मुझ को हश्र में ,
कितने मेरे सवाल हैं जिन का नहीं जवाब है। -मीर 35/126
हश्र - कयामत

206	पयाम/ संदेश/ पैगाम/ प्याम	28

यही पैगाम दर्द का कहना गर कोई कूचे यार में गुजरे ,
कौनसी रात आन मिलेयेगा दिन बहुत इन्तजार में गुजरे। 206
पैगाम - पत्र/ संदेश , कूचे -पतली गली

निगाहों की जुबानी हुस्न पर पैगाम आता है ,
न देखो इस तरह से इश्क पर इल्जाम आता है। 206
निगाह - नजर , पैगाम - पत्र/ संदेश , इल्जाम - आरोप

सबा यह उन से हमारा पयाम कह देना ,
गए हो जब से यहाँ सुबहो शाम ही न हुई। -जिगर मुरादाबादी 206
सबा - सुबह/ प्रभात , पयाम - संदेश

इधर दर्दे दिल उठा उधर वो हुए परेशान ,
तुझे पयाम कैसे पहुँचा मुझे कुछ खबर नहीं। 206
पयाम - संदेश

ये आधी रात को उनका पयाम आया है ,
'हम आज आ नहीं सकते , अब इन्तजार न हो'। -रियाज खैराबादी 206

तुम्हारे इश्क में हम नंगो नाम भूल गये ,
जहाँ में काम थे जितने तमाम भूल गये।
गए थे अहम में अपने पर इसको देखते ही ,
जो हमने दिल से कहे थे वे पयाम भूल गये। 206/5
पयाम - संदेश , अहम - घमंड, नंगो नाम - नाम की बदनामी

224	नामा / कासिद / नामाबर	28

सियाही आंख से लेकर ये नामा तुमको लिखता हूं ,
कि तुम नामा को देखो और तुम्हें देखें मेरी आँखें। -अज्ञात 224
नामा - पत्र , सियाही - लिखने की स्याही

कासिद आया है वहां से , तूं जरा थम तो सही ,
बात तो करने दे उस से दिले-बेताब मुझे। -तस्कीन 224
दिले बेताब - व्यथित हृदय

तुझसे तो कुछ कलाम नहीं लेकिन ऐ नदीम ,
मेरा सलाम कहियो अगर नामा-बर मिले। -ग़ालिब 28/215
कलाम -बात / बातें , नदीम - सखा / पास बैठनेवाला

यही कह कर अजल को कर्ज ख्वाहों की तरह टाला ,
कि लेकर आज कासिद यार का पैगाम आएगा। -शाद अजीमाबादी 206
अजल - मौत , कर्ज ख्वाहों -उधार मांगने वाले ,
कासिद - संदेशा ले जानेवाला / पत्रवाहक , पैगाम - पत्र/ संदेश

इक भुला हुआ अफसाना -सा दोहराती है ,
    याद आते हैं वो दिन।
जिन्दगी कैद न थी दर्द की दीवारों में। -मीना कुमारी 55
अफसाना - कहानी

उस नूरे मुजस्सिम के अफसाने को क्या कहिए ,
    शमा भी परवाना , परवाने को क्या कहिए।
आगाज भी तूं जिस का , अंजाम भी तूं जिस का ,
    उस दर्दे मुहब्बत के अफसाने को क्या कहिए। -फानी 55
नूर - ज्योति , मुजस्सिम - मूर्तिमंत , शमा - दीपक , परवाना - पतंगा,
आगाज - आरंभ , अंजाम - परिणाम , अफसाना - कहानी

जिन्दगी कश्मकशे-इश्क के आगाज का नाम ,
    मौत अंजाम इसी दर्द के अफ़साने का। -अर्श मलसियानी 55/40
कश्मकशे इश्क - इश्क में संघर्ष/ खिंचतान ,
आगाज - आरंभ , अंजाम - परिणाम , अफसाना - कहानी

अफ़सानाए-गम ऐसा सुनाये कोई ,
    बेगानों को भी अपना बनाये कोई।
ये क्या कि सुने किस्सा तो सो जायें लोग ,
    सोती हुई दुनिया को जगाये कोई। -राज पिहानवी 55
अफ़सानाए-गम - दुःख की कहानी , बेगाने - पराये

तेरी नज़रों से गिर जाना , तेरे दिल से उतर जाना ,
    ये वो अफसाना है जिससे बहुत अच्छा है मर जाना। -महरूम 55
अफसाना - कहानी

कोई अफसाना छेड़ तनहाई में ,
रात कटती नहीं जुदाई की। -फिराक 55/161
अफसाना - कहानी , तनहाई - अकेलापन

70	लमहें / लम्हें / लम्हा	55

जिन्दगी वो हसीन लम्हा है ,
जो तेरी याद में गुजर जाए। -जफ़र बानो 70/27
लम्हा - क्षण / पल
रेत पर नक्शे बनाये थे , मिटा दें इन को ,
ख्वाब के परदे सुनहरे हैं, हटा दें इन को।
चांद तारों के तले बीते हैं , जो चंद लमहे,
यह खलिश देंगे हमें,आओ भुला दें इन को। -'रमा' 70
ख्वाब - सपना , खलिश - पालना/ चुभता हुआ

73	दास्तां / कहानी	55

छेड़ी जो मैं ने तेरी जवानी की दास्ताँ ,
तारे , शराब , फूल , सुबू मुस्करा दिये। -नज्मा 73
दास्ताँ - कथा / कहानी , सुबू - मटकी

मुहब्बत ने किया बदनाम-ओ-रुसवा इस कदर मुझको ,
कि हर महफ़िल में मेरी दास्तां दुहराई जाती है। 73
- मुहम्मद तकी "कैस" शेखूपुरवी

133	नग्मा / नगमा / नग्मे / नज़्म	55

दिल के शिकस्ता साज से नग्मे उबल पड़े ,
पूछा किसी ने हाल तो आंसू निकल पड़े। -अख्तर अन्सारी 133
शिकस्ता - टूटा

कर्ज की पीते थे मय लेकिन समझते थे कि ,
हां रंग लायगी हमारी फाका मस्ती एक दिन। -गालिब 36
मय - शराब , फाका - कंगाल

कौन कहता है कि मय खुद उठा के पी ली है ,
मुझ को जैसी दी गई वैसी ले के पी ली है।
दोस्त दुश्मन कुछ कहे चाहे जो इल्जाम दे ,
मैंने तंग आकर सहर अब जबान सी ली है। 36
सहर - सुबह , इल्जाम - आरोप

मैं उस साकिये ए 'आजाद' सदक़े जिसकी महफ़िल में ,
सरूर आ भी चुका , आई नहीं लेकिन शराब अब तक। -आजाद 36/56
साकिया - साकी , सदके - ईश्वर के नाम पर दी गई वस्तु / उतारा ,
महफ़िल - सभा , सरूर - आनंद

सहर के वक़्त मय पीने से मुझको रोक मत नासेह ,
कि सिजदे के लिए दिल में जरा सा सिद्दक लाना है। -अदम 301
सहर - सुबह , नासेह - उपदेशक , सिद्दक - .
सिजदे - घुटने टेककर और सिर झुकाकर किया जानेवाला प्रणाम

शुक्रिया ऐ गर्दिशे-जामे-शराब ,
मैं भरी महफ़िल में तनहा हो गया। -सलाम मछ्ली शहरी 36/56
जामे शराब - शराब की प्याली , तन्हा - अकेलापन , गर्दिशे - चक्र

दो जितनी हयात हमें जिए जायेंगे ,
जो देंगे उसे खर्च किए जायेंगे।
मय भी है उन्ही की जिनके बस में दिल है ,
जब तक वो पिलायेंगें पिए जायेंगे। -'शाद' अजीमाबादी 36
मय - शराब , हयात - जिंदगी

मय भी है , मीना भी है , सागर भी है , साकी नहीं ,
जी में आता है , लगा दें आग मैखाने को हम। -नजीर अकबराबादी 36/37

मय - शराब

पीला दे ओक से साकी जो हमसे नफरत है ,
पियाला गर नहीं देता , न दे , शराब तो दे। -ग़ालिब 36/39

खुद गिरे पर छलकने दी न मय ,
अपने सर ले लीं बलाएं जाम की। -औज 36

यारो खता मुआफ़ मेरी , मैं नशे में हूँ ,
सागर में मय है , मय में नशा , मैं नशे में हूँ। -'मीर' 36

खता - भूल , मुआफ़ - माफ़

मिरी शराब की क्या कद्र तुझ को ऐ वाइज ,
जिसे मैं पीके दुआ दूँ वो जन्नती हो जाए। -'रियाज' 36/88

वाइज - नसीहत देनेवाला / उपदेश देने वाला
जन्नती - स्वर्ग में रहनेवाला , कद्र - कदर / खूबी

आदत सी है , नशा है न अब कैफ ,
पानी न पिया , शराब पी ली है। -फिराक खैराबादी 36

कैफ - नशा

शुक्रिया ऐ गर्दिशे-जामे-शराब ,
मैं भरी महफ़िल में तनहा हो गया। -सलाम मछ्ली शहरी 36/56

जामे शराब - शराब की प्याली , तन्हा - अकेलापन , गर्दिशे - चक्र

निगाहे-मस्त से उनकी हुआ ये हाल मेरा ,
कि जैसे पी हो किसी ने शराब बरसों में। -दाग 36

पहले शराब जीस्त थी अब जीस्त है शराब ,
कोई पिला रहा है पिये जा रहा हूं मैं। -जिगर 36
जीस्त - जिंदगी

वाइज बड़ा मजा हो अगर यूं अजाब हो ,
दोजख में पांव , हाथ में जामे-शराब हो। -दाग 36/234
वाइज -धर्मगुरु , अजाब - पीड़ा, दोजख - नरक / जहन्नुम

37	मयखाना / मयकदा / बुतखाना / मैखाना / मैकदा	36

पीकर आ जायेंगे थोड़ी देर में ,
मैकदा मस्जिद से कितनी दूर है। 37
मैकदा - मयखाना

यह दमकता हुआ चेहरा , ये नशीली आँखें ,
चाँदनी रात में मयखाना खुला हो जैसे। -जौकी रामपुरी 37
तुझे मयकदे की कसम मेरे साकी ,
पीला दे पीला दे निगाहें मिला के। 37
मयकदा - मयखाना

अब तो जाते हैं मैकदे से 'अमीर' ,
फिर मिलेंगे अगर खुदा चाहे। -'अमीर' 37
मैकदा/मयकदा - मयखाना
जन्नत से कम सही , मगर अच्छा था मयकदा ,
जब तक थे वहां , गमे-फ़र्दा तो कुछ न था। -रियाज खैराबादी 37
जन्नत - स्वर्ग , मयकदा - मयखाना , गमे - गम , फ़र्दा - आने वाला कल

मैं मयकदे की राह से होकर निकल गया ,
वर्ना सफर हयात का काफी तवील था। -अदम 37
मयकदा - मयखाना , हयात - जिन्दगी , तवील - लंबी

छलक गया एक -एक मयकश उस निगाहे-मस्त से ,
तुम उधर देखा किए और लूट गया मयखाना आज। -जिगर 37
मयकश - शराबी

यह सुनके हमने मैखाने में अपना नाम लिखवाया ,
जो मयकश लड़खड़ाया है , वो बाजू थाम लेते हैं। -जोश महिलाबादी 37
मयकश - शराबी

हाथ से किसने सागर पटका , मौसम की बेक़ैफ़ी पर ,
ऐसा बरसा टूट के बादल डूब चला मैखाना भी। -आरजू लखनवी 37/138
बेक़ैफ़ी - बिना आनंद

मस्जिद में बुलाते हैं हमें जाहिद-ए-नाफहा ,
होता कुछ अगर होश तो मैखाने न जाते। -'अमीर' 37/190
जाहिद ए नाफहा - भगत / समाज धर्मोपदेशक

गर हमको मुयस्सर न हो इक जामे-शराब ,
मैखाने में मातम हो कभी ईद न हो। -साकिब कानपुरी 37/38
मुयस्सर - उपलब्ध , मातम - शोक

जब मयकदा छूटा तो फिर जगह की कैद क्या ,
मस्जिद हो, मदरसा हो, कोई खानकाह हो। -ग़ालिब 37
मयकदा - मयखाना , खानकाह - आश्रम

कौन यहाँ छेड़े दर हो हरम के झगडे ,
सिज्दे से हमें मतलब , काबा हो या बुतखाना। -असगर गोण्डवी 37/283
दर हो हरम - हरम का दरवाजा , सिज्दे -प्रार्थना
बुतखाना - प्रेयसी का घर

मर गये फिर भी तअल्लुक़ है जो मैखाने से ,
मेरे हिस्से की छलक जाती है पैमाने से। -रियाज़ 37
तअल्लुक़ -संबध

कैद पीने में नहीं पीकर बहकना जुर्म है ,
मैंने समझा ही नहीं दस्तूर-ए-मैखाना अभी। -मखमूर 37
दस्तूर - रिवाज , मैखाना - शराबखाना

क़यामत तक रहे साकी सलामत तेरा मयखाना ,
पिलाई है कुछ ऐसी , कैफ जिसका कम नहीं होता। -अजीज 37
कयामत - अंत , कैफ - नशा

नींद आ रही है उनको , आंखें झपक रही है ,
लो बन्द हो रहा है मेरा शराबखाना। -शकील बदायुनी 37

एक चुल्लू में बहुत ‘दाग’ बहक उठते थे ,
आज सुनते हैं निकाले गए मयखाने से। -दाग 37

इस मयकदे में 'सौदा' हम तो कभी न बहके ,
सब मस्त-ओ-बेखबर थे हुशियार था सो मैं था। -सौदा 37

आए थे हंसते खेलते मयखाने में 'फिराक' ,
जब पी चुके शराब तो संजीदा हो गए। -फिराक गोरखपुरी 37

पीने वाले एक ही दो हों तो हों ,
मुफ्त सारा मयकदा बदनाम है। -जिगर मुरादाबादी 37

दूर से आए थे साकी सुनके मयखाने का नाम ,
पर तरसते ही चले , अफसोस पैमाने को हम। -नजीर अकबराबादी 38/39

यहां जब पीने पे डटते हैं तो पैमाने नहीं गिनते ,
किसे रहता है इतना होश , दो आए कि चार आए। 38
पैमाने - शराब की प्याली

गिराया जब नजर से आपने तो दिल पे क्या बीती ,
गिरा जब दस्त-ए-साकी से तो पैमाने पे क्या गुजरी। -हसन इमाम वारसी 38
दस्त - हाथ

कभी इन मदभरी आँखों से पिया था यक जाम ,
आज तक होश नहीं , होश नहीं , होश नहीं। -जिगर 38
यक - एक/अकेला

गमे-आशिकी से कह दो रहे-आम तक न पहुँचे ,
मुझे खौफ है ये तुहमत मेरे नाम तक न पहुँचे।
मैं नज़र से पी रहा था कि ये दिल ने बद्दुआ दी ,
तेरा हाथ जिन्दगी भर कभी जाम तक न पहुँचे। -शकील बदायुनी 38
गमे आशिकी - प्रेम की पीड़ा , रहे आम - सामान्य कक्षा ,
खौफ - डर, तुहमत - आरोप

दिल शिकस्ता हुए , टूटा हुआ पैमाना बने ,
हम वहीं हैं जो तुम्हें देख के अनजान बने।
उन की दूरी का भी एहसां है मेरी साँसों पर ,
मुझ से इस तरह वो बिछडे कि निगेहबान बने। -शाज तमकनत 38
शिकस्ता - टूटा , निगेहबान - रक्षक , एहसां -अहसान ,पैमाना - प्याली

वह रफ़्ता-रफ़्ता जाम पिलाते चले गए ,
मैं रफ़्ता -रफ़्ता होश में आता चला गया। -अब्दुल हमीद अदम 38/148
रफ्ता-रफ्ता - धीरे-धीरे

भर भर के जाम बज्म में छलकाए जाते हैं ,
हम उनमें हैं जो दूर से तरसाए जाते हैं। -'रियाज' 38
बज्म - महफिल

ऐ हुस्न ठहर आग भड़क जायेगी ,
सहबा तेरी सागर से छलक जायेगी।
मुझको तो यह डर है कि दुलाई कैसी ,
अँगड़ाई जो ली जिल्द मसक जायेगी। -जोश मलीहाबादी 38/272
सहबा - शराब , दुलाई - हलकी रज़ाई , मसक - फटना ,
जिल्द - काग़ज़ , चमड़े आदि से मढ़ी हुई दफ़्ती/पुस्तक की प्रति

सब लोग ही प्यासे रह जाएँ पैमाने कुछ इस तरह छलक ,
आँखों की कसम दी आँसू को गालों पे हरदम यूँ न ढलक। -मीना कुमारी 38

क्या जाम है ‘फिराक’ मुहब्बत का जाम भी ,
आबे-हयात भी है , अजल का पयाम भी। -फिराक गोरखपुरी 38
आबे-हयात - अमृत जल , अजल - मृत्यु , पयाम - संदेश

खाली है मेरा सागर तो रहे , साकी को इशारा कौन करे ,
खुद्दारिए -सायल भी तो कुछ है, हर बार तकाजा कौन करे।
खुद्दारिए-सायल - स्वाभिमान/आत्मगौरव -आननद नारायण मुल्ला 38/39

मैं खाली जाम रखकर इसलिए आंसू बहाता हूं ,
तुम्हारी बात रह जाये , मेरा पैमाना भर जाये। -अनवर , मिर्जापुरी 38

क्या हमने छलकते हुए पैमाने में देखा ,
ये राज है मयखाने का इफ्शां न करेंगे। -असर लखनवी 38/37
इफ्शां - प्रकट

वो सामने धरी है सुराही भरी हुई ,
दोनों जहान आज हैं मेरे अख्तियार में। -हफीज जालन्धरी 38
अख्तियार - अधिकार

जब भी आता है जाम हाथों में ,
सैकड़ों नाम याद आते हैं। -अदम 38

39	साकी	36

काम साकी से मुझे है , मय से कुछ मतलब नहीं।
तूं पिला दे काश: अपने , हाथ से पानी मुझे। 39
मय - शराब

हम तो जीते हैं कि दुनिया में तेरा नाम रहे ,
कहीं मुमकिन है कि साकी न रहे जाम रहे। -इकबाल 39

शबनम है , अभी रात को धुलने दे जरा ,
आँखों में ख़ुमारे शब को धुलने दे जरा।
साकी ओ मुतरिब आए जाम आए सुबु आए ,
आना था जिनको वो ही न आए तमाम रात। 39
साकी ओ मुतरिब - शराब पिलाने वाली और गायक , सुबु - मिट्टी का घड़ा

साकी की चश्मे-मस्त का दीवाना हो गया ,
कल तक तो दिल था , आज पैमाना हो गया। -डॉ. इकबाल 39/38
चश्मे मस्त - नशे में आँखें, पैमाने - शराब की प्याली

ये दिल की तिशनगी है या नजर की प्यास है साकी ,
हर-इक बोतल , जो खाली है भरी मालुम होती है। -नशूर 39
तिशनगी - इच्छा

जायेगी कहाँ रात बचा के दामन ,
साकी अभी जुल्फ को खुलने दे जरा। -'अख्तर' 39

शबनम - ओस , खुमारे शब - रात का नशा , दामन - आंचल/पल्लू
जुल्फ - बाल

जन्नत का समां दिखा दिया मुझ को ,
कौनेन का गम भुला दिया मुझ को।
कुछ होश नहीं कि हूँ मैं किस आलम में ,
साकी ने ये क्या पिला दिया मुझ को। -अर्श 39/88

कौनेन - परलोक , आलम - संसार

आज पी कर भी वही तिशना-लबी है साकी ,
लुफ्त में तेरे कहीं कोई कमी है साकी। -आले अहमद, सरूर 39

तिशना-लबी - प्यासे होंठ , लुफ्त - मजा

औरों को पिला जाम से बस मुझको तो साकी ,
एक घूंट दे बस उसका कि जो आँखों में खींची है। -फिराक 39

अलग बैठे थे फिर भी आंख साकी की पड़ी हम पर ,
अगर है तिश्नगी कामिल तो पैमाने भी आएंगें। -मजरूह सुल्तानपुरी 39

तिश्नगी - इच्छा , कामिल - पूरी

छलकती है जो तेरे जाम से , उस मय का क्या कहना ,
तेरे शादाब होठों की , मगर कुछ और है साकी। -मजाज 39

शादाब - ताजा /गीले

56	महफ़िल / बज्म	36

तेर महफिल से उठाता गैर मुझको क्या मजाल ,
देखता था मैं कि तूने ही इशारा कर दिया। 56

किसी की महफिल का जिक्र क्या है 'अमीर' ,
खुदा के घर भी न जायेंगे बे बुलाये हुए। 56
महफिल - सभा

चश्मे नम पर मुस्करा कर चल दिये ,
आग पानी में लगा कर चल दिये।
सारी महफिल रह गयी लड़खड़ाती ,
मस्त आँखों से पिलाकर चल दिये। -माहिर उल कादिर 56/191
चश्मे नम - आंसुभरी आंख , महफिल - सभा

जब हमीं न होंगें क्या रंगे महफिल ,
किसे देखकर आप शरमाइयेगा।
मुहब्बत मुहब्बत ही रहती है लेकिन ,
कहाँ तक तबियत को बहलाइयेगा। 56
महफिल - सभा
शायद मुझे निकाल के पछता रहे हो आप ,
महफिल में इस ख्याल से फिर आ गया हूं। 56
महफिल - सभा

उन्हीं के मतलब की कह रहा हूँ , जबान मेरी है , बात उन की,
उन्हीं की महफिल सँवारता हूँ , चिराग मेरा है , रात उन की।
-अकबर इलाहबादी 56

ये दस्तूरे-जबां बन्दी है कैसी तेरी महफ़िल में ,
यहाँ तो बात करने को तरसती है जबाँ मेरी। -इकबाल डाकटर शैख़ 56
दस्तूरे जबां बन्दी - जुबान बंद रखने की प्रथा

मोहब्बत करने वाले कम नहीं हैं ,
मगर तेरी महफिल में हम नहीं हैं। 56

इस सोच में बैठे हैं झुकाए हुए सर हम ,
उठे तेरी महफ़िल से तो जाएँगे किधर हम।
हम ने सोचा, तेरी आँखें तो उठे, लब तो हिलें ,
इसलिए हम तेरी महफ़िल से चले आए हैं। -फना 56
लब - होंठ

अपने अंदेशों की बारात दिखाते किस को ,
तुम ही जब भूल गए , याद भी आते किस को।
उठ गए खुद ही कि देखा तो फ़क़त गैर थे हम ,
आशना थे सभी, महफ़िल से उठाते किस को। -रजा 56
अंदेशा - भय , फ़क़त - बस इतना ही/केवल/सिर्फ़
गैर - अन्य/दूसरा , आशना - परिचित , महफ़िल -सभा

शरीके रंगे महफ़िल सुरखी से खूने तमन्ना है ,
तुम्हारी बज्म की रौनक हमारी दास्ताँ तक है। 56/73
बज्म - सभा , शरीके - भाग लेने वाला , सुरखी - लाल ,
दास्ताँ - कहानी , रौनक - चमक
ऐ दिल की खलिश चल यूँ ही सही ,
चलता तो हूँ उनकी महफ़िल में।
उस वक़्त मुझे चौंका देना ,
जब रंग पे महफ़िल आ जाए। -बहजाद लखनवी 56
खलिश - चुभन

लहद में क्यों न जाऊँ मुँह छुपाये ,
भरी महफ़िल से उठवाया गया हूँ। -'शाद' अजीमाबादी 56
लहद - कबर

हाँ बज़्मे-नशात के तराने तो सुने ,
दुखते हुए दिल की भी कहानी सुन लो। -फिराक गोरखपुरी 56/73
बज़्मे-नशात – खुशी की महफ़िल

वो नजर नीचे किए महफ़िल में चुप बैठे रहे ,
रंग चेहरे पर मेरे , आता रहा , जाता रहा। -दिल देहलवी 56

हुई हमसे ये नादानी तेरी महफ़िल में अय साकी ,
जमीं की ख़ाक होकर आसमाँ से दिल लगा बैठे। -अफसर मेरठी 56
महफिल - सभा , खाक - राख/ धूल

उठकर तो आ गये हैं तेरी बज्म से मगर ,
कुछ दिल ही जानता है कि किस दिल से आए हैं। -फैज अहमद फैज 56/9
बज्म - सभा

यूं चुराई उसने आँखें सादगी तो देखिए ,
बज्म में गोया मेरी जानिब इशारा कर दिया। -फानी बदायुनी 56/271
बज्म - महफिल , गोया - मानलो , जानिब - तरफ

यह न जाना कि उस महफ़िल में दिल रह जायेगा ,
हम यह समझे थे चले आयेंगें दम भर देख कर। -ममनून 56
महफिल - सभा

दिल ले के उसकी बज्म में जाया न जाएगा ,
ये मुद्दई बगल में छुपाया न जाएगा। -दाग 56
मुद्दई - दावेदार

खामोश ऐ दिल , भरी महफ़िल में चिल्लाना नहीं अच्छा ,
अदब पहला करीना है मुहब्बत के क़रीनों में। -इकबाल 56
अदब - शिष्टता , करीना - तरीक़ा

दुनिया की महफ़िलों से उकता गया हूं या रब ,
क्या लुफ्त अंजुमन का जब दिल ही बुझ गया हो। -इकबाल 56
अंजुमन - महफिल

तमन्नाओं में उलझाया गया हूँ ,
खिलौने देके बहलाया गया हूँ।
दिल-मुज़्तर से पूछ ऐ रौनके-बज़्म मैं ,
खुद आया नहीं लाया गया हूँ। -शाद अजीमाबादी 60
दिल-मुज़्तर - परेशान दिल, रौनके बज्म - संसार की चमक

ये उदास उदास चेहरे ये हंसी-हंसी तब्बसुम ,
तेरी अंजुमन में शायद कोई आईना नहीं है। -शकील बदायूनी 114
अंजुमन – महफिल

122	नशा / मदहोश / नश्शा	36

कुछ हकीकत न हो मुहब्बत की ,
नश्शा सा इक जरूर रहता है। -'सागर' निजामी 122
नश्शा - नशा

ये नश्शा भी क्या नश्शा है कहते है जिसे हुस्न ,
जब देखिये इक नींद-सी आँखों में भरी है। -जिगर 122
नश्शा - नशा

नशा पिला कर गिराना तो सब को आता है ,
लेकिन गिरते को उठाना किसको आता है।
मैंने गिरकर उनको संभाला है ,
उन्होंने गिरकर मुझको संभाला है। -अब्दुल हमीद अदम 122

दिल था किसी की याद में मसरूफ और हम ,
नशे में जिन्दगी को उतारे चले गये। -शकील बदायूनी 122
मसरूफ - व्यस्त

या हाथों हाथ लो मुझे मानिन्दे-जामे-मय ,
या थोड़ी दूर साथ चलो मैं नशे में हूं। -मीर 122/38
मानिन्दे-जामे-मय - शराब के प्याले की तरह

148	होश / होशोहवास / जुनून	36

आग तो दिल की बुझा लेने दो फिर कुछ पूछना ,
होश किस को जो बताये क्या रहा , क्या जल गया। -अजीज लखनवी 148

होश जाता नहीं रहा लेकिन ,
जब वो आते हैं तब नहीं आता। -मीर तकी मीर 148

जाना जाना जल्दी क्या है , इन बातों को जाने दो ,
ठहरो-ठहरो , दिल तो ठहरे , मुझको होश तो आने दो। -आगा शायर 148

150	पीना / पीलाना / पी	36

न पीना गुनाह है न पिलाना गुनाह है ,
मगर पीने के बाद होश में आना गुनाह है। 150
नेकी-बदी ज़माने को समझा -बुझाके पी ,
जो पीना चाहता है थोड़ी और मिलाके पी।

ए-दिल , जो चाहता है तूं इतना सरूर हो ,
साकी के पास बैठके नजरें मिलाके पी। -अंजुम 150/39
नेकी बदी - भला बुरा , सरूर - आनंद

पीता हूँ फकत इसीलिये , जल जाये जवानी ,
वल्लाह मैं किसी शौक के मारे नहीं पीता। -अंजुम 150
फकत - बस इतना ही / केवल / सिर्फ़ ,
वल्लाह - ईश्वर की शपथ लेते हुए , शौक - उमंग / लालसा

पीना तो नहीं है खैर पीने का नाम है ,
तर कर के लबों को क्या रहेगा नाकाम।
पैमान-ए -दिल की तह में कुछ तो है तरी ,
किस्मत में कहाँ 'फिराक' छलका हुआ जाम। -फिराक गोरखपुरी 150
लब - होंठ , पैमान ए दिल - दिल का प्याला

यूं तो पीता नहीं , पी लेता हूं , गाहे-गाहे ,
वो भी थोड़ी सी मजा मुँह का बदलने के लिए। -जलाल 150
गाहे-गाहे - कभी कभी

मेरा यही खयाल है गोया मैंने पी नहीं ,
कोई हंसी पिलाए , तो ये शै बुरी नहीं। -रियाज खैराबादी 150
गोया – शायद , शै – चीज

289	बोतल	36

बोतल खुली जो हसरते-ताहिद के वास्ते ,
मारे ख़ुशी के काग भी दो गज उछल गया। -कैसर देहलवी 289
हसरते ताहिद -सिर्फ एक ही इक्छा ,
काग - शराब की बोतल का ढक्कन

यह काली-काली बोतलें जो हैं शराब की ,
रातें हैं इनमें बन्द हमारे शबाब की। -रियाज 289
शबाब - जवानी

18	फूल / गुल	18

इस बाग़ में फूल एक ही था वो भी ,
कुछ ऐसी हवा चली कि पजमुर्दा है। -'शाद' अजीमाबादी 114
पजमुर्दा - उदास / मुरझाया हुआ

अब वो न खुमार है न वो साकी है ,
कैफीयते-इश्क है न मुश्ताकी है।
तोडा था जो फूल मैंने कल सूख गया ,
लेकिन अभी काँटे की खटक बाकी है। -अमजद हैदराबादी 114

कैफीयते-इश्क - प्यार की मस्ती, मुश्ताकी - इच्छुक/ इच्छा

देता नहीं बोस्ताँ भी सहारा मुझको ,
करती नहीं बुलबुल भी इशारा मुझको।
मुर्झाये हुए फूल ने हसरत से कहा ,
अब तोड़के फेंक दो खुदारा मुझको। -जोश 114/91

बोस्ताँ - उद्यान / बाग़ , खुदारा-या खुदा

बसा हुआ है तेरे पैरहन से अपना दिमाग ,
हज़ार फूलों को सूँघा किसी में बू ही नहीं। -शाद अजीमाबादी 114

पैरहन - कमीज

अब चढाने आए हो मरबत पर फूल
पहले मिटटी सैकडों मन डाल दी। 114

मरबत - कब्र

कहते हैं फसले गुल तो चमन से गुजर गई ,
अय इन्दलीब तूं कफस बीच मर गई। 114

फसले गुल - फूलों की मौसम , चमन - बाग ,
कफस - कैद, इन्दलीब - बुलबुल

हाथ में आकर गुल कुछ इस तरह कुम्हलाये हैं ,
हमने जितने धोखे खाये हैं वो सब याद आए हैं। -नदीम 114/267

गुल - फूल

पहले पहल जब तुमको देखा , क्या जाने क्या आ गयी मन में ,
जीवन क्यारी ऐसी महकी , फूल खिले हों जैसे वन में। 51

रंग है लेकिन जिसमें बुए वफ़ा कुछ भी नहीं ,
ऐसे फूलों से घर अपना न सजाना हरगिज़। 114
बुए - सुगंध

सीरत नहीं है जिसमें बहुत सूरत फिजूल है ,
जिस गुल में बू नहीं है , वह कागज का फूल है। -असगर 114
सीरत - स्वभाव , गुल में बू - फूल में खुशबु
फिजूल - बेकार

114	गुलशन / चमन / गुलिस्तां	18

कली कोई जहाँ पर खिल रही हैं ,
वहीं एक फूल भी मुरझा रहा है।
तबियत है कि ठहरी जा रही है ,
जमाना है कि गुजरा जा रहा है। 114

गुलिस्तां रहेंगे तो फूल खिलेंगे ,
जिन्दा रहेंगे तो फिर मिलेंगे। 114

हजारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है ,
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा। -इकबाल डाकटर शैख़ 114
नर्गिस - आँख जैसा एक फूल , बेनूरी - ज्योतिहीन ,
चमन - बाग , दीदावर - परखने वाला

हजार बातें हैं दिलमें अभी बताने को ,
मगर जबाँ नहीं मिलती हमें सुनाने को।
हमारे फूल, हमारा चमन , हमारी बहार ,
हमीं को जा नहीं मिलती है आशियाने को। -सहाब आगा शाइर 114/12
चमन - बाग , आशियाना - घोंसला / बसेरा , जा - जगह

ये चमन यूं ही रहेगा और हजारों जानवर ,
अपनी-अपनी बोलियां सब बोल कर उड़ जाएंगे। -अज्ञात 114

न गुल अपना , न खार अपना , न ज़ालिम बाग़बाँ अपना ,
बनाया आह किस गुलशन में , हमने आशियाँ अपना। -नजीर 114/125
गुल - फूल , खार-कांटे , जालिम - अत्याचारी / क्रूर
गुलशन - बाग , आशियाँ - घोंसला / बसेरा

आग खुद अपने निशेमन को लगा दी मैंने ,
बर्क की जिद से गुलिस्तां को बचाने के लिए। -जौकी रामपुरी 114/123
निशेमन - घौंसला , बर्क - बिजली

एक भी फूल पर हालांकि तेरा नाम नहीं ,
फिर भी यह सच है कि गुलिस्तां है गुलिस्तां। 114

हमें भी याद रखें , जब लिखें त्वारीख गुलशन की ,
कि हमने भी लुटाया है चमन में आशियाँ अपना। -अजीज अंसारी इंदौरवी114/125
गुलशन - बाग , चमन - बाग , आशियाँ - घोंसला / बसेरा

जलाया यार ने ऐसा कि हम वतन से चले ,
बतौर शमअ के रोते इस अंजुमन से चले।

166	कँवल / कमल	18

इन मस्त अँखडियों को कँवल कह रहा हूँ मैं ,
महसूस कर रहा हूँ ग़ज़ल कह गया हूँ मैं। -अब्दुल हमीद अदम 278/10
अँखडियों - आँखें, कँवल - कमल

288	कलियों / कली / गुंचें	18

कितने काँटों की बद्दुआ ली है ,
चन्द कलियों की जिन्दगी के लिए। -शहीद फातिमी 288/59

गुलची ने गजब किया मसल डाला ,
समझा था जिसे कली वो मेरा दिल था। -साकिब कानपुरी 288
गुलची - फूल तोड़ने वाला

खुदाया मुझे जिन्दगी चाहिये , अंधेरों में हूँ , रौशनी चाहिये ,
तमन्ना नहीं सारा गुलशन मिले , के बस प्यार की एक कली चाहिये।
खुदाया - खुदाई/ ईष्वर से संबंधित , गुलशन - बाग -प्रेम धवन 288/114

खिलना कम कम कली ने सीखा है ,
उस की आँखों की नीम-बाजी से। -मीर 288
नीम-बाजी - अधखुला

फूल तो दो दिन बहारे-जां-फजा दिखला गए ,
हसरत उन गुंचों पे है जो बिन खिले मुर्झा गए। -जौक 288
बहारे-जां-फजा - मनोरंजक और सुन्दर वातावरण ,
गुंचों - गुलाब की कली

फूल बनने की ख़ुशी में मुस्कराती थी कली ,
क्या खबर थी ये तगैयुर मौत का पैगाम है। -सिराज लखनवी 288
तगैयुर -परिवर्तन

गुंचों के मुस्कराने पे कहते हैं हंस के फूल ,
अपना करो खयाल हमारी तो कट गई। -शाद अजीमाबादी 288
गुंचों - कलियों

अजब अदा से चमन में बहार आती है ,
कली कली से मुझे बु-ए-यार आती है। 288

जिसमें काँटों पर भी निखार नहीं , वह खिजां हो तो हो बहार नहीं।
इतने धोखे दिये बहारों ने , अब बहारों का एतबार नहीं।
आज तो हाल ए दिल सुनाना था , आज ही दिल पर एतबार नहीं। 47
निखार - सजावट , एतबार - भरोसा/विश्वास

गुलों से ही क्या तुम गुलिस्तां से खेलो ,
जवाँ हो शबाबे बहारों से खेलो। 47/114
गुल - फूल , गुलिस्तां - बाग , जवां - जवान , शबाब - जवानी

लुत्फे -बहार कुछ नहीं , गो है वही बहार ,
दिल क्या उजड गया कि जमाना उजड़ गया। -आर्जू लखनवी 47
लुत्फे बहार - आनन्द , गो - पर

बहारों पे रंगत जो छायी हुई है ,
बदन से तुम्हारे चुराई हुई है। -कलीम राही 47
तेरे बग़ैर बाग़ में फूल न खिल के हँस सके ,
कोई बहार की सी बात अबके बहार में नहीं। -फानी 47
बहार - बसंत

गए हैं हम भी गुलिस्तां में बारहा लेकिन ,
कभी बहार से पहले कभी बहार के बाद। -अदम 47
गुलिस्तां - बाग , बारहा - अनेक बार / प्रायः

छुपना पड़ा गुलों को भी दामने-खार में ,
कुछ ऐसे हादसे भी हुए हैं बहार में। -शकील बदायूनी 3/18
दामने-खार - काँटों का दामन

59	खार / कांटे	47

दुनिया में हूँ दुनिया का तलबदार नहीं हूँ ,
बाजार से गुजरा हूँ खरीरदार नहीं हूँ।
वो गुल हूँ खिजां ने जिसे बरबाद किया ,
उलझूं किसी दामन से जो खार नहीं हूँ। 59
तलबदार - मांगना , गुल - फूल , खिजां - पतझड़ , खार -कांटे

काँटों का भी कुछ हक है आखिर , कौन छुड़ाये दामन अपना ,
चलती -फिरती छाँव है प्यारे किसका सेहरा कैसा गुलशन।
गुलशन - बाग , दामन - आंचल/पल्लू -'जिगर' मुरादाबादी 59

काँटा समझ मुझ से न दामन बचाइए ,
गुजरी हुई बहार की एक यादगार हूँ। -मुशीर झंझानवी 59

फूल चुनना भी अगर जुर्म है इस गुलशन में ,
आप काँटों ही से भर दीजिये दामन मेरा। 59/114
गुलशन - बाग , दामन - आंचल/पल्लू

टूटा है जरूर कोई काँटा दिल में ,
अब देखिए कुछ-न-कुछ खटक रहती है। -अमजद हैदराबादी 59

163	मौसम	47

मेरा वही पुराना गीत , तुम बिन जी नहीं सकता ,
मैं इन होठों को पीकर अब कोई मय पी नहीं सकता।
ये सब कुछ ठीक है फिर इससे जी घबरा भी जाता है ,
अगर मौसम न बदले आदमी उकता भी जाता है। 163
मय - शराब , उकता - थक गया

मुझ पे हावी , अजीब मौसम है ,
न जी रहा हूँ , न मर रहा हूँ। 163

यह मौसम सुहाना , फिजा भीगी-भीगी ,
बड़ा लुत्फ़ आता अगर तुम भी होते। -'शोरिश' कश्मीरी 163
फिजा - वातावरण , लुत्फ़ - मजा

167	खिजां / पतझड़	47

खिजां के बाद कितनी ही बहारें बाग में आयी ,
न आना था न आयी जाके होठों पर हँसी अपनी। 167
खिजां - पतन / बुढ़ापा / पतझड़ / अवनति

रोना मुझे खिजां का नहीं कुछ मगर 'शमीम' ,
इस का गिला है , आई चमन में बहार क्यों। -शमीम मलीहाबादी 167/47
खिजां - पतझड़ , चमन - बाग

दिल का चोर जबाँ पर आकर क्या -क्या रंग बदलता है ,
प्यार की मीठी बातों ने भी काम किया तलवारों का।
अपना आप लुटा कर यूँ हम तेरी राह में बैठे हैं ,
जैसे कोई पतझड़ में भी देखे ख्वाब बहारों का। -जमील 167/47

ऐ बहारों , तुमसे अच्छा तो खिंजा का दौर था ,
चन्द तिनके तो मिले थे , आशियाने के लिये। -शहीद 167/125
खिंजा - पतन / बुढ़ापा / पतझड़, आशियाना - घोंसला / बसेरा

मेरी जिन्दगी पे न मुस्करा , मुझे जिन्दगी का अलम नहीं ,
जिसे तेरे गम से हो वास्ता , वो खिंजा बहार से कम नहीं। -शकील बदायूनी 167
अलम - दुःख/ पीड़ा , खिंजा - पतझड़

176	फिजा	47

यही फिजा थी , यही रुत , यही ज़माना था ,
यहीं से हमने मुहब्बत को इब्तिदा की थी।
धड़कते दिल से , लरज़ती हुई निगाहों से ,
हज़ूरे-गैब में नन्हीं सी इल्तिज़ा की थी। 109

फिजा - वातावरण , इब्तिदा - शुरूआत / आरंभ,
लरज़ती - डगमगाती , हज़ूरे-गैब - उनके पास , इल्तिजा - प्रार्थना

गुलिस्तां का हर फूल दिल बनके महके ,
अगर एक अश्के तमन्ना गिरा दूँ।
'शमीम' आह कर दूँ तो रो दे जमाना ,
फिजा मुस्करा दे अगर मुस्करा दूँ। -सफिया शमीम मलीहाबादी 114

गुलिस्तां - बाग , अश्क - आंसू , फिजा - वातावरण

125	आशियां / घोंसला	125

आशियां को जलाना ना , यह उम्र भर की मेहनत है ,
काश मिल जाय करीब वो मुझे , जिनसे मिलने की हसरत है। 125/91

आशियां - घौंसला , हसरत - इच्छा

फिर रही थी कल जिन आँखों में बहारे-आशियाँ ,
आज उन्हीं आँखों से खाके-आशियाँ देखा किये। -शफीक बानो शफीक 125

बहारे - बहार , आशियाँ - घोंसला , खाके आशियाँ - बर्बाद घोंसला

बनाकर अपने हाथों , आशियाँ बरबाद करते हैं ,
जो तेरा काम था , वो भी हम ऐ सय्याद करते हैं। -जिगर 125

आशियाँ - घोंसला / बसेरा , सय्याद - शिकारी

हमने बना लिया है नया फिर से आशियाँ ,
जाओ यह बात फिर किसी तूफ़ान से कहो। -क़तील 125

आशियाँ - घोंसला / बसेरा

बहाना मिल न जाए बिजलियों को टूट पड़ने का ,
कलेजा कांपता है आशियां को आशियां कहते। -असर लखनवी' 125
आशियां - घौंसला

जल के आशियां अपना ख़ाक हो चुका कब का ,
आज तक ये आलम है रौशनी से डरते हैं। -खुमार बाराहवंकवी 125
आलम - स्थिति

हमने अपने आशियाने के लिए ,
जो चुभे दिल में वही तिनके लिए। -वहीदुद्दीन हैदर 125

कहीं चलती है आंधी और कभी बिजली चमकती है ,
ये हंगामा चमन में सिर्फ मेरे आशियां तक है। 125/114
आशियां - घौंसला
125
कमबख्त दिल जला है तो घर भी जला के देख ,
दुनिया को कुछ पता तो चले , रोशनी हुई।
आई न उनके सामने होठों पे दिल की बात ,
हरचन्द गाह-गाह मुलाकात भी हुई। -एहसान दानिश 290/34
कमबख्त - कम नसीब , हरचन्द - कितना ही / बहुत बार ,
गाह-गाह - कभी-कभी

144	बाम / बामो-ओ-दर	125

बाम पर नंगे न जाओ तुम , शबे महताब में ,
चाँदनी पड़ जायेगी मैला बदन हो जायेगा। 144/49
बाम - छत , शबे महताब - चाँदनी रात

बाम पर जाने लगे वो , सामना होने लगा ,
अब तो इजहार-ए-मुहब्बत बरमला होने लगा। -'हसरत' मोहानी 144/197
बाम - छत , इजहार-ए-मुहब्बत - मुहब्बत का ऐलान, बरमला – खुल्ला

151	घर	125

वो आयें घर में हमारे खुदा की कुदरत है ,
कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं। -'ग़ालिब' 151

बस बस के हज़ारों घर उजड़ जाते हैं ,
गड़ गड़ के अलम लाखों उखड जाते हैं।
आज इसकी है नौबत तो कल उसकी बारी ,
बन बन के यूँही खेल बिगड़ जाते हैं। -हाली 34

अलम - दुःख/ पीड़ा , नौबत - पारी / बारी

283	दर	125

जब यह सुनते हैं कि हमसाया है आप आए हुए ,
क्यों दर-ओ-बाम पे हम फिरते हैं घबराए हुए। -जुरअत 283

हमसाया - पडोसी , दर ओ बाम - दरवाजे और खिड़कियाँ

बैठे हैं तेरे दर पे कुछ करके उठेंगे ,
या वस्ल ही हो जायगा , या मरके उठेंगे। -अज्ञात 283

वस्ल - मिलन

19	अबर / बादल / अब्र	19

ए अबर जरा थम के बरसना ,
वो आ जायें तो फिर जम के बरसना।
पहले न बरसना कि वो आ न सके ,
फिर ऐसा बरसना कि वो जा न सके। 19

अबर - बादल

साजन हमसे मिले भी लेकिन ऐसे कि हाय ,
जैसे सूखे खेत से बादल बिन बरसे उड़ जाय। -जमीलुद्दीन आली 19

अब्र आया है घटा छाई है इलाही वो भी आ जाएं ,
उधर पानी की रिमझिम हो इधर पाजेब छम-छम हो। -आगा हश्र 19
अब्र - बादल

123	बर्क / बिजली	19

शोखी से ठहरती नहीं कातिल की नजर आज ,
ये बर्के -बला देखिये गिरती है किधर आज। -दाग 123
बर्के बला - बला की बिजली

बिजलियाँ टूट पड़ी जब वो मुक़ाबिल से उठा ,
मिल के पलटी थीं निगाहें कि धुवाँ दिल से उठा। -फानी 123
मुकाबिल - मुकाबला / आमने सामने

किधर से बर्क चमकती हैं देखे ऐ वाईज ,
मैं अपना जाम उठाता हूँ, तूं किताब उठा। -जिगर मुरादाबादी 123/234
वाईज - धर्म का उपदेशक

लिपट जाते हैं वो बिजली के डर से ,
इलाही ये घटा दो दिन तो बरसे। -दाग 123
इलाही – अल्लाह

185	आतिश	19

दिल के तअई आतिशे-हिज़ाँ से बचाया न गया ,
घर जला सामने और हमसे बुझाया न गया। -मीर 185
के तअई - खुद , आतिशे-हिज़ाँ - विरह की आग

आतिशे इश्क भी क्या कम थी ,
आ पँहुचे दमकते रुखसार के साथ। 185
आतिशे - विरह की आग , रुखसार - गाल / चेहरा

241	बरसात / घटा	19

न हाथ थाम सके न पकड़ सके दामन ,
बहुत करीब से उठकर चला गया है कोई। -मीना कुमारी 241/57

कई लम्हे बरसात की बूँदें हैं ,
नाकाबिले-गिरफ्त सीने पर आकर लगते हैं।
और हाथ बढ़ा कि इससे पहले ,
फिसल कर टूट जाते हैं। -मीना कुमारी 241
नाकाबिले-गिरफ्त - गिरफ्तारी के काबिल नहीं , लम्हे - क्षण

जो जान है मौसम की क्या जाने कहां है वो ,
पानी तो बरसता है बरसात नहीं होती। -फिराक गोरखपुरी 241

एक बूंद बारिश की , छुपने की गुजारिश थी ,
एक लड़का था , एक लड़की थी।
आगे अल्लाह की मर्जी थी। -मोहम्मद अल्वी 51

हया से टूट के आह काँपती बरसात आई ,
आज इकरार-ए-जुर्म कर ही लें वह रात आई।
धनुक के रंग लिए बिजलियाँ-सी आँखों में ,
कैसी मासूम उमंगों की यह बारात आई। -मीना कुमारी

82	चराग/ दीया/ चिराग/ दीप	82

शबे-विसाल है , गुल करो इन चरागों को।
खुशी की रात में , क्या काम है जलने वालों का। -आनन्द नारायण मुल्ला 82
शबे-विसाल - मिलन की रात , चरागों - दीपक , गुल - बुझाना

देख मैंने भी मनाई है यहां दिवाली ,
मेरी पलकों पे भी अश्कों के दीये जलते हैं। 82/61
अश्क - आंसू

महसूस हो रही है जो सीने में आग सी ,
हाल अपना यह हुआ है फक्त दिल के दाग से।
अब आके ए सहर , हमें यह तजरबा हुआ ,
लगती है घर को आग घर के चिराग से। 82/182
फक्त - सिर्फ़ / मात्र , सहर - सुबह , तजरबा - अनुभव
चिराग - दीपक

पसे-मर्ग मेरे मजार पर जो दीया किसी ने जला दिया ,
उसे आह दामने-वाद ने सरे शाम ही से बुझा दिया। -जफर 82/142
पसे-मर्ग - मौत के बाद , दामने-वाद – बंद पल्लू , सरे शाम - शाम का समय

जो थके थके से थे हौसले, वो शबाब बन के मचल गए ,
जो नजर-नजर से गले मिली तो बुझे चिराग भी जल गए।
न खिंजा में है कोई तीरगी, न बहार में कोई रोशनी ,
ये नजर-नजर के चिराग हैं, कहीं बुझ गए कहीं जल गए। -शायर लखनवी 82
शबाब - जवानी , खिंजा - पतन / बुढ़ापा / पतझड़ , तीरगी - अंधेरा

खुद-बखुद दिल का दाग जलता है ,
बे जलाए चिराग जलता है। -बिस्मिल 82/182
बे जलाए - बिना जलाये

तन्हा है चिराग दूर परवाने हैं ,
अपने थे जो कल आज वो बेगाने हैं। -'शाद' अजीमाबादी 82
चिराग - दीपक , परवाना - पतंगा , बेगाने - पराये
तन्हा - अकेला

दुनिया मेरी निगाह में तारीकी हो गयी ,
तुमने तो एक चिराग जला कर बुझा दिया। -आनन्द नारायण मुल्ला 82
निगाह - नजर , तारीकी - अंधेरा , चिराग - दीपक

यह दीया बुझ गया आज किस मोड़ पर ,
खो गई है अँधेरे में हर रहगुज़र।
कैसे जारी रक्खे कोई अपना सफर आज तूं ही बता ,
मेरे क़दमों तले से निकलती हुई जिन्दगी की डगर। -मीना कुमारी 82
डगर - रास्ता

अँधेरी रात को यह मोजिज़ा दिखायेंगे हम ,
चिराग गर न जला तो अपना दिल जलायेंगे हम। -अहमद नदीम कासमी 82
मोजिजा - चमत्कार , चिराग -दीपक

हमने एक शाम चरागों से सजा रखी है ,
शर्त लोगों ने हवाओं से लगा रखी है। -वली आसी 82
चराग - दीपक

कम होगी जब चिरागे मोहब्बत की रोशनी ,
दिल को जला के और उजाला करेंगे हम। -बेदिल 82

शाम ही से बुझा सा रहता है ,
दिल है गोया चिराग मुफलिस का। -मीर 82/198
मुफलिस - निर्धन

दीया खामोश है लेकिन किसी का दिल तो जलता है ,
चले आओ जहां तक रौशनी मालूम होती है। -नशूर वाहदी 82

इस बज़्म के सब चराग़ कहते थे मुझे ,
सच है कि मैं जीता रहा जलने के लिए -अकबर इलाहाबादी 56
बज्म - महफिल , रूह - आत्मा-जान

108	रोशनी / अंधेरा	82

ये तीरगी तो बहरहाल छट ही जायेगी ,
न रास आयी हमें रोशनी तो क्या होगा? -अहसान बिन दानिश 108
तीरगी/तोरगी - अंधेरा

99	शबनम / ओस	99

पलकों पे आज उनकी यों अश्क झिलमिलाए ,
शबनम की बूँदे जैसे काँटे पे थरथराए। -महेशचंद्र 'नक्श' 99
अश्क - आंसू , शबनम - ओस

शबनम के मोती जब तक चमन में टूटे नहीं थे ,
सूरज के आगे तब तक सितारे झूठे नहीं थे। 99
शबनम - ओस , चमन - बाग

153	शोला	153

मोहब्बत हो ही जाती है , मोहब्बत की नहीं जाती ,
यह शोला खुद भड़क उठता है भड़काया नहीं जाता। -मखनूर देहलवी 153/109

क्या जानिये वो नूर था या साया था ,
शोला सा किसी ने दिल में भड़काया था।
आया किस वक़्त यह तो मालूम नहीं ,
जाते हुए कहता है कि मैं आया था। -अमजद हैदराबादी 153
नूर - रौशनी

272	आग	153

आग दिल में लगी न हो जब तक ,
आँख अश्कों से तर नहीं होती। -आरजू लखनवी 272
अश्क – आंसू

103	दरिया / नदिया	103

इशरते-कतरा है दरिया में फ़ना हो जाना ,
दर्द का हद से गुजरना दवा हो जाना। -ग़ालिब 4
इशरते कतरा - आनंद , दरिया - नदी , फना - मृत्यु

यह इश्क नहीं आसां , इतना समझ लीजे ,
एक आग का दरिया है और डूबके जाना है। 5
दरिया - नदी

अब दिल में वह रहते हैं , अब बस्ती वीरान नहीं ,
दरिया को क्या पार करें , दरिया में तूफ़ान नहीं। 4
वीरान - उजड़ा हुआ / बर्बाद , दरिया - नदी

मिट-मिट के मोहब्बत में तेरी , यूँ तुझको पुकारे जाते हैं ,
कट-कट के दरिया की तह में, जिस तरह किनारे जाते हैं। -नजर 109
दरिया - नदी

अगर दिल किसी पर लुटाया न होता ,
तो अश्कों का दरिया बहाया न होता।
अगर अश्कों का दरिया बहाया न होता ,
तो दिल लुटाने का मज़ा भी क्या होता। 61
अश्क - आंसू , दरिया - नदी

मेरी आंखों में आंसू , तुझ से हमदम क्या कहूं , क्या है ,
ठहर जाए तो अंगारा है , बह जाए तो दरिया है। -फानी बदायूनी 61

110	साहिल / किनारा	103

हम रोने पे आ जाएँ तो दरिया ही बहा दें ,
शबनम की तरह से हमें रोना नहीं आता। 132
दरिया - नदी , शबनम - ओस

मिलना किस काम का अगर दिल न मिले ,
क्या लुफ्त सफर से हो जो मंज़िल न मिले।
वस्ले-दरिया में गर्क होना अच्छा ,
इससे कि करीब आके साहिल न मिले। 110/270
लुफ्त - मजा , वस्ले दरिया - मिलन का दरिया , गर्क - डूबना, साहिल - किनारा

111	मौज / लहर	103

देखते ही देखते मौजों में कश्ती बह गई ,
हाथ फैला कर किनारे फड़फड़ा कर रह गये। -मन्जु सीमा 111
मौजे - लहरें

138	कश्ती / नाव	103

हम तो डुबो कर कश्ती को खुद ही पार लगाएंगे ,
तूंफां से गर बच निकले , साहिल से जा टकराएंगे। -माहिर उल कादरी 138
साहिल - किनारा

147	तूफ़ान	103

जिन्दगी है या कोई तूफ़ान है ,
हम तो इस जीने के हाथों मर चले। -दर्द 147

न जाने कौन सी मंजिल पर आ पहुँचा है प्यार अपना ,
न हम को एतबार अपना , न उनको एतबार अपना। -कतील शिफाई 67
एतबार - भरोसा/विश्वास

282	मंझधार	103

हँसो तो साथ हँसेगी दुनिया , बैठ अकेले रोना होगा ,
चुपके-चुपके बहाकर आँसू , दिल के दुःख को धोना होगा।
बहते-बहते काम न आए लाखों भँवर , तूफ़ानी सागर ,
अब मंझधार में अपने हाथों जीवन -नाव डुबोना होगा। -मीराजी 282
भँवर - लहरों का चक्कर

48	आसमां / आसमान / आस्मां	48

तुम लोग तो बादल हो हवाओं के साथ आए ,
कुछ देर आसमां पर छाये रहे बरसे।
और कहीं दूर निकल गए। -मीना कुमारी 48

खुदा करे आप ऊँचा इतना उठे कि आस्मां झुकता-सा लगे ,
मगर उनको भी न भूलिये जो पड़े हैं आपके पाँवों के तले। 48
आस्मां - आसमान -श्यामसुन्दर हरलालका

पैदा न हो जमीं से नया आसमां कोई ,
दिल कांपता है आपकी रफ़्तार देख कर। -यगाना चंगेजी 48
रफ़्तार - गति

49	चांद / चांदनी	48

बुझ गये गम की हवा से प्यार के जलते चराग ,
बेवफाई चाँद ने की , लग गया उसमें भी दाग। 49/82
चराग - दीपक

अब्र मैं छुप गया है आधा चाँद , चाँदनी छन रही है शाखों से ,
जैसे खिड़की का एक पट खोले। झाँकता हो कोई सलाखों से।
अब्र - बादल , सलाखें - जाली -जाँनिसार अख्तर 49

चाँद तारों को तुम निहारो मत , पिछली यादों को अब पुकारो मत ,
मेरी बाँहों में थोड़ा और रहो , बिखरी जुल्फें अभी संवारों मत।-गोपाल चतुर्वेदी 49
जुल्फें - बालों की लट

चार दिन के हुस्न पर इतना गुरुर ,
चाँदनी होती है कै दिन के लिए। -कवि 49
गुरूर - घमंड

गुनाहों के गुलशन महकते रहेंगे ,
तबाही के बादल बरसते रहेंगे।
चाँद तक जा चुके हैं हमारे कदम ,
फिर भी चाँदनी को तरसते रहेंगे। 49
गुलशन - बाग

58	सितारे / तारे	48

सितारें सिसकियाँ ले रहे हैं ,
किस का दिल दुःखाया जा रहा है. 58

अभी न जाओ तारों का दिल धड़कता है ,
तमाम रात पड़ी है जरा ठहर जाओ। -सैफ 58

मुहब्बत को दुनियां में मशहूर कर दूँ ,
मेरा सादा दिल तुझ को मगरूर कर दूँ।
अगर पास तूं हो तो मैं बेखुदी में ,
सितारों को सिजदे पे मजबूर कर दूँ। -अख्तर शीरानी 58
मशहूर - प्रसिद्ध , मगरूर - घमंड , बेखुदी - बेशुद्धी/ आत्मलीनता ,
सिजदा - सिर झुकाकर प्रणाम

तारा टूटते सब ने देखा , यह नहीं देखा एक ने भी ,
किसी की आँख से आँसू टपका , किसका सहारा टूटा है। -'आर्जू' लखनवी 58
सहारा न देती अगर मौजे-तूफ़ाँ ,
डुबो ही दिया था हमें नाखुदा ने।
सितारों से आगे बहुत कुछ है माना ,
जमीं पे भी जीने के हों कुछ बहाने। -कलीम 58
मौजे तूफ़ाँ - तुफानी लहरें , नाखुदा - नाविक

तमाम रात सितारों ने मुझको समझाया ,
कि फ़िक्र कर कोई दुनिया नई बसाने की। -अनजान 58

सिर्फ जिन्दा रहने को जिंदगी नहीं कहते।
कुछ गमे मोहब्बत हो कुछ गमे जहाँ यारों। -शयार 33

मैंने पूछा जो जिन्दगी क्या है ,
हाथ से गिर के जाम टूट गया। -जगन्नाथ आजाद 33

मुझे कहने दो मैं आज भी जी सकता हूँ
इश्क नाकाम सही जिंदगी नाकाम नहीं। 33
नाकाम - असफल

अस्ल यह जिंदगी है नाम उसका ,
जो गमों में भी मुस्कराई है ।
तुझने अपनी निगाह क्या बदली ,
हमसे बदली हुई खुदाई है । 33
खुदाई - खुदा से संबंधित

ये भी मुमकिन नहीं कि मर जाएं ,
जिन्दगी आह कितनी जालिम है। -अख्तर अनसारी 33
जालिम - अत्याचारी / क्रूर

क्या-क्या बताऊँ तुमको , क्या-क्या छुपाऊँ तुमसे ,
इस जिन्दगी की हालत , सागर से कम नहीं है। -महजबी आरा 'नाज' 33

गरज कि काट दिये जिंदगी के दिन-ए-दोस्त ,
वो तेरी याद में हो या तुझे भुलाने में। -फिराक गोरखपुरी 33

जिन्दगी का रास्ता काटना ही था 'अदम' ,
जाग उठे तो चल दिए, थक गए तो सो लिये -अदम 33

जिंदगी की दूसरी करवट थी मौत ,
जिंदगी करवट बदल कर रह गयी। -फानी बदायूनी 33

दे दे दिल मेरा वापस भीख माँगती हूँ ,
खाली सीना लिए जिंदगी बीमार हो गई। 33/9

कोई हँसता है कोई रोता है , यही दुनिया में रोज होता है ,
एक हँसती हुई परेशानी , हाय क्या जिंदगी हमारी है । 33

जिंदगी से तो खैर शिकवा था ,
मुददतों मौत ने भी तरसाया। -नरेश कुमार शाद 33
शिकवा - शिकायत

बहुत पहले से इन कदमों की आहट जान लेते हैं ,
तुझे , ए जिंदगी , हम दूर से पहचान लेते हैं। -'फिराक' 33

आइये जरा और भी नजदिक जानेमन ,
तुझे करीब पाकर , बहुत खुश है जिंदगी। 33
करीब - समीप/ निकट/नजदीक , जानेमन - दोस्त

तुम नहीं पास, कोई पास नहीं ,
अब मुझे जिंदगी की आस नहीं। -'जिगर' बरेलवी' 33

जिंदगी की कशमकश से मर के पाई कुछ निजात ,
इससे पहले ऐ 'नजर' फुर्सत कभी ऐसी न थी। -नजर लखनवी 33
निजात - छुटकारा / मुक्ति , कशमकश - खिंचा खिंची

वो नादिम हुए क़त्ल करने के बाद ,
मिली जिन्दगी मुझको मरने के बाद। -नूह नारवी 33
नादिम - शर्मिन्दा

बहुत सैर की बागों-जन्नत की हमने ,
मगर कुछ मज़ा जिन्दगी का न देखा।
किसी दिल में दर्द-मोहब्बत न पाया ,
किसी दिल में दाग़े-तमन्ना न देखा। -जोश मिलसियानी 33/51

बागे-जन्नत - स्वर्ग का आनंद , दागे-तमन्ना - तमन्ना का दाग

यही जिन्दगी मुसीबत , यही जिन्दगी मसर्रत ,
यही जिन्दगी हकीकत , यही जिन्दगी फ़साना। -जज्बी 33

मसर्रत - सुख / ख़ुशी

जिन्दगी हर कदम पे बदलेगी , जिन्दगी भर कदम कदम जाना है ,
कोई तो बात याद आई है वर्ना यूँ आँसुओं का थम जाना क्यों । -जफर 33

दिल ने फिर गर्दिशे-दौरां का फ़साना छेड़ा ,
काश इस दौर में मिलना तेरा आसाँ होता।
साँस लेने ही को जीना तो नहीं कहते हैं ,
जिन्दगी थी जो तेरे वस्ल का इमकां होता। -जफर 33

गर्दिशे-दौरां - परेशानियों का दौर , फसाना - कथा/ कहानी ,
वस्ल - मिलन , इमकां - उत्तर

कभी मुझको साथ लेके , कभी मेरे साथ चल के ,
वो बदल गए अचानक , मेरी जिन्दगी बदल के।
हुए जिस पे मेहरबाँ तुम , कोई ख़ुशनसीब होगा ,
मेरी हसरतें तो निकली , मेरे आँसुओं में ढल के। -एहसान दानिश 33/91

मेहरबां - कृपालु/ दयालु , हसरत - इच्छा

जिन्दगी किस तरह कटेगी 'सैफ' ,
रात कटती नजर नहीं आती। -सैफ 33

कुछ हाल मेरा जुबानी सुन लो ,
किस तरह कटी है जिन्दगानी सुन लो। -फिराक गोरखपुरी 33

क्या तुम को बताऊँ उम्रे फ़ानी क्या थी ,
बचपन क्या चीज़ थी जवानी क्या थी।
गुल की महक थी वो हवा का झोंका ,
एक मौजे फ़ना थी जिन्दगानी क्या थी। -खां जगत मोहनलाल 33
फानी - नश्वर, मौजे फ़ना - मौत के मौजे (लहरें) , महक -सुगंध

जितनी बढ़ती है, उतनी घटती है ,
जिन्दगी आप ही आप कटती है। -मीर 33

जिन्दगी आज भी दिलकश है इन्हीं के दम से ,
हुस्न एक ख़्वाब सही , इश्क एक अफ़साना सही। -जिगर 33/51
दिलकश - मनमोहक , ख्वाब - स्वप्न , अफसाना - कहानी

न इन्तज़ार , न आहट , न तमन्ना , न उम्मीद ,
जिन्दगी है कि यूँ बेहिस हुई जाती है।
हाँ, बात कुछ और थी, कुछ और ही बात हो गई ,
और आँख ही आँख में तमाम रात हो गई। -मीना कुमारी 33
बेहिस - चेतना शून्य
जिन्दगी जिन्दा-दिली का है नाम ,
मुर्दा दिल ख़ाक जिया करते हैं। -नासिख़ 33

जिन्दगी बैठी थी अपने हुस्न पर फूली हुई ,
मौत ने आते ही सारा रँग फ़ीका कर दिया। -हरिचन्द्र अख़्तर 33

धूप में निकलो घटाओं में नहा कर देखो ,
जिन्दगी क्या है किताबों को हटा कर देखो। -निदा फाजली 33

मौत क्या , जिन्दगी की एक करवट है ,
जिन्दगी जाविदा है क्या कहिये। -शकील बदायुनी 33
जाविदा - हमेशा

जमाने से लड़ो तो जिन्दगी है ,
न मरने से डरो तो जिन्दगी है।
ग़मों में सबको ही आता है रोना ,
जो हँसके गम सहो तो जिन्दगी है। -प्रेम धवन 33

मुझे जिन्दगी दूर रखती है तुझ से ,
जो तूं पास हो तो उसे दूर कर दूँ। -अख्तर शीरानी 33

उनकी याद , उनकी तमन्ना, उनका गम ,
कट रही है जिन्दगी आराम से। -शकील बदायूनी 33

जिन्दगी इक आसुंओं का जाम था ,
पी गए कुछ और कुछ छलका गए। -शाहिद कबीर 33/38

जिन्दगी जिस शै में हैं ऐ शैख़ उसे क्यों छोड़ दूं ,
जान तो जाएगी मेरी आपका क्या जाएगा। -जोश मिलसियानी 33
शै - चीज
बहारें लुटा दीं, जवानी लुटा दी ,
तुम्हारे लिए जिन्दगानी लुटा दी। -'जलील' मानकपुरी 33

जुस्तजू ही दिलों की मंजिल थी , हम ने खो कर तुझे पाया ,
जिन्दगी नाम है जुदाई का , आप आए तो मुझ को याद आया। -शाद 33/67
जुस्तजू - तलाश खोज

अब भी इक उम्र पे जीने का न अन्दाज आया
जिन्दगी छोड़ दे पीछा मेरा , मैं बाज आया -शाद अजीमाबादी 139/118

देखा है जिन्दगी को कुछ इतने करीब से ,
चेहरे तमाम लगने लगे हैं अजीब से। -साहिर लुधियानवी 142

139	उम्र / उमर	33

गुजरी है जिनकी उम्र , मोहब्बत किये बगर।
वो बदनसीब मर गए , गोया जिए बगर। 139
गोया - मानलो

मुकद्दर में लिक्खा है , कटेगी उम्र मर-मर कर ,
अभी से मर गए हम , देखिये अब उम्र भर क्या हो। -नज्म तबातबाई 139
मुकद्दर - भाग्य

अफसोस हमारी उम्र रोते गुजरी ,
नित दिल से गुबारे गम ही धोते गुजरी।
देखा न कभी ख्वाब में अपना यूसुफ ,
हर चंद तमाम उम्र सोते गुजरी। -मिर्जा मुहम्मद रफ़ी 'सौदा' 139
गुबारे गम - गम की धूल , यूसुफ - देवदूत , हरचंद - कितना ही / बहुत बार

पैंसठ बरस ऐ उम्र , जलाया तूने ,
दुनिया का उलट फेर दिखाया तूने।
जीने से तनफ़्फ़ुर है तो मरने का हिरास ,
किस सख्त शिकंजे में फँसाया तूने। -'शाद' अजीमाबादी 139
तनफ्फुर - घृणा/नफरत , हिरास - भय/त्रास

तूं जन्मदिन से मेरी उम्र गिनाता क्या है ,
इश्को-उल्फत से भला उम्र का नाता क्या है। -विजय अरुण 139
इश्को-उल्फत - प्रेम

हर चन्द कि इक उम्र का आजारी था ,
दुःख दर्द के सहने का नहीं आदि था।
दिल बैठ गया तो यूँ समझ लो कि ये बोझ ,
मजदूर की ताकत से बहुत भारी था। -'शाद' अजीमाबादी 139

हर चन्द - कितना ही / बहुत बार , आजार - बीमार

यह उम्र यूँ ही तमाम हो जायेगी ,
मरने की खबर भी आम हो जायेगी।
रोते ही 'अनीस' क्या जवानी के लिए ,
पीरी की सहर भी शाम हो जायेगी। -अनीस 139

पीरी - वृद्धावस्था बढ़ाया , सहर - सुबह

कुछ खैर से यादे-यार में गुजरी उम्र ,
कुछ मौत के इन्तज़ार में गुजरी उम्र।
आया भी अगर होश तो बैचेन रहे ,
कुछ नश्शे में, कुछ खुमार में गुजरी उम्र। -फानी बदायूनी 139

यादे यार - दोस्त की याद , नश्शे - नशे , खुमार - मद

उम्र भर में दो घड़ियाँ , बीती बहुत कठिन।
एक उनके आने के पहले , एक उनके जाने के बाद। 139

142	जान	33

जाती नहीं जान , न आती है मुझको कल,
कैसी यह चोट है मेरे दिल पर लगी हुई। -मिस जौहर जान 142

कल - आराम

आने में सदा देर लगाते ही रहे तुम ,
जाते रहे हम जान से , आते ही रहे तुम। -रासिख़ अजीमाबादी 142

जिस्म भी उनका , जान भी उनकी ,
हाय , क्या चीज़ हम निसार करें। -अहमद नदीम कासमी 142
जिस्म - शरीर , निसार - मुग्ध/ कुरबान

102	आदमी / इन्सान / आदम / इन्सा	102

इन्सां है वही जो इस दुरंगी से बचे ,
लाजिम है कि दिल और ज़ुँबा एक रहे। -'शाद' अजीमाबादी 102
दुरंगी - उलझन , लाजिम -आवश्यक और उचित

किसको रोता है उम्र भर कोई ,
आदमी जल्द भूल जाता है। -अदम 102
उम्र - आयु

जिन्हें शक हो वो करें और खुदाओं की तलाश ,
हम तो इन्सान को दुनिया का खुदा कहते हैं। -फ़िराक गोरखपुरी 102
शक - संदेह

फ़रिश्ते से बेहतर है, इन्सान बनना ,
मगर इसमें पड़ती है मेहनत ज्यादा। -मौलाना हाली 102

इन्सानियत की बात तो इतनी है शैख़ जी ,
बदकिस्मती से आप भी इन्सान बन गए। -अदम 102/234

बस कि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना ,
आदमी को भी मयस्सर नहीं इन्साँ होना। -ग़ालिब 102
दुश्वार - मुश्किल , मयस्सर - प्रायः/ पाना

जंगल में सांप शहर में बसते हैं आदमी ,
सांपों से बच के आए तो डसते हैं आदमी। -अज्ञात 102

आदमी आदमी से मिलता है दिल मगर कब किसी से मिलता है ,
अजीब बात है कि फूलों का रंग तेरी हँसी से मिलता है। 102

मौत ही इन्सान की दुश्मन नहीं ,
जिन्दगी भी जान लेकर जायेगी। -जोश मल्सियानी 102/33

83	तकदीर	83

हम ख्वाब में वहाँ पहुँचे तदबीर इसे कहते हैं ,
वो नींद से चौंक उठे तकदीर इसे कहते हैं। 83/20
तदबीर - उपाय , तकदीर - भाग्य

वादे की रात नींद ने फुर्सत उन्हें न दी ,
अफसोस जाग कर मेरी तकदीर सो गई। -शफीक जौनपुरी 83
तकदीर - भाग्य

वो अदायत के लिए आए हैं , लो और सही ,
आज ही खूबी-ए -तकदीर से हाल अच्छा है। -दाग 83
अदायत -शत्रुता , खूबी-ए-तकदीर - किस्मत की खूबी
83
सोता रहा होंठों पे तबस्सुम का सवेरा ,
रह-रह के जगाते रहे तकदीरे-सहर हम। -सिराज लखनवी 56
तबस्सुम - मुस्कान / स्मित , तकदीरे-सहर - नसीब की सुबह

155	नसीब / बदनसीब	83

मिलते ही किसी के हो गये हम ,
जागे जो नसीब , सो गये हम। -तपिश लाहौरी 155

जो न बन सके मैं वो बात हूँ जो न खत्म हो मैं वो बात हूँ ,
यह लिखा है मेरे नसीब में यूं ही शम्मा बन के जला करूँ। 155/26

200	तदबीर	83

उल्टी हो गयीं सब तदबीरें कुछ न दवा ने काम किया ,
देखा इस बीमारी-ए-दिल ने आखिर काम तमाम किया। -मीर 200

इक शोख़ की तस्वीर लिये आए हैं ,
मिट जाने की तदबीर लिये आए हैं।
या इक दिल-बेताब लिये आए हैं या ,
फूटी हुई तकदीर लिये आए हैं। -फिराक गोरखपुरी 200/83
शोख़ - नटखट / चंचल , तदबीर - उपाय ,
दिले बेताब - व्यथित हृदय, तकदीर - भाग्य

तदबीर मेरे इश्क की क्या फायदा तबीब ,
अब जान ही के साथ ये आजार जाएगा। -मीर 200
तदबीर - उपाय , आजार - बीमार

202	मुकद्दर	83

टूटना ही अगर मुकद्दर है ,
किस लिए दिल बनाए जाते हैं। -सीमाब सुल्तानपुरी 202
मुकद्दर - भाग्य

दुनिया ये दुखी है फिर भी मगर , थककर ही सही सो जाती है ,
तेरे ही मुकद्दर में ऐ दिल क्यों चैन नहीं आराम नहीं। -जिगर 202
मुकद्दर - नसीब

254	किस्मत	83

किस्मत बुरी सही प तबीयत बुरी नहीं ,
है शुक्र कि जगह की शिकायत मुझे नहीं। 254

हँस-हँसके जवाँ दिल के हम क्यों न चुनें टुकड़े?
हर शख्स की किस्मत में ईनाम नहीं होता। -मीना कुमारी 254

यह न थी हमारी किस्मत की विसाल-ए-यार होता ,
अगर और जीते रहते यही इन्तिजार होता। -'ग़ालिब' 254/24
विसाले-यार - दोस्त से

115	दौलत	115

यह कह कर उसने फेर ली आँखें अदा के साथ ,
तुम लूट न लो दौलते हुस्ने नज़र कहीं। -अखजर बरेलवी 10
दौलत हुस्न - हुस्न की दौलत

हर चीज का खोना भी बड़ी दौलत है ,
बेफिक्री से सोना भी बड़ी दौलत है।
इकलास ने सख्त मौत भी आसां कर दी ,
दौलत का न होना भी बड़ी दौलत है। -अमजद हैदराबादी 51/40
इकलास - श्रद्धालु

दौलत वो है जो अक्ल-ओ-मेहनत से मिले ,
लज़्ज़त वो है कि जोशे-सेहत से मिले।
ईमाँ का हो नूर दिल में वो राहत है ,
इज्ज़त वो है जो अपनी मिल्लत से मिले। -अकबर इलाहाबादी 51
अक्ल ओ मेहनत - दिमाग और मेहनत , लज्जत - ज़ायका/ स्वाद
जोशे सेहत - जोश / आवेग , नूर - ज्योति , मिल्लत - संगत

196	तवंगर	115

जो जिसको हक में समझा , वह बेहतर बना दिया ,
मुझ को फ़क़ीर तो तुझ को तवंगर बना दिया। -शोरिश 117/51
फ़क़ीर - महात्मा / संत / साधु , तवंगर - अमीर / शक्तिशाली

198	मुफ़लिस	115

कितने मुफलीस हो गये , कितने तवंगर हो गये ,
खाक में जब मिल गये दोनों बराबर हो गये। 198

मुफलीस - गरीब , तवंगर - अमीर / शक्तिशाली , खाक - मिट्टी

जब तक थे गिरह में अहमकों के पैसे ,
सब कहते थे उनको आप ऐसे वैसे।
मुफ़लिस जो हुए तो फिर किसी ने ऐ 'जौक' ,
पूछा न कि थे कौन वो ऐसे तैसे। -जौक 198

गिरह - गांठ , अहमकों - मूर्ख, बेवकूफ़ ,
मुफ़लिस - ग़रीब / निर्धन

34	दुनिया / आलम / अलम	34

मरने की दुआयें क्यों मांगु , जीने की तमन्ना कौन करे ,
ये दुनिया हो या वोह दुनिया , अब ख्वाहिशें दुनिया कौन करे।
जो आग लगाई थी , तुमने उसको तो बुझाया अश्कों ने ,
जो अश्कों ने भड़काई है , उस आग को ठंडा कौन करे। 34/61

अश्क - आंसू , तमन्ना - इच्छा , ख्वाहिश - इच्छा

दुनिया से कोई उम्मीद मत रख , दुनिया तुझे क्या दे सकती है ,
वो पाँव फैला नहीं सकते जो हाथ पसारा करते हैं। 34/78

सराया आरजू हुँ , दर्द हुँ , दागे तमन्ना हूँ ,
मुझे दुनिया से क्या मतलब , मैं आप अपनी दुनिया हूँ। 34

सराया - मूर्तिमंत्र , आरजू - इच्छा/प्रार्थना , दागे-तमन्ना - तमन्ना का दाग

जग सूना है , तेरे बगैर आँखों का क्या हाल हुआ ,
तब भी दुनिया बसती थी , अब भी दुनिया बसती है। -'फानी' 34

दुनिया ने अजब रंग जमा रक्खा है ,
हर एक को गुलाम अपना बना रक्खा है। -'महरुम' तिलोकचंद 34

उस बिन , जहाँ कुछ नजर आता है और ही ,
गोया वो आसमान नहीं , वो जमीं नहीं। -'जुरअत' 34/48
गोया - मानलो

दुनिया भी अजब सराय-फानी देखी ,
हर चीज़ यहाँ की आनी जानी देखी।
जो आके न जाए वो बुढ़ापा देखा ,
जो जाके न आए वो जवानी देखी। -मीर अनीस 34
अजब - अनोखा , सराए फानी - नश्वर संसार

हम तुम न रहेंगे वर्ना दुनिया सारी ,
तो हश्र यूँ ही रहेगी जैसी अब है। -'शाद' अजीमाबादी 34
हश्र - कयामत

दुनिया का तो ख़ाक कुछ न बिगड़ा लेकिन ,
दो दिन के लिए मुफ्त में बदनाम हुए। -'शाद' अजीमाबादी 34

साथ अपने कुछ न लाए थे न कुछ हम ले चले ,
खाली हाथ आए थे, खाली हाथ दुनिया से चले। -डॉ. इकबाल 34

सारी दुनिया से दूर हो जाए ,
जो जरा तेरे पास आ बैठे। -फैज अहमद 34/51

दुनिया के हर इक जर्रे से घबराता हूँ ,
गम सामने आता है जिधर जाता हूँ।
रहते हुए इस जहाँ में मुद्दत गुजरी ,
फिर भी अपने को अजनबी पाता हूँ। -अमजद हैदराबादी 34
जर्रे - अत्यंत छोटा टुकड़ा / कण , मुद्दत - समय / दीर्घ काल

समझ तो ली है दुनिया की हकीकत ,
मगर अब अपना दिल बहला रहा हूं। -आसी उल्दनी 34
हाँ हिज्र से और क्या ज्यादा होगा ,
हम सा भी मगर क्या कोई सादा होगा।

बेहतर तो है यही के न दुनिया से दिल लगे ,
पर क्या करें जो काम न बेदिल्लगी से चले। -जौक 34/51
बेदिल्लगी - बिना दिल्लगी

बहुत कुछ और भी है इस जहां में ,
ये दुनिया महज गम ही गम नहीं है। -मजाज 34/65
महज - सिर्फ

मेरी हालत तेरी फ़ुर्क़त में संभल जाएगी ,
क्या ये दुनिया है कि दो दिन में बदल जाएगी। -'जोश' मलीहाबादी 34
फ़ुर्कत - वियोग

293	जहाँ	34

यूं उठे आह उस गली से हम ,
जैसे कोई जहां से उठता है। -मीर 293

कहाँ ले जाऊँ दिल , दोनों जहाँ में सख्त मुश्किल है ,
इधर परियों का मजमा है , उधर हूरों की महफ़िल है। -जोश मलीहाबादी 34
मजमा - भीड़ , हूर - परी , महफिल – सभा

आप अहदे वफा को भूल गये ,
बंदा परवर खुदा को भूल गये।
याद फिर आ गई तेरी रहमत ,
हम फिर अपनी खता को भूल गये। 35/80

अहदे वफा - वफादारी का वचन , बंदापरवर - दीनबंधु / भगवान ,
रहमत - दया , खता - भूल

सादिक हुँ अपने कौल में 'गालिब' खुदा गवाह ,
कहता हूँ सच कि झूठ की आदत नहीं मुझे। -गालिब 35

सादिक - सच , कौल - बुलावा

अच्छा यकीं नहीं है तो कश्ती डुबो के देख ,
एक तूं ही नाखुदा नहीं जालिम, खुदा भी है । 35/138

ज़ालिम - अत्याचारी / क्रूर

दिल खुश हुआ है मस्जिदे-वीरान देख कर ,
मेरी तरह खुदा का भी खाना ख़राब है -अदम 35

दिल पे जो गुजरी कोई , क्या जाने यह तो हम जाने या खुदा जाने ,
खाक झेलेगा वो मुसीबते-इश्क जो लगाकर न फिर बुझा जाने।
दिल को कल तक तो चैन हासिल था आज क्या हो गया खुदा जाने ,
तुझ को अपनी खबर नहीं ऐ 'जोश' तूं खुदाई के राज क्या जाने।

खुदाई - खुदा से संबंधित -जोश मलसियानी 35

रकीबों ने रपट लिखवाई है जाकर ये थाने में ,
कि 'अकबर' नाम लेता है खुदा का इस ज़माने में। -अकबर इलाहाबादी 35

रकीब - प्रेमिका का दूसरा प्रेमी / प्रतिद्वंद्वी, प्रतिस्पर्धी

कैसा बुतखाना और काबा कैसा ,
हर जर्रे को जब खुदा समझते हैं हम। -खां जगत मोहनलाल 35/37
बुतखाना - प्रेयसी का घर , जर्रे - अत्यंत छोटा टुकड़ा / कण

जो खुशामद करे खलकत उससे राजी है ,
सच तो यह है कि खुशामद से खुदा राजी है। -अकबर इलाहाबादी 35
खुशामद - झूठी प्रशंसा / चापलूसी , खलकत - लोग

जो चाहिए देखना न देखा हमने ,
हर शै पे किया है गौर क्या हमने।
औरों का समझना तो बहुत मुश्किल है ,
खुद क्या है इसी को कुछ न समझा हमने। -अकबर इलाहाबादी 35
शै - चीज

सफर दिया है तो मंजिल का भी पता देगा ,
मेरा खुदा मुझे रास्ता कोई दिखा देगा। -मुगनंनी तबस्सुम 35

खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले ,
खुदा बन्दे से खुद पूछे कि बता तेरी रजा क्या है। -अल्लामा इकबाल 35

खुदा तो मिलता है , इन्सां नहीं मिलता ,
ये चीज वो है जो देखी कहीं-कहीं मैंने। -इकबाल 35/102

मारे डाले हैं दिल कोई इश्क में ,
ये क्या रोग या रब लगाया मुझे। -मीर तकी मीर 35/5
रब - भगवान

या रब , कोई हो इश्क का बीमार न होवे ,
मर जाये भले उसको ये आजार न होवे। -मीर तकी मीर 35/44
आजार - बीमारी

इलाही उनके हिस्से के भी गम मुझको अता कर दे ,
कि उन मासूम आँखों में नमी देखी नहीं जाती। -सीमाय अकबरबादी 35
इलाही - भगवान/ ईश्वर , अता - कला

हिलता है एक पत्ता भी जब उसके हुक्म से ,
फिर उसका हुक्म कैसे कोई मानता नहीं। -एहतराम इस्लाम 35/51
हुक्म - आदेश

हम खुदा के कभी कायल ही न थे ,
उनको देखा तो खुदा याद आ गया। -मीर 35

शबाब आया किसी बुत पर फ़िदा होने का वक़्त आया ,
मेरी दुनिया में बन्दे के खुदा होने का वक़्त आया। -पंडित हरिचन्द्र अख्तर 35/8
शबाब - जवानी

न था कुछ तो खुदा था , कुछ न होता तो खुदा होता ,
मिटाया मुझको होने , न होता मैं तो क्या होता। -ग़ालिब 35

न हरम में है वो , न दैर में है ,
हम तो दोनों जगह पुकार आए -अर्श मल्सियानी 51
हरम - काबा , दैर - मंदिर

157	नाखुदा / मन्तह	35

मुझे रोकेगा तूं ऐ नाखुदा क्या गर्क होने से ,
कि जिनको डूबना है , डूब जाते हैं सफ़ीनो में। -इकबाल डाकटर शैख़ 157
नाखुदा - नाविक , गर्क - डूबना , सफीना – नाव

192	इनायत / कृपा	35

एक सागर भी इनायत न हुआ याद रहे ,
साकिया जाते हैं, महफ़िल तेरी आबाद रहे। -चकबस्त लखनवी 192/56
इनायत - कृपा , साकिया - साकी , महफिल - सभा

195	दुआ / बद्दुआ	35

दुआएँ तो करता हूँ लेकिन दुआओं की असर कहाँ है ,
अब अल्लाह को भी उसके बंदो की कदर कहाँ है। 195

हम जिस पर मर रहे हैं वो है बात ही कुछ और ,
आलम में तुझ से लाख सही , तूं मगर कहाँ।
होती नहीं दुआ कबूल दुआ तर्के-इश्क की ,
दिल चाहता न हो , तो जबां में असर कहाँ। -ख्वाजा अलताफ हुसैन हाली 195
तर्के-इश्क - प्रेम का त्याग

जब मानते हो तुम कि खुदा भी है कोई चीज़ ,
फिर क्यों नहीं कहते कि दुआ भी है कोई चीज़। -अकबर इलाहाबादी 195

सुनते हैं कि मिल जाती हैं हर चीज़ दुआ से ,
एक रोज तुम्हें माँगके देखेंगे खुदा से। -राणा अकबराबादी 195

इक तेरी तमन्ना ने कुछ ऐसा नवाजा है ,
मांगी ही नहीं जाती अब कोई दुआ हम से। -ऐजाज कामर 195
नवाजा - कृपा की

मुसीबत और लम्बी जिन्दगानी ,
बुजर्गों की दुआ ने मार डाला। -मुज्तिर खैराबादी 195

बाकी मेरे हिस्से की अब दो ही ये बातें हैं ,
जीने की दुआ देना मरने की दुआ करना। -जोश 195

सब कुछ खुदा से मांग लिया तुझ को मांग कर ,
उठते नहीं हैं हाथ मेरे इस दुआ के बाद। -आगा हश्र काश्मीरी 195

उनकी नाकामी को या मैं जानता हूं या खुदा ,
वो दुआ-ए-वस्ल जो मैंने हजारों बार की। -दाग 195

दुआ-ए-वस्ल - मिलन की दुआ

रह गया है ले देकर आसरा दुआओं का ,
वो भी टूट जाए गर , आदमी कहां जाए। -जमील मजहरी 195

230	बन्दगी / प्रार्थना	35

दिल है क़दमों पर किसी के सर झुका हो या न हो ,
बन्दगी तो अपनी फितरत है खुदा हो या न हो। -जिगर 230/35

बन्दगी - ईश्वरीय आराधना , फितरत - स्वभाव

यही है जिन्दगी अपनी , यही है बन्दगी अपनी ,
कि उनका नाम आया और गरदन झुक गई अपनी। -महीरुल कादिरी 230

बन्दगी - ईश्वरीय आराधना

190	मस्जिद / मंदिर / दैर-ओ-हरम	190

मस्जिद में उसने हमको , आँखें दिखाके मारा ,
काफिर की देखो शोखी , घर में खुदा के मारा। -जौक 190

काफिर - पापी

211	मजहब	190

सारे जहाँ से अच्छा , यह हिन्दोस्तां हमारा ,
हम बुलबुले हैं इसकी , यह गुलिस्तां हमारा।
मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना ,
हिंदी है हम वतन , है हिन्दोस्तां हमारा। 211/51

मजहब - धर्म

मजहब को लिया तो बहस में सर टूटा ,
          चाही इस्लाह तो खुदा ही छूटा।
शिकवा हम गैर का करें क्या 'अकबर' ,
          किस्मत ही ने हमको हर तरह से लूटा।   -अकबर इलाहाबादी 211
मज़हब - धर्म / धार्मिक संप्रदाय , इस्लाह -परिभाषा
शिकवा - शिकायत

234	वाइज / शैख / नासेह	190

खुश्क बातों में कहां ऐ शैख़ कैफे-जिन्दगी ,
          वो तो पीकर ही मिलेगा जो मजा पीने में हैं।   -अर्श मिलसियानी 234
खुश्क - रूखा / सूखा , शैख़ - धर्मगुरु ,

धोके से पिला दी थी इसे भी दो घूंट ,
          पहले से बहुत नर्म है वाइज की जबां अब।   -रियाज खैराबादी 234
वाइज -धर्मगुरु

कमबख्त ने शराब का जिक्र इस कदर किया ,
          वाइज के मुंह से आने लगी बू शराब की।   -रियाज खैराबादी 234
वाइज -धर्मगुरु

खैर दोजख में मय मिले न मिले ,
          शैख़ साहब से जां तो छूटेगी।   -फैज अहमद फैज 234
दोजख - नरक / जहन्नुम

तर्के-मय ही समझ इसे नासेह ,
          इतनी पी है कि और पी नहीं जाती।   -शकील बदायूनी 234
तर्के-मय - शराब का त्याग , नासेह - उपदेशक

इन्सानियत की बात तो इतनी है शैख़ जी
          बदकिस्मती से आप भी इन्सान बन गए   -अदम 234

बस इसी धुन में रहा मर के मिलेगी जन्नत ,
तुझको ऐ शैख़ न जीने का करीना आया। -अर्श मल्सियानी 234
शैख़ - धर्मगुरु , करीना - ढंग

पी लोगे जरा शैख़ , तो कुछ गर्म रहोगे ,
ठंडा न कहीं कर दें ये जन्नत की हवाएँ। -नामालूम 234

ये मंजरे-पुरकैफ़ बदल जाने दो ,
मदहोश तबीअत को संभल जाने दो।
वाइज , तेरा फरमान मेरे सर आँखों पर ,
मुमकिन हो तो बरसात निकल जाने दो। -आबिद शाहजहांपुरी 234
मंजरे-पुरकैफ़ - मदभरा दृश्य , मदहोश - मतवाला ,
फरमान - आज्ञापत्र, मुमकिन - संभव , वाइज -धर्मगुरु

40	मौत / क़ज़ा	40

अब तो घबरा के यह कहते हैं कि मर जायेंगें ,
मर कर भी चैन न पाया तो किधर जायेंगें। -जौक 40

रोज बे-मौत मरा करते हैं डरने वाले ,
मरके भी मरते नहीं देश पे मरने वाले। 40

मोहब्बत में मरना नहीं कोई मुश्किल ,
वो जीने में हैं जितनी दुश्वारियां। 40
दुश्वारियां - मुश्किल

मौत ने आसरा दिया भी तो कब ,
जब मुसीबत के दिन गुजर गये । -'अर्श' मलसियानी 40
आसरा - सहारा / भरोसा

तूं भी करती है कब किसी की परवा ,
मगर ए मौत तुझसे बेपरवा है हम। -'महरुम' तिलोकचंद 40

तुम न आओगे तो मरने की है सौ तदबीरें ,
मौत कुछ तुम तो नहीं हो कि बुला भी न सकूँ। -'ग़ालिब' 40
तदबीरें - उपाय

मौत माँगी थी खुदाई तो नहीं माँगी थी ,
लो दुआ कर चुके , अब तर्के-दुआ करते हैं। -यास यगाना चंगेजी 40
खुदाई - खुदा से संबंधित , तर्के दुआ - दुआ का त्याग करना

मरना तो एक बार हुआ सहल भी मगर ,
जीना किसे कहें कभी आसाँ न हो सका। -नशूर वाहिदी 40
सहल - आसान

तुम न आओगे तो क्या,मौत भी आने की नहीं ,
रास्ते रोक दिये होंगे, क़ज़ा के तुमने। -तनहा 40

उठ गए दुनिया से 'फानी' अहले-जौक ,
एक हम मरने को जिन्दा रह गए। -फानी 40
फानी - नश्वर , अहले जौक - शौकीन लोग

जी के मरने में है क्या नाज की बात,
मर के जीना है इम्तियाज की बात। -अकबर इलाहाबादी 40
नाज - अभिमान/ गर्व , इम्तियाज - भेद करना

मौत का एक दिन मुअय्यन है ,
नींद क्यों रात भर नहीं आती। -ग़ालिब 40
मुअय्यन - निश्चित

मरने वाले तो खैर बेबस है ,
जीने वाले भी कमाल करते हैं। -अदम 40
बेबस - विवश / लाचार

जिन्दगी की हज़ार सांसों पर ,
मौत की एक सांस भारी है। -अफसर आजरी 40/33

मौत उसकी है, करे जिसका जमाना अफसोस ,
यूँ तो दुनिया में सभी आए हैं मरने के लिए। -'महमूद रामपुरी' 40

कुछ काम नहीं तो नाम कर जाने दे ,
या रब दुनिया से अब गुजर जाने दे।
मर मर के जिये जाए कहाँ तक 'फानी' ,
जीना नहीं मंजूर तो मर जाने दे। -फानी बदायूनी 40

कोई चाहत है , न जरुरत है , मौत क्या इतनी खूबसूरत है ,
मौत की गोद मिल रही हो अगर , जागे रहने की क्या जरुरत है।
जिन्दगी जी के देखली हमने , मिट्टी गारे की एक मूरत है। -मीना कुमारी 40

मौत से क्यों इतनी दहशत , जान क्यों इतनी अजीज़ ,
मौत आने की लिये है , जान जाने के लिये। -वफ़ा 40
अजीज - प्रिय

खबर सुनकर मेरे मरने की वो बोले रकीबों से ,
खुदा बख्शे , बहुत सी खूबियां थी मरने वाले में। -दाग 40

जब मैंने कहा मरता हूं , मुहं फेरके वो बोले ,
सुनते तो हैं, पर इश्क के मारे नहीं देखे। -सादिक अली हुसैन 40

मौत अगर आसान नहीं , जीना भी आसान नहीं ,
मौत को मुश्किल जानने वाले , जीना मौत से मुश्किल है। -जगन्नाथ आजाद 40

मुझे आजमाइश में मत डालिएगा ,
मैं मर जाऊंगा आप से दूर होकर। -अदम 40

अब मेरे रोने वालों खुदा-रा जवाब दो ,
वो बार बार पूछते हैं -कौन मर गया। -हफीज जालन्धरी 40
खुदा-रा - खुदा के खातिर

जिन्दगी इक हादिसा है , और कैसा हादिसा ,
मौत से भी खत्म जिसका सिलसिला होता नहीं। -जिगर 40
हादिसा - दुर्घटना

जब किसी ने उनको कह दी मेरे मर जाने की बात ,
झूठ है उसने कहा है कुल हकीकत मेरे पास।
कल लिखा था खत में , मैं बिस्तर से उठ नहीं सकता।
उठ गये दुनिया से क्या आज इतनी ताकत आ गयी। 28/40
हकीकत - सत्य

41	जनाज़ा	40

जनाज़े पर मेरे आकर किस अंदाज से वो बोले ,
गली मैंने कहीं थी तुम तो दुनिया छोड़ चले। -सफी लखनवी 41
जनाज़ा - शव / अर्थी

निकले थे लेकर बाराते-इश्क तेरे घर को ,
लौट रहे हैं अब जनाजा-ए-आरज़ू लिये। -उमेश मिटकर 'अल्ताफ' 41

मिरे मेरे खुदा मुझे थोड़ी सी जिन्दगी दे दे ,
उदास मेरे जनाजे से जा रहा है कोई। -कमर 41

मेरे जनाजे के पीछे सारा गाँव उलटा है ,
लेकिन कमबख्त वो न आई।
कि जिसके पीछे मेरा जनाज़ा निकला है। 41

जिस तरह हम उठे तेरे दर से ,
यूँ जनाजे उठा नहीं करते। -कैसर हैदरी 41
बाराते-इश्क - इश्क की बारात , *जनाजा-ए-आरजू - जनाजे का इच्छा*

उनकी गली में जिस दम मेरा गया जनाज़ा ,
हसरत से देखते थे पर्दा उठा-उठाकर। -जाकिर देहल्वी 41

बस इतनी आरजू है , वादे-फ़ना जनाज़ा ,
निकले मेरे मकां से ठहरे तेरी गली तक। -नाजा 41
आरजू - इच्छा/प्रार्थना , वादे-फ़ना - वादे पे फ़ना होना

जनाजे को मेरे वो रुकवा के बोले ,
ये लौटेंगे कब, और कहां जा रहे हैं। -अल्ताफ 41

42	कबर / कब्र / मजार	40

आने का कह गए थे , आए न मज़ार पर।
हमने तो जान दे दी ,इसी एतबार पर। 42
मजार - कबर , एतबार - भरोसा/विश्वास

कब्र पर मेरी न आना , हमराह रकिबा।
मुर्दों को मुसलमां , जलाया नहीं करते। 42
रकिबा - दूसरा प्रेमी

बिछाये तो नहीं काँटें किसी बेवफा ने इसमें ,
मरने के पहले देख तो लूँ कि कि मेरी कबर कहाँ है। 42

बड़े चैन से कब्र में सो रहा हूँ ,
नया आसमाँ है , निराली जमीं है। -'आगा शाइर' देहलवी 42
कब्र - कबर

चले भी आओ यह है क़ब्र-ए-'फ़ानी' देखते जाओ ,
तुम अपने मरने वालों की निशानी देखते जाओ। -'फ़ानी' 42
क़ब्र ए फ़ानी - कबर ; नश्वर / नाशवान

आग़ोशे-लहद में जबकि सोना होगा ,
श्रुज ख़ाक न तकिया न बिछौना होगा।
तन्हाई में आह कौन होवेगा 'अनीस' ,
हम होंगे और क़ब्र का कोना होगा। -अनीस 42
आगोशे-लहद - कब्र की गोद , श्रुज खाक - टुकड़ा

मर मर के मुसाफिर ने बताया है मुझे ,
रुख सबसे फिरा के मुँह दिखाया है तुझे।
क्यूँकर न लिपट के सोऊँ ऐ क़ब्र ,
मैंने भी तो जान दे के पाया है तुझे। -अनीस 42
रुख - चेहरा/कपोल/गाल

कब्रों से उबल रहे हैं गम के सोते ,
मरने वाले काश न पैदा होते।
कुछ बन न पड़ा, तो सो गये आखिरेकार ,
आराम की आरजू में रोते-रोते। -जोश मलीहाबादी 42
सोते - फव्वारे , आरजू - इच्छा/ प्रार्थना

इश्क की यादगार है क्या कहें ,
एक टूटा मजार है क्या कहें। -फिराक गोरखपुरी 42
मजार - कबर

कब्र में रख कर न ठहरा कोई दोस्त ,
मैं नए घर में अकेला रह गया। -अनीस 42

तुम गुल से गाल कब्र पे रखते तो बात थी ,
क्या फायदा जो फूलों का अम्बार कर दिया। -गनी 42
गुल - फूल

43	कफ़न	40

शहीद-ए-नाज हूँ उस गुल बदन का ,
गुलाबी रंग हो मेरे कफ़न का। -नामालूम 43
शहीद ए नाज - बलिदान का अभिमानी ,
गुल बदन - फूल की तरह कोमल एवं रंगवाली अत्यधिक सुंदर

118	जीना / मरना	40

जीने भी नहीं देते मरने भी नहीं देते ,
क्या तुमने मुहब्बत की हर रस्म उठा डाली। -फानी 118

जीना भी आ गया मुझे मरना भी आ गया ,
पहचानने लगा हूँ तुम्हारी नज़र को मैं। -असगर गोंडवी 118

करते नहीं कुछ तो काम करना क्या आए ,
जीते जी जान से गुजरना क्या आये।
रो रो के मौत माँगने वालों को ,
जीना नहीं आ सका तो मरना क्या आये। -फिराक गोरखपुरी 118

लम्हा लम्हा जीना क्या और लम्हा लम्हा मरना क्या ,
साथ तुम्हारा , साथ हमारे , अगर रहे तो कहना क्या।
हम तुम दोनों एक छंद हैं , शायर जिनको भूल गया ,
बोलो , बाद इस छंद के अब कहना क्या , न कहना क्या। -मीना कुमारी 118/1
छंद - शेर

गम मौजुद है , आंसू भी है , खा तो रहा हूं , पी तो रहा हूं ,
जीना और किसे कहते हैं -अच्छा-खासा-जी तो रहा हूं। -हफीज जालन्धरी 118

रहने दे आसमाँ , जमीन की तलाश ना कर ,
सब कुछ यहीं है,कहीं और तलाश ना कर।
हर आरजू पूरी हो , तो जीने का क्या मजा ,
जीने के लिए बस , एक खूबसूरत वजह की तलाश कर। 118

131	माहिया	40

गली के मोड़ पर लड़कों के एक जमघट में ,
यह किस ने दर्द भरी लय में माहिया गाया।
मुझे किसी से मुहब्बत नहीं मगर, ए दोस्त ,
यह क्या हुआ कि दिले बेकरार भर आया। -अहमद नदीम 131
माहिया - प्रिय / प्रेमी , जमघट -समूह

140	जहर	40

मोहब्बत छोड़ दी मैंने , गिरेबाँ सी लिया मैंने ,
जमाने अब तो खुश हो, जहर ये भी पी लिया मैंने।
उन्हें अपना नहीं सकता मगर इतना भी क्या कम है ,
कि कुछ मुददत हँसी ख्वाबों में खो कर जी लिया मैंने। 140
ख्वाब - स्वप्न, गिरेबां - गला -साहिर लुधियानवी

जो जहर पीता हूँ उसे शराब मत मानो ,
कि काँटों के जखम को गुलाब मत मानो।
जिंदगी को हकीकत का रूप न दो ,
वरना मेरे दुखों को ख्वाब मत मानो। 140

जहर मिलता ही नहीं मुझको सितमगर वर्ना ,
क्या कसम है तेरे मिलने की कि खा भी न सकूँ। -ग़ालिब 140
सितमगर - सितम ढाहने वाले

यूँ तो मरने के लिए जहर सभी पीते हैं ,
जिन्दगी तेरे लिये , जहर पिया हैं मैंने। -खलील आजमी 140

ज़हर मिलता रहा ज़हर पीते रहे ,
यूँ ही मरते रहे यूँ ही जीते रहे।
जिन्दगी भी हमें आजमाती रही ,
और हम भी उसे आजमाते रहे। -अर्श मलसियानी 140

कुछ तो मिल जाए लबे-शीरीं से ,
जहर खाने की इज़ाज़त सही। -आरजू लखनवी 140
लबे-शीरीं -प्यारे होंठ

170	कजा	63

यह क्या कहा कि मेरी बला भी न आएगी ,
क्या तुम न आओगे तो क़ज़ा भी न आयेगी। -'दाग' 170
बला - आफत , कजा - मृत्यु/ मौत

227	लाश	40

कोई कन्धा तक नहीं देता हमारी लाश को ,
हम खुदा के घर भी अपने पाँव से जायेंगे क्या। -अज्ञात 51

279	मातम	40

कहाँ किस के मातम में ये रात गुजरी ,
कलाई के गजरे जो मुरझा रहे हैं। -हफीज जौनपुरी 279
मातम - शोक , गजरा - फूलों की माला

44	बीमार / मरीज / हालत	44

बीमार-ए-गम हूँ , दूर से आया हूँ सुन के नाम ,
कहते हैं दर्दे दिल की दवा है तुम्हारे पास। -हसरत मोहनी 44

उनको देखे से आ जाती है मुँह पर जो रौनक
वो समझते हैं बीमार का हाल अच्छा है। -गालिब 44

रौनक -चमक (तेज)

' मीर ' की नब्ज पे रख हाथ लगा कहने तबीब,
आज की रात यह बीमार नहीं जीने का। -मीर 44

नब्ज - नाड़ी , तबीब - हकीम, चिकित्सक

जिन जिन को था ये इश्क का आजार मर गये ,
अक्सर हमारे साथ के बीमार मर गये। -मीर 44

आजार - बीमारी

मरीजे-इश्क को मरते कभी नहीं देखा ,
दबी जबां से ये क्या कह गये,इधर देखो। -शाद अजीमाबादी 44

मरीजे इश्क - प्रेमी

मरीजे मुहब्बत का आलम न पूछो ,
जो हालत थी कल , अब भी हालत वही है। -साजन पेशावरी 44

मरीजे मुहब्बत - प्रेम का बीमार

अपने बीमारे-मुहब्बत से वो कहना उनका ,
फिर हमें कौन मनाएगा,अगर तुम न रहे। -असद भोपाली 44

बीमारे मोहब्बत - मोहब्बत का बीमार

अच्छे इंसां हो, मरीजों का ख्याल अच्छा है ,
हम मरे जाते हैं तुम कहते हो हाल अच्छा है। -'अमीर' मीनाई 44

पूछो न हाल हमसे मरीजों का ज़ोफ़ से ,
दिन को गिरे अगरचे सम्भल रात को गये। -बहादुर शाह जफ़र 44

अगरचे – यदि , ज़ोफ़-कमजोरी

आपको भी कुछ खबर है , आप जब जाने लगे ,
आपके बीमार का उस वक़्त क्या आलम हुआ। -अनजान 44
आलम - हालत

मिल गई राहत हमेशा के लिए नींद आ गई ,
यारागर रुखसत हुए , बीमार अच्छा हो गया। -दिल 44
रुखसत - बिदा , यारागर - दोस्त

किस कदर वो रात भारी थी तेरे बीमार पर ,
यारा गर उठ-उठ के रंग-ए-आसमां देखा किये। -अंजाम 44
गर - अगर/ यानी , रंग-ए-आसमां - आसमान के रंग

बीमार तेरे जी से गुजर जाएं तो अच्छा ,
जीते हैं न मरते हैं ये मर जाएं तो अच्छा। -फानी 44

सुनने वाले रो दिये सुनकर मरीजे-गम का हाल ,
देखने वाले तरस खाकर दुआ देने लगे। -साकिब लखनवी 44

मुझ दिल का ऐ तबीब समझ कर इलाज कर ,
मुद्दत से है ये इश्क का बीमार देखना। -काशीनाथ बटालवी 44
तबीब - हकीम / चिकित्सक

146	तबियत	44

अब क्या मिलें किसी से , कहाँ जायें अब 'निजाम' ,
हम वो नहीं रहे , वो तबीयत नहीं रही। -'निजाम' रामपुरी 146

तवाजुन ख़ूब ये इश्क़ों-सजा-ए-इश्क में देखा ,
तबियत एक बार आई , मुसीबत बार -बार आई। -अर्श मलसियानी 146/89
तवाजुन - स्थिर , इश्क़ों-सजा-ए-इश्क - इश्क

वो पास आए, आस बने और पलट गए ,
          कितने ही पर्दे आँखों के आगे से हट गए।
दिल दे के इस तरह से तबीयत संभल गई ,
          गोया तमाम उम्र के झगडे निबट गए।   -शोहरत बुखारी 146
गोया - मानलो , आस - आशा , निबट - खतम हो गए

जब तबीयत किसी पे आती है ,
          मौत के दिन करीब होते हैं।   -नूह नारवी 146

तेरे बगैर किसी चीज़ की कमी तो नहीं ,
          तेरे बगैर तबीअत उदास रहती है।   -अदम 146/32

226	इलाज	44

मौत का भी इलाज़ हो शायद ,
          जिंदगी का कोई इलाज़ नहीं।   -फिराक   226

इस नहीं का कोई इलाज़ नहीं ,
          रोज कहते हैं आप आज नहीं।
आप कहते हैं बार बार नहीं ,
          हम को अब हां का भी एतबार नहीं।   -रविश 226
226
तबीबों से मैं क्या पूछूं इलाजे-दर्दे-दिल ,
          मरज जब जिन्दगी खुद हो तो फिर उसकी दवा क्या है। -अकबर इलाहाबादी 4
मरज - रोग / बीमारी

302	हाल	89

अजब अपना हाल होता जो विसाले-यार होता ,
          कभी जान सदके करते कभी दिल निसार होता।   -दाग 302
विसाले-यार - दोस्त से , सदके - आघात , निसार - कुरबान

पत्ता-पत्ता बूटा-बूटा हाल हमारा जाने है ,
जाने न जाने गुल ही न जाने बाग़ तो सारा जाने है।   -मीर 302

75	क़यामत / हश्र	75

आना बला से उनका कयामत से कम नहीं ,
मरते हैं इंतजार में , इक रोज आ चुके।   75
बला - आफत , कयामत - अंत

जाते हुए कहते हैं कयामत को मिलेंगे ,
क्या खूब कयामत का है गोया कोई दिन और ।   -गालिब 75
कयामत - अंत , गोया - मानलो

इलाही खैर हो , उलझन पे उलझन बढ़ती जाती है ,
न मेरा दम , न उनके गेसुओं का ख़म निकलता है।
क़यामत ही न हो जाए , जो पर्दे से निकल आओ ,
तुम्हारे मुँह छुपाने में तो ये आलम निकलता है।   -सफी लखनवी 75
इलाही - भगवान/ ईश्वर , गेसू - केश-बाल , खम - बल
कयामत - अंत , आलम - संसार

जिक्र जब छिड़ गया क़यामत का ,
बात पहुँची तेरी जवानी तक।   -फानी बदायूनी 75
कयामत - अंत

हर सुबह मेरे सर से क़यामत गुजरी ,
हर शाम नई एक मुसीबत गुजरी।
पामाले कुदरत ही रहा था दिन रात ,
यूँ ख़ाक में मिलते मुझको मुद्दत गुजरी।   -मीर तकीमीर 75/89
कयामत - अंत , पामाल - पागल , खाक - राख/ धूल
मुद्दत - समय / दीर्घ काल

गजब किया तेरे वादे पे ऐतबार किया ,
तमाम रात क़यामत का इन्तिज़ार किया। -'दाग' देहलवी 75/24

तुम सलामत रहो क़यामत तक ,
और क़यामत न हो क़यामत तक। -डॉ इकबाल 75

सलामत -सकुशल , कयामत - अंत

मनाएँ तो अब जान देकर मनाएँ ,
क़यामत है यह रूठ जाना तुम्हारा। -आगशीर देहलवी 75/68

कयामत - अंत

शरबत-ए-वस्ल न पीने दो , न सम खाने दो ,
क्या कयामत है न जीने दो न मर जाने दो। -यास देहलवी 75

शरबत ए वस्ल -मिलन का शरबत , कयामत -अंत , सम - जहर

तुम हो कि बैठे हुए इक आफ़त हो ,
उठ खड़े हो तो क्या क़यामत हो। -शाह हातिम 75/120

कयामत - अंत

इश्क के भेस में जब हुस्न की सूरत देखी ,
हर अदा फिर तो क़यामत ही क़यामत देखी। -जिगर मुरादाबादी 75

कयामत - अंत

सुना है हश्र में एक हुश्ने आलमगीर देखेंगे ,
खुदा जाने तुझे या तेरी तस्वीर देखेंगे। 75/17

आलमगीर - संसार का मालिक , हश्र -क़यामत

न मरते हैं , न नींद आती है , न वो सूरत बिसरती है ,
ये जीते-जागते हम पर क़यामत सब गुजरती है। -'मीर' दर्द 75

बिसरती - भूलती

मैं इन्तिजार करूंगा तेरा क़यामत तक ,
खुदा करे कि क़यामत हो और तूं आए। -युसूफ जफ़र 75

88	जन्नत / जहन्नुम	75

जिसमें लाखों बरस की हूरें हो ,
ऐसी जन्नत को , क्या करे कोई। -अकबर 88

पीकर तो जरा सैरे-जहाँ कर ऐ शेख़ ,
तूं ढूँढ़ता है जिसको वो जन्नत है यही -अर्श मलसियानी 88
सैरे जहाँ - दुनिया की सैर

फिर न आया ख्याल जन्नत का ,
जब से तेरे घर का रास्ता देखा। -सुदर्शन फ़ाकिर 88
जन्नत - स्वर्ग

213	फरिश्ते / परी / बुत / हूर	75

यह क्या मजाक फरिश्तों को आज सुझा।
खुदा के सामने ले आए है पिलाके मुझे। 213

दिल का क्या हाल कहूँ सुबह को जब उस बुत ने ,
ले के अंगड़ाई कहा नाज से हम जाते हैं। -दाग 298
बुत - प्रतिमा/प्रेयसी , नाज - अभिमान/ गर्व

301	रूह	75

पाये थे दोनों हाथ मलने के लिए ,
रूह आई थी जिस्म से निकलने के लिए।

अक्ल बारीक हुई जाती है ,
रूह तारीक हुई जाती है। -जिगर 51
तारीक - अंधेरा , बारीक - छोटी

67	मंजिल / मुकाम	67

मोहब्बत में यह क्या मुकाम आ रहे हैं ,
कि मंजिल पे है और चले जा रहे हैं।
ये कह कह के हम दिल को बहला रहे हैं ,
वो अब चल चुके हैं वो अब आ रहे हैं। -जिगर 67

जुस्तजू ए राह बाकी है , न मंजिल की तलाश ,
मुझ को खुद है अब मेरे खोये हुए दिल की तलाश। -अजमत शमअ 67
जुस्तुजू ए राह - रास्ते की तलाश

मुझे सहल हो गई मंजिले , वो हवा के रुख भी बदल गये ,
तेरा हाथ हाथ में आ गया , कि चिराग राह में जल गये। 67/82
सहल - आसान , रुख - चेहरा , चिराग - दीपक -मजरूह सुलतानपुरी

रात के सूनसान वीराने में हम चलते हैं ,
मंजिल पर हम अकेले सफर करते हैं।
घने अँधेरे में सितारे भी साथ देते नहीं ,
उम्मीदों के दिये जला के सफर करते हैं। 67

सिर्फ एक कदम उठा था गलत राहे शौक में ,
मंजिल तमाम उम्र मुझे ढूंढती रही। -अदम 67

सिर्फ इक कदम उठा था गलत राहे शौक में ,
मंजिल तमाम उमर मुझे ढूँढती रही। -अब्दुल हमीद 'अदम' 67
राहे - रास्ते , राहे शौक - उमंग /लालसा

वादी-ए -उल्फत में देखी हमने कब मंजिल की शक्ल ,
गिर पडे,गिर कर उठे,उठ कर संभलते ही रहे। -नूह नारवी 67
वादी ए उल्फत - प्रेम की खाई

दिल धड़क उठता है खुद अपनी ही हर आहट पर ,
अब कदम मंजिले-जानां से बहुत दूर नहीं। -मजाज 67
मंजिले-जानां - प्रेयसी का घर

एक पल के रुकने से दूर हो गई मंजिल ,
सिर्फ हम नहीं चलते , रास्ते भी चलते हैं। -शाहिद सिद्दीकी 67

राज सरबस्ता मोहब्बत के जबाँ तक पहुँचे ,
बात बढ़कर ये खुदा जाने कहाँ तक पहुँचे।
तेरी मंजिल पे पहुँचना कोई आसान न था ,
सरहदे-अक्ल से गुजरे तो यहाँ तक पहुँचे। -हफीज होशियारपुरी 67
राज - रहस्य , सरबस्ता - छुपा हुआ ,
सरहदे अक्ल - बुद्धि की सीमा

ढूँढता फिरता हूं मैं ऐ 'इकबाल' अपने आपको ,
आप ही गोया मुसाफिर आप ही मंजिल हूं मैं। -इकबाल 67

न जाने कौनसी मंजिल है ये मुहब्बत की ,
कि तुमको देखकर नाशाद हो गया हूँ मैं। -अदम 67
नाशाद - खिन्न,

मंजिल से मिल सका न हमें गर कोई जबाब ,
मुड़-मुड़के फिर से, तुमको पुकारा करेंगे हम।
वक़्ते सहर जो रात की लौ झिलमिला गई ,
उठकर तुम्हारी जुल्फ़ सँवारा करेंगे हम। -मीना कुमारी 67/11
सहर - सुबह , जुल्फ-बाल , गर - अगर/ यानी

खुद यकीं होता नहीं जिनको अपनी मंजिल का ,
उनको राह के पत्थर कभी रास्ता देते नहीं। -गोपाल मित्तल 67/273
यकीं -भरोसा

हर एक से मंजिल का पता पूछ रहा है ,
गुमराह मेरे साथ हुआ राहनुमा भी। -गुमनाम 67
गुमराह - रास्ता भूला हुआ

कभी छोड़ी हुई मंजिल भी याद आती है राही को ,
खटक सी है जो सीने में गमे-मंजिल न बन जाए। -इकबाल 67/96

हो न हो अब आ गई मंजिल करीब ,
रास्ते सुनसान नजर आते हैं। -खुमार राहवंकवी 67

मिलते गए हैं मोड़ नए हर मुकाम पर ,
बढ़ती गई है दुरी-ए-मंजिल जगह जगह। -आगा तबस्सुम सईदी 67
मुकाम - मंजिल

ये भी क्या मंजिल है बढ़ते है न हटते हैं कदम ,
तक रहा हूं देर से मंजिल को मैं मंजिल मुझे। -जिगर मुरादाबादी 67

कभी दामने-दिल पर दागे -मायूसी नहीं आया ,
इधर वादा किया उसने, उधर दिल को यकीं आया।
दो आलम से गुजर कर भी दिले-आशिक है आवारा ,
अभी तक ये मुसाफिर अपनी मंजिल पर नहीं आया। -नातिक लखनवी 51/167
दामने दिल - दिल का दामन , आलम - संसार ,
आशिक - प्रेमी , दागे -मायूसी - निराशा की जलन

काट दी यूं हमने 'जज्बी' राहे-मंजिल काट दी ,
गिर पड़े हर गाम पर हम गाम पर संभला किए। -जज्बी 299
गाम - गाँव

हर बार जितने लोग मिले अजनबी मिले ,
गुजरे हैं जितनी बार तेरी रहगुजर से हम। 96
रहगुजर - रास्ता

मुददत के बाद आए हैं ऐ राहबर जहाँ ,
मेरा क्यास है कि चले थे यहीं से हम। -आबिद 96
मुददत - समय / दीर्घ काल , क्यास - अनुमान
राहबर - हमसफ़र

राह आसान हो गई होगी ,
जान-पहचान हो गई होगी। -सैफ 96

खुदा जाने ये कैसी रहगुजर है किसकी तुर्बत है ,
वो जब गुजरे इधर से गिर पड़े दो फूल दामन से। -रियाज 96
तुर्बत -कबर

राहे-दूर-इश्क में अब तो रखा है हमने कदम ,
रफ्ता -रफ्ता पेश क्या आता है आगे देखिये। -मीर तकी मीर 96
राहे-दूर-इश्क - प्रेम का रास्ता , रफ्ता-रफ्ता - भूतकाल

राहे तलब में राहबर छोड़ गया कहाँ मुझे?
अब है , न मौत की उम्मीद और न जिन्दगी की आस। -निसार इटावी 96
तलब - मांगना , राहबर - रास्ते के साथी

जिन्दगी यूं भी गुजर ही जाती ,
क्यों तेरा राहगुजर याद आया। - ग़ालिब 96
राहगुजर -रास्ता

समझे थे तुझसे दूर निकल जाएंगे कहीं ,
देखा तो हर मुकाम तेरी रहगुजर में है। -जिगर 96
मुकाम - मंजिल , रहगुजर - रास्ता

113	हमसफर / हमराही / हमदम	67

हमदम से गए हमदम के लिये ,
हमदम की कसम हम दम न मिला।
मर हम गये मरहम के लिये ,
मरहम की कसम मरहम न मिला। 113

आ गया हो न कोई भेस बदलकर , देखो ,
दो कदम साए के हमराह भी चल कर , देखो।
मेहमाँ रोशनियों , सख्त अंधेरा है यहाँ ,
पाँव रखना मेरी चौखट पे संभल कर देखो। -मखमूर सईदी 113
साए - परछाई , मेहमाँ - मेहमान , चौखट - घर का दरवाजा

जब इस चमन में छोड़ के हम आशियाँ चले ,
इक हमसफर ने भी न पूछा , कहाँ चले। -शोरिश 113
चमन - बाग , आशियाँ - घोंसले

जहाँ में कोई अपना हमदम नहीं है ,
सुनाऊँ किसे दर्दे दिल का अफसाना। -साजन पेशावरी 113/55
हमदम - मित्र , दर्दे दिल - दिल का दर्द , अफसाना - कहानी

रहिये अब ऐसी जगह चल कर जहाँ कोई न हो ,
हम-सुखन कोई न हो और हम-जबाँ कोई न हो। -ग़ालिब 113
सुखन - कविता

इश्क में तुझको भी अपना हमज़बाँ समझा था मैं ,
तेरे दिल को दर्दे-दिल का राजदां समझा था मैं।
आह , उस दिन जब कि तूं पहले-पहल आकर मिली ,
सारी पिछली जिन्दगी को रायगां समझा था मैं। -अख्तर शिरानी 113
हमजबां - एक भाषी , दर्दे दिल - दिल का दर्द ,
राजदां - रहस्य जानने वाला, रायगां - व्यर्थ

194	हमनशी	67

मेरी बरबादियों के हमनशीनो ,
तुम्हें क्या खुद मुझे भी गम नहीं है। -मजाज 249
हमनशी - दोस्त

205	कारवां / काफिला	67

काफिले या मिट गए या बढ़ गए ,
अब गुब्बार-ए-राह भी उठता नहीं। -फिराक 205
गुब्बार-ए-राह - रास्ते की धूल

जुस्तुजू-ए-मंजिल में इक जरा जो दम लेने ,
काफिले ठहरते हैं , राह भूल जाते हैं। -अलीम अख्तर 205/96
जुस्तुजू ए मंजिल - मंजिल की तलाश ,
काफिला -पैदल यात्रियों का समूह

सुलगती याद दहकता खयाल तपता बदन ,
कहां पे छोड़ गया कारवां बहारों का। -अख्तर होशियारपुरी 205

इस तरफ से गुजरे थे काफिले बहारों के ,
आज तक सुलगते हैं जख्म रहगुज़ारों के। -मजरूह 205
रहगुज़ारों - रास्ता

फिर मैं आया हूं तेरे पास ऐ अमीरे-कारवां ,
छोड़ आया था जिसे तूं , वो मेरी मंजिल न थी। -सीमाब अकबराबादी 205
अमीरे-कारवां - काफिला
आग बुझी हुई इधर , टूटी हुई तनाब उधर ,
क्या खबर इस मुकाम से गुजरे हैं कितने कारवां। -इक़बाल 205
तनाब - रस्सी , मुकाम - मंजिल

219	सफर	67

तेरी तलाश मेरी जां और दश्ते-हयात ,
सफर तो खूब था रस्ता बहुत खराब मिला। -अदम 219
दश्ते-हयात - जंगल सी जिंदगी

सफर है रात दिन लेकिन नहीं मालूम है हमें अब तक ,
कहाँ से आ रहे हैं और हमें कहाँ तक जाना है। 219

बहुत दूर तुझसे कभी मैं न था ,
मगर दिन लगे हैं सफर में बहुत। -शहरयार 219

चलने को चल रहा हूं पर इसकी खबर नहीं ,
मैं हूं सफर में या मेरी मंजिल सफर में है। -शमीम रांचवी 219/67
219
न मेरी राह में तारे न मेरे पास चिराग ,
वो मेरे साथ सफर अख्तियार क्यों करते।
कोई तो बात है वर्ना जफ़ाओं के मारे ,
तुझको भुलाके तेरा इन्तिज़ार क्यों करते। -नजर 24
अख्तियार - अधिकार , जफा - बेवफाई

243	मुसाफिर	67

मौत क्या है जमाने को समझाऊं क्या ,
इक मुसाफिर था रस्ते में नींद आ गई। -दिल 243/40

299	राह	67

तुम ज़माने की राह से आए ,
वर्ना सीधा था रास्ता दिल का। -बाकी सिद्दकी 299

काट दी यूं हमने 'जज्बी' राहे-मंजिल काट दी ,
गिर पड़े हर गाम पर हम गाम पर संभला किए। -जज्बी 299
गाम – गाँव

51	मिले जुले	51

यह भी इक बात है अदावत की ,
रोजा रक्खा जो हमने दावत की। -अमीर 51
अदावत - दुश्मनी

कुछ अपना पता उसने बताया तो नहीं ,
अब तक उसका सुराग पाया तो नहीं।
मिलती हुई है दिल की खटक आहट से ,
देखो,देखो कहीं वो आया तो नहीं। -अमजद हैदराबादी 51

भलाई में हज़ारों हैं बुराई देखने वाले ,
बहुत कम हैं बुराई में भलाई देखने वाले। -जौक 51

बैठे तकते तो हैं कनअँखियों से ,
यह नहीं पूछते खड़े क्यों हो। -'आरजू' लखनवी 51
कनअँखियों - टेडी नजर

जो साए ढल चुके हैं उनका निशान हूँ मैं ,
दिल मर चुका है मेरा बेजान रह गया हूँ।
या रब तेरी नजर का इक आसरा है बाकी ,
बस अब तो चार दिन का मेहमान रह गया हूँ। -जयप्रकाश 'सहर' 51
ये मुहब्बत , ये वफ़ाएँ , ये मुरव्वत , ये खलूस ,

इनको सरमाये ने बेकार बना रक्खा है। -क़तील शिफ़ाई 51
मुरव्वत - सज्जनता , खलूस -यातना / दुःख , सरमाया - दौलत

नहीं जानते कि जाना कहाँ है ,
चले जा रहे हैं मगर जाने वाले। -जिगर मुरादाबादी 51

कौन कहता है मर गए ये लोग ,
कौम को जिन्दा कर गये ये लोग। -असर लखनवी 51
कौम - समाज

हो गई पीर पर्वत -सी पिघलनी चाहिये ,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिये। -दुष्यंत कुमार 51
पीर - कष्ट

क्या उम्मीदो आश थी और क्या जमाना आ गया ,
रोशनी के आते ही घर में अंधेरा छा गया।
मेरी बेकसी की हालत कोई उनके दिल से पूछे ,
जो बिछड़ के रह गया हो मेरी तरफ कारवां से। 51
बेकस/बेकसी - लाचार

न पूछ मुझसे वो आलम कि सुबह नींद से उठ ,
जब अंखड़ियों को वो मलता हुआ खुमार में आए। -जुर 51
आलम - संसार , खुमार -नशा

दिल को हमेशा का दर्द दिया और चाहत छीन ली ,
जीवन को एक ख्वाब दिया और हकीकत छीन ली।
आया एक शयतान ऐसा मुहब्बत की मुकद्दर में ,
कि अल्लाह ने दुनिया दी मगर जन्नत छीन ली। 109
शयतान - शैतान , मुकद्दर - नसीब , जन्नत - स्वर्ग
हमने अश्कों के चिरागों से सजा ली पलकें ,

कि तेरे दर्द की बारात गुजरने पाए।
उनसे क्या पूछते हो फलसफां-ए-मौतो-हयात ,
कि जो जिन्दा भी न रहे और न मरने पाए। -रजा 187
अश्क - आंसू , चिराग - दीपक , हयात - जिन्दगी
फलसफां-ए-मौतो - मौत की दार्शनिकता

आज किसी ने बातों बातों में जब उनका नाम लिया ,
दिल ने जैसे ठोकर खाई , दर्द ने बढ़ के थाम लिया।
राहे-तलब में चलते चलते थक के जब हम चूर हुए ,
जुल्फ की ठण्डी छाँव में बैठ पल दो पल आराम किया , -ताबां 11
राहे तलब - रास्ते के पास

आराम भी है जहाँ में आजार भी है ,
है अम्न-ओ-अमां भी और पैकार भी है।
राहत के साथ रंज भी है मौजूद ,
सच है कि जहाँ गुल है वहाँ खार भी है। -फिराक गोरखपुरी 114/159
आजार - बीमारी , अम्न ओ अमां - सुरक्षा और शान्ति
पैकार - युद्ध/ लड़ाई

मौसम भी है , उम्र भी , शबाब भी है ,
पहलू में वो रश्क-ए-महताब भी है।
दुनिया में अब और चाहिए क्या मुझको ,
साकी भी है , साज भी , शराब भी है। -अख्तर 39/163
रश्क-ए-महताब - सूर्य चन्द्र की इर्षा

तमन्ना में , उदासी में , ख़ुशी में , गम में गुजरी है ,
हयाते-इश्क , हरदम इक नए आलम में गुजरी है। -अकरम धौलपुरी 34/51
तमन्ना - इच्छा , हयाते इश्क - प्रेम की जिन्दगी
आलम - संसार

पुष्पों के साथ खार है ,
कष्ट जीवन का श्रृंगार है। -ईजन धोराजवी 114/59

45	ताजमहल	51

ये चमनजार , ये जमना का किनारा ये महल ,
ये मुनक्कश , दरो-दीवार ये मेहराब ये ताक।
इक शहनशाह ने दौलत का सहारा लेकर ,
हम गरीबों की मुहब्बत का मजाक उड़ाया है।
मेरी महबुबा कहीं और मिला कर मुझसे। 45

मुनक्कश - अफसोस , दरो दीवार - दीवार और दरवाजा
मेहराब - आर्क , ताक - आला , चमनजार - बाग

उफ़ वो मरमर से तराशा हुआ शफ़्फ़ाफ़ बदन ,
देखने वाले उसे ताजमहल कहते हैं। -क़तील शिफ़ाई 45

शफ़्फ़ाफ़ -सुन्दर , मरमर - सफ़ेद पत्थर

262	धूल	51

न किसी की आँख का नूर हूँ , न किसी के दिल का क़रार हूँ ,
जो किसी के काम न आ सके , वो एक मुश्ते-ग़ुबार हूँ। -जफर 262

नूर - ज्योति , करार - चैन , मुश्ते-ग़ुबार - मुट्ठी भर धूल

215	सलाम	50

वहाँ पहुँच के ये कहना सबा-सलाम के बाद ,
कि तेरे नाम की रट है खुदा के नाम के बाद। 215

सबा- ठंडी हवा , सलाम - प्रणाम

218	नजराना	50

तेरी एक आह से मुझे , अफसाना मिल गया ,
झुका दी नज़र तूने तो नजराना मिल गया। 55/218

अफसाना - दुःख की कहानी

गजल

मेरे पास आते थे दम-ब-दम , वो जुदा न होते थे एक दम
ये दिखाया चर्ख़ ने क्या सितम , कि मुझी से आँखें चुरा गए।
जो मिलाते थे मेरे मुँह से मुँह, कभी लब से लब कभी दिल से दिल
जो गुरुर था वो उन्हें ये था, वो सभी गुरुरों को ढा गए। -जफर

दम-ब-दम – हरदम , चर्ख - चरखा / पहिया , लब - होंठ
गुरुर - घमंड

कोई घड़ी न वस्ल की आई तमाम रात
बातों में उस परी ने गँवाई तमाम रात।
पैरों पड़े बलायें ली मिन्नतें भी की
सरकी न उनके मुँह से रुलाई तमाम रात।
खौफ उनका था कि नींद में बोसा न ले कहीं
गालों पर धर के सोये कलाई तमाम रात।

वस्ल - मिलन , बलायें - आफत , खौफ - डर , बोसा - चुंबन

हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पर दम निकले।
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले।
निकलना खुल्द में आदम का सुनते आए थे लेकिन
बहुत बे-आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले।
मुहब्बत में नहीं है फर्क जीने और मरने का।
उसी को देखकर जीते है जिस काफिर पर दम निकले। -गालिब

ख्वाहिश -इच्छा , अरमान - इच्छा , खुल्द – स्वर्ग ,
बे-आबरू - अपमानित , कूचे -गली / रास्ता , काफिर - पापी

जो कुछ होता सो होता , तूने तक़दीर
वहाँ तक मुझको पहुँचाया तो होता
दिल उसकी जुल्फ में उलझा है कब से
‘जफर’ एक रोज सुलझाया तो होता। -जफर

जुल्फ - बाल

लगता नहीं जी मेरा उजड़े दयार में
किसकी बनी है आलमे-नापाएदार में
कह दो इन हसरतों से कहीं और जा बसें
इतनी जगह कहाँ है दिले-दागदार में।

उम्रे दराज से माँग कर लाया था चार दिन।
दो आरजू में कट गये दो इन्तज़ार में।
है कितना बदनसीब 'जफ़र' दफ़्न के लिए
दो गज़ जमीं भी मिल न सकी कूए-यार में। -जफर

आलमे नापाएदार - नश्वर संसार, हसरत - इच्छा,
दिले-दागदार - व्यथित हृदय, कूए-यार -यार की गली

दिल ने ऐसे भी कुछ अफसाने सुनाये होंगें
अश्क आँखों ने पिये और न बहाये होंगे
बंद कमरे में जो खत मेरे जलाये होंगे।
एक एक हर्फ जबां पर उभर आया होगा।
मेज से जब मेरी तस्वीर हटाई होगी।
हर तरफ मुझको तड़पता हुआ पाया होगा।
जुल्फ जिद करके किसी ने जो बनाई होगी
रूठे जलवों पे खिजां और भी छाई होगी।

अफसाना - कहानी, अश्क - आंसू, हर्फ - शब्द, जलवा - दर्शन,
खिजां - पतन / बुढ़ापा / पतझड़ / अवनति

जिंदा हूँ इस तरह कि गमे जिंदगी नहीं।
जलता हुआ दीया हूँ मगर रोशनी नहीं।
होठों के पास आए हँसी का क्या मज़ाल है।
दिल का मुआमला है कोई दिल्लगी नहीं।

मजाल - हिम्मत, मुआयना - निरीक्षण -बहजाद लखनवी

आबादी भी देखी है, वीराने भी देखे हैं
जो उजड़े और फिर न बसे , दिल वो निराली बस्ती है -फानी बदायूनी

हाथ में रखी थी पहौंची कोई कम्बख्त आ पहोंची
पहनकर वो पहौंची न जाने कहां जा पहोंची
खबर अब तक न पहोंची कि मेरे पहौंची की पहौंची
कहां जा पहोंची है

गर मेरे पहौंचे की पहौंची
तेरे पहौंचे तक जा पहोंची है तो लिख भेजो कि
मेरे पहौंचे की पहौंची तेरे पहौंचे तक जा पहोंची है
पहौंची - बाजूबंद , पहोंची - जा पहोंचना

चाँद सितारों से क्या पूछूँ कब दिन मेरे फिरते हैं
वो तो बेचारे खुद हैं भिखारी, डेरे-डेरे फिरते हैं
जिन गलियों में हमने सुख की सेज पे रातें काटी थीं
उन गलियों में व्याकुल होकर सांझ-सवेरे फिरते हैं -आबिद
डेरे-डेरे - दर दर , सेज - पलंग ,

किस नज़र से आप ने देखा दिले-मजरूह को
जख्म जो कुछ भर चले थे , फिर हवा देने लगे
बागबाँ ने आग दी जब आशियाने को मेरे
जिन पे तकिया था वही पत्ते हवा देने लगे

मुट्ठियों में ख़ाक लेकर दोस्त आए वक़्ते-दफ़्न
जिंदगी-भर की मोहब्बत का सिला देने लगे
आईना हो जाए मेरा इश्क उनके हुस्न का
क्या मज़ा हो दर्द अगर खुद ही दवा देने लगे। -साकिब लखनवी
मजरूह –घायल / आहत / ज़ख्मी , बागबाँ - उपवन ,तकिया - भरोसा , खाक - मिट्टी , वक्त - समय , सिला - बदला / इनाम , आशियाना – घोंसला

खाली है अभी जाम , मैं कुछ सोच रहा हूँ
ऐ गर्दिशे-अय्याम, मैं कुछ सोच रहा हूँ
साकी , तुझे इक थोड़ी-सी तकलीफ तो होगी
सागर को मेरे थाम मैं कुछ सोच रहा हूँ -अदम

गर्दिशे अय्याम - उलटफेर

आए वो मेरे पास तो शरमा के चल दिए ,
आँचल को कुछ संभाल के कतरा के चल दिए।
ईमानो -दीनो-होश को तड़पा के चल दिए ,
बहके हुओं को और भी बहका के चल दिए।
आँखें वो मस्त मस्त, तबस्सुम वो मौज मौज ,
हर चीज पै शराब सी बरसा के चल दिए। -सागर निज़ामी

ईमानो-दीनो-होश - सच्ची निष्ठा और सुधबुध , तबस्सुम - हास्य/ स्मित

गजब है जुस्तजू -ए -दिल का ये अंजाम हो जाए
कि मंजिल दूर हो और रास्ते में शाम हो जाए
ये मेरा फैसला है आप मेरे हो नहीं सकते
मैं जब जानूँ कि ये जज्बा मेरा नाकाम हो जाए
अभी तो दिल में हल्की सी खलिश महसूस होती है
बहुत मुमकिन है कल इसका मोहब्बत नाम हो जाए। -शैरी भोयानी

नाकाम - असफल, खलिश - चुभता हुआ , जुस्तजू - तलाश
जज्बा -आकर्षण / दिल का जोश , अंजाम -परिणाम

फूल की जो कुछ पंखुड़ियां टूटीं चमन से कांच की चूड़ियाँ टूटीं
दिल के मरमरी सर्द फ़र्श पर झन्न से साँस की बेड़ियाँ टूटीं
यादें बिखरीं, बिखरे दाने या सावन की झड़ियाँ टूटीं
फिसल पड़ा आँखों से काजल नज़रों की जो कड़ियाँ टूटीं -मीना कुमारी

तुम्हारी अंजुमन से उठ के दीवाने कहाँ जाते
जो वाबस्ता हुए तुमसे, वो अफ़साने कहाँ जाते
निकलकर दैरो-काबा से अगर मिलता न मयखाना
तो ठुकराए हुए इन्सां खुदा जाने कहाँ जाते
चलो अच्छा हुआ, काम आ गई दीवानगी अपनी
वरना हम जमाने भर को समझाने कहाँ जाते। -कतील शिफाई
अंजुमन - महफिल, वाबस्ता - सम्बन्ध, दैरो-काबा - मंदिर मस्जिद

तमाम उम्र तेरा इन्तिज़ार कर लेंगे
मगर ये रंज रहेगा कि जिन्दगी कम है
न साथ देंगी ये दम तोड़ती हुई शमअें
नये चराग़ जलाओ कि रोशनी कम है। -शाहिद सिद्दीकी

मयकशी अब मेरी आदत के सिवा कुछ भी नहीं
ये भी इक तल्ख़ हकीकत के सिवा कुछ भी नहीं
दिल में वो महश्रे -जज्बात कहाँ तेरे बगैर
एक खामोश क्यामत के सिवा कुछ भी नहीं
मुझ को खुद अपनी जवानी की कसम है कि ये इश्क
एक जवानी की शरारत के सिवा कुछ भी नहीं। -अख्तर
मयकशी - शराबखोरी, तल्ख - कड़वा, हकीकत - सत्य,
महश्रे –जज्बात - भावनाओं में लीन, क्यामत -अंत

उनका गम भी न रहा पास तो फिर क्या होगा
लुट गई दौलते-एहसास तो फिर क्या होगा
कौन सुबह जलाएगा तमन्ना का चिराग
शाम से टूट गई आस तो फिर क्या होगा
जिनकी दूरी में ये लज्जत कि बेताब है दिल
आ गए वो जो कहीं पास तो फिर क्या होगा -शायर लखनवी
लज्जत - ज़ायका/ स्वाद, बेताब - व्याकुल/बेचैन,
दौलते-एहसास - दौलत का एहसास

अपनी जबां से कुछ न कहेगें चुप ही रहेंगे आशिक लोग
तुमसे तो इतना हो सकता है, पूछो हाल बेचारों का
एक जरा-सी बात थी जिसकी चर्चा पहुंची गली-गली
हम गुमनामों ने फिर भी अहसान न माना यारों का -इबने इन्शा
तकाजा - तगादा , वजअ - कारण

सब्रो-जब्त के ले के बेशुमार नजराने
तेरी याद आई थी , आज मुझ को समझाने
तुम ने बात कह डाली कोई भी न पहचाने
हम ने बात सोची थी, बन गए हैं अफ़साने
हाय क्या मुसीबत है हाय क्या क़यामत है
हम ही खा गए धोखा , हम चले थे समझाने। -निगाह
सब्रो-जब्त - धीरज / अत्याचारों का धीरज

हम ने सुना था सहने-चमन में कैफ के बादल छाए हैं
हम भी गए थे जी बहलाने , अश्क बहा कर आए हैं
फूल खिले तो दिल मुर्झाए ,शमअ जले तो जान जले
एक तुम्हारा गम अपना कर कितने गम अपनाए हैं,

पहली सी वो बात अब कहाँ से लाऊँ
वो दिन वो रात कहाँ से लाऊँ
हम दोनों थे जब क़रीबो-बेगनाए-गम
वो दौरे-हयात अब कहाँ से लाऊँ। -कैफ मुरादाबादी
आलमे सरखुशी - सारे संसार की खुशी , बेखुदी - बेशुद्धी/ आत्मलीनता,
क़रीबो बेगनाए गम - परायों के गम के करीब ,
दौरे हयात - जिन्दगी का चक्कर/ के फेरे

ये आलमे -सरखुशी रहे या न रहे
ये 'कैफ' की बेखुदी रहे या न रहे
इक आखिरी जाम और पी ले ऐ दोस्त
फिर जाने यह जिन्दगी रहे या न रहे।

मेरा जीना-मरना , तुम्हारे लिए था-
तुम्हीं हो मसीहा, तुम्हीं मेरे क़ातिल
अभी तक तुम्हें ढूँढती हैं निगाहें
अभी तक तुम्हारी जरुरत है मुझको। -मीना कुमारी
मसीहा - देवदूत , क़ातिल - कत्ल करने वाले , निगाहें - नजर

हो के तन्हा-ओ-मजबूर चली जाऊँगी
तुम्हारी दुनिया से मैं दूर चली जाऊँगी।
दूर बहुत दूर आवाज की वादी से दूर
तुम्हारी सांस की मानूस खुशबुओं से दूर।
दिल में टूटे हुए चुभते हुए इस खार से दूर
और ख्वाबों की उजड़ी हुई बहार से दूर।
तुम्हारे लम्स की जादूगरी से दूर कहीं
तुम्हारे क़दमों की आहट से दूर -दूर कहीं।
दूर ऐसी जगह की कोई भी परछाईं न हो। -मीना कुमारी
तन्हा - अकेला , वादी - खाई, मानूस - परिचित , लम्स - स्पर्श

इब्तिदा-ए-इश्क है रोता है क्या
आगे आगे देखिये होता है क्या
काफ़ले में सुबह के इक शोर है
यानी गाफिल हम चले सोता है क्या
ये निशाने -इश्क हैं , जाते नहीं
दाग़ छाती के अबस धोता है क्या -मीर तकी मीर

आपकी राहों में हम नजरें बिछाते ही रहे
आप न आए मगर हम बुलाते ही रहे।
हमने तो बढ़ बढ़ के पूछा हाल आपका मगर
आप थे कि बार बार आँखें चुराते ही रहे।
उठते हुए दर्द सीने में हमारे ओ सनम
बेवफाई आपकी याद दिलाते ही रहे।
शरीर नींद पलकों की डोरियाँ थामे
झकोले ख्वाबों को देती रही झुलाती रही
चिराग रात के हर पेंग से बुझाती रही।
बुझी-बुझी हुई आँखों से गमजदा बिरहन
पुराने ख़त को क्यों पढ़ के मुस्कुराती रही
क्यों आँसुओं को हथेली से फिर छुपाती रही ? -मीना कुमारी

हर पेंग - झूला झूलते समय उसका इधर–उधर जाना,
गमजदा - शोकसंतप्त , झकोले - धक्के , बिरहन - वियोगी

और हम हैं कि बस हाथों से कलेजा थामे
बेरहम वक़्त की हर चोट सहा करते हैं।
तूं जो आ जाए तो इन जलती हुई आँखों को
तेरे होंठों के तले ढेर-सा आराम मिले
तेरी बाँहों में सिमट कर तेरे सीने के तले
मेरी बेख्वाब सियाह रातों को आराम मिले। -मीना कुमारी

बेरहम - बेदर्द/ दर्दनाक , बेख्वाव - जागते रहना
सियाह - काला/ अशुभ

दिल में फिर दर्द उठा फिर कोई भूली हुई याद
छेड़ती आई पुरानी बात दिल को डंसने लगी गुज़री हुई
जालिम रात दिल में फिर दर्द उठा
फिर कोई भूली हुई याद बन के नश्तर
रंगे अहसास में उतरी ऐसे मौत ने ले के मेरा नाम पुकारा जैसे। -मीना कुमारी

नश्तर - तेज हथियार

वह और मैं जब खमोश हो जाते हैं तो हमें
अपने अनकहे,अनसुने अल्फाज में
जुगनुओं की मानिद रह-रहकर चमकते दिखाई देते हैं
हमारी गुफ़्तगू की जबान वही है जो
दरख़्तों , फूलों,सितारों और आबशारों की है
यह घने जंगल
और तारीक रात की गुफ्तगु है जो दिन निकलने पर
अपने पीछे रोशनी और शबनम के आँसूं छोड़ जाती है,
महबूब आह मुहब्बत , -मीना कुमारी

अल्फाज - शब्द , गुफ्तगु - बातचीत , दरख़्तों- वृक्ष/ पेड़
तारीक - अंधेरा , शबनम - ओस , महबूब – प्रेमी
मानिद - माफिक , आबशार - झरना

चलो कहीं चलें घूमती हुई सड़क के किनारे
किसी मोड़ पर रोशनी के किसी खम्बे के नीचे बैठ कर
बातें करें चलो कहीं चलें।
किसी सूखे हुए नाले की पुलिया पर बैठकर
बातें करें चलो, कहीं चले।
रात अपने आँचल में हज़ारों चिराग छुपाए
आहिस्ता-आहिस्ता जाने किसे तलाश करने जा रही है।
जब मैं भी उसी तरह सो जाऊँगी
वह ख़ामोशी कितनी सुहानी होगी मौत के बाद। -मीना कुमारी

प्यार का एक खूबसूरत ख़्वाब
जो मेरी सुलगती हुई आँखों में ठंडक भर दे
मुहब्बत का एक पुरतपाक लम्हा
जो मेरी बेचैन रूह को पुरसुकूँ कर दे
बस इन्हीं एक-दो चीज़ों की मैं खरीदार थी
और वक़्त की दुकान इन चीज़ों से खाली निकली। -मीना कुमारी

पुरतपाक – जोशीला , पुरसुकूँ - शांतिमय

क्या भरोसा है जिंदगी का,
इंसान बुलबुला है पानी का।
जी रहे हैं कपडे बदल बदल कर,
एक दिन एक कफन में लें जायेंगे।
कंधे बदल बदल कर। 33

यह दिल ही था नादां जो तेरी जुल्फ से उलझा
यूँ ही अपने लिये खार बोता नहीं कोई अपना
जो बात सारे फ़साने में जिसका कोई जिक्र न था
वो बात उनको बहुत नागवार गुजरी है
न गुल खिले है न उनसे मिले न मय पी है
अजीब रंग में अबके बहार गुजरी है
फसाना - कथा/ कहानी , नागवार - अप्रिय

रस्मे-उल्फत को निभाये तो निभाएँ कैसे
हर तरफ आग है दामन को बचाये कैसे
दिल की राहों में उठाते हैं जो दुनियां वाले
कोई कह दे कि वो दीवार गिराएँ कैसे ?
दर्द में डूबे हुए नगमें तो हजारों हैं मगर
साज-ए -दिल टूट गया हो तो सुनाए कैसे ?
बोझ होता जो ग़मों का तो उठा भी लेते
जिन्दगी बोझ बनी हो तो सुनाए कैसे ?
उल्फत - प्रेम , नगमें - कहानी , साज-ए –दिल - दिल का संगीत

बस कि पाबन्दी-ए-आईने-वफ़ा हम से हुई
ये अगर कोई खता है तो खता हम से हुई
जिन्दगी तेरे लिए सब को ख़फ़ा हम ने किया
अपनी क़िस्मत है कि अब तूं भी ख़फ़ा हम से हुई -खलील
पाबन्दी-ए-आईने-वफ़ा - वफ़ा पर रोक , खता - भूल , ख़फ़ा – नाराज़

तुम से उल्फत के तकाजे न निबाहे जाते
वर्ना हम को भी तमन्ना थी की चाहे जाते
दिल के मारों का न कर गम कि ये अन्दोह-नसीब
जख्म भी दिल में न होता तो कराहे जाते
दी न मोहलत हमें हस्ती ने वफ़ा की वर्ना
और कुछ दिन गमे-हस्ती से निबाहे जाते। -हक्की

उल्फत - प्रेम , तकाजे - तगादा / माँगना / इच्छा , निबाह - निभाव ,
तमन्ना - इच्छा/ कामना , अन्दोह-नसीब - दुःखी , हस्ती - जीवन
गमे हस्ती - जीवन के दुःख

रात घटने लगी , दर्द बढ़ने लगे ,
गम सुलगने लगे , तन झुलसने लगे।
यह कैसा पड़ाव है इस रात का ,
जिसके चारों तरफ चैन ही चैन है।
न इधर नींद है न उधर नींद है। -मीना कुमारी 57

झुलसने - जलने

दुआओं की यह रात , आज की रात ,
'बहुत रातों के बाद आई है' ऐसी सफेदपोश रात।
ऐसी सियाह बख्त रात कहीं-कहीं मिलती है ,
किसी-किसी सजीले दिल के नसीब में होती है।
यह मौत की रात , यह पैदाइश की रात। -मीना कुमारी 57

सियाह - काला/ अशुभ , बख्त - नसीब
सफेदपोश - कुलीन / शिक्षित / सभ्य व्यक्ति

मैं तुझे चाहता नहीं लेकिन ,
फिर भी जब पास तूं नहीं होती।
खुद को कितना उदास पाता हूँ ,
इक ख़ामोशी-सी छाई रहती है।
दिल से भी गुफ्तगु नहीं होती ,
क्या मैं तुझे चाहता नहीं? 51

रातों को तसव्वुर है उनका और चुपके चुपके रोना है
ऐ सुबह के तारे तूं ही बता , अंजाम मेरा क्या होना है
दिल को खोया , खुद भी खोए, दुनिया खोई , दिन भी खोया
ये गुमशुदगी है तो इक दिन ए दोस्त , तुझे भी खोना है
तूं ये न समझ अल्लाह , कि है तस्कीन तेरे दीवानों को
वहशत में हमारा हँस पड़ना, दरअस्ल हमारा रोना है। -सागर निजामी
तसव्वुर - कल्पना , तस्कीन - संतोष , वहशत - पागलपन ,
दिन -दिवस, गुमशुदी - खोया हुआ

गुल परस्त हूँ मगर गुल ही नहीं नसीब
काँटों से निबाह किये जा रहा हूँ।
यों जिंदगी गुजार रहा हूँ तेरे बगैर
जैसे कोई गुनाह किये जा रहा हूँ।
बेक़ैफ दिल है और जिये जा रहा हूँ मैं।
खाली है शीश और पिये जा रहा हूँ मैं।
गुल परस्त - फूलों को महत्व देने वाला , निबाह – निभाव , गुनाह-अपराध
बेक़ैफ - बिना आनंद , शीश – बोतल

नामा गया न कोई , न कोई नामा-बर गया ,
तेरी ख़बर न आई , जमाना गुजर गया।
दिल की बिसात क्या थी निगाहे -जमाल में ,
एक आईना था टूट गया देख-भाल में।
उम्रे-दो-रोजा वाकई ख़्वाबों-खयाल थी ,
कुछ ख्वाब में गुजर गई , बाकी ख़याल में। -सीमाब अकबराबादी 20/15

उम्रे-दो-रोजा - { उम्मीद - आशा , रोजा - उपवास } ,
निगाहे –जमाल -सुंदर नयन

गुजराती से हिंदी

पुछा मैंने भोमिया से राह यह कहाँ जाती है
अनजान हूँ कहा भोमिया ने सब आते हैं और जाते हैं।

यह तो खबर है दोस्त कि चारों तरफ बहार है
अफ़सोस यही कि वो मेरे घर के बहार है।

सनम तुम्हारी तरह सपनों में आकर सता नहीं सकता
और दिल का दर्द दिल खोल के बता नहीं सकता।
मजबूर हूँ आदत ऐसी हो गयी है जहर की
कि अमृत की दो बूँदें पचा नहीं सकता।

हृदय और आँखों का आधार छोड़ कर
कभी यह आँसूं खोजते हैं पलकों का सहारा किसलिये
हर चीज़ में याद उसकी हर रोज वो याद आए
और प्रश्न पूछता हूँ मन को उसके विचार किसलिये।

हे प्रिय अंत में यह पुष्प की भेंट देता हूँ
ख़ुशी से अपना ले अपने दिल में समाले
बहुत कम दे पाया हूँ मगर संतोष कर लेना
जो था मेरे दिल में वो ही रखा है तेरे चरणों में।

खुद दर्द आज उठकर दिल की दवा करता है,
जो काम वैद्य का था वो दर्द करता है,
यह किस्मत की बात है समझ सको तो
देता है जो दर्द वो ही दवा करता है।

छोटी सी है मगर बड़ी समझकर स्वीकार लेना यह यादें मेरी
एक प्यार भरे दिल की छोटी सी है यह यादें मेरी।

दिल की दास्तां तुम क्या जानो प्यार का परिचय तुम क्या समझो
तुमने जुदाई के दिन देखे नहीं तुम मिलन की रात क्या समझो।

तुम सपने बेचते हो और मैं सपने देखता हूँ
और हकीकत में दोनों दुःखी है यह सच है।

दिल क्यों बेकरार है यह याद नहीं
किसका इतंज़ार है वो याद नहीं
दिल का दीप जलाकर बैठा हूँ द्वार पर
कौन आने वाला है यह याद नहीं। -सागर नवसारवी

मैं हक़ीकत में मानता हूँ मगर मुझे कल्पनायें भी पसंद है
वचन आपसे पूर्ण न हो सका मगर मुझे रोज के वादे पसंद है।

तुम्हारा रूप और हँसी भूल नहीं सकता
पास में है सब फिर भी छू नहीं सकता
मुझे डर है इसमें से कुछ कम न हो जाये
तस्वीर है हाथ में तेरी फिर भी मैं चूम नहीं सकता।

सितमगर से मोहब्बत हो गयी है।
जिन्दगी में एक गफलत हो गयी है।
मत पोंछो-मेरे आँसुंओं को
मुझे रोने की एक आदत हो गयी है।

मयखाने में बितायी या मस्जिद में बितायी
उसका हिसाब हम दुनिया को क्यों देवे
अपनी थी यह जिन्दगानी हमारी
गुज़ारी हमने कहीं भी गुज़ारी।

हमारे प्रेम पत्रों की लाज रखना
तुम भलाई में आकर जवाबमत देना

तुम्हारे पास राम है , हमारे पास जाम है।
मतलब क्या झंझटों से , दोनों को आराम है।

चाँदनी रात का प्रसंग अब याद नहीं
दिल किसने दिया था अब याद नहीं
वादा किया और वादा लिया हँसते -हँसते
किसने की जफ़ा अब याद नहीं।
जफा - बेवफाई

तुम न परख पाओगे हमारे दर्द ही ऐसे हैं
यह पत्थरों का आघात नहीं यह मार है फूलों की।

इन सब के नाम देकर मुझे नहीं होना खराब
अच्छे-अच्छे लोगों ने सताया है मुझे
यह लोग सब जो आज मेरी मौत पर रो रहे हैं
उन सबने जिन्दगी भर रुलाया है मुझे।

दिल के बजाय जाम की ज्यादा कदर हो गयी है
और मय की दुनिया पर बहोत असर हो गयी है
दिल जब टूटता है किसी को ख़बर नहीं होती
जाम जब फूटता है तो दुनिया को खबर हो गयी है

मजा नहीं है मगर पिये बिना नहीं चलता
तरस बढ़ायी आपने शराब पीलाकर
हे प्रभु यह कैसा रंग जमाया है तुमने
गुलाबी दिल को एक भी गुलाब न देकर।

महकता फूल यह जवानी की अदा है
फूल को चूंटना वो जवानी की मजा है
चूंटते हुए डंख लगे वो जवानी की सजा है
अदा, मजा, सजा,यह जवानी की क़ज़ा है।

जब प्यार की इस संसार में शुरुआत हुई होगी
तब प्रथम ग़ज़ल की शुरुआत हुई होगी
इस दिल को दर्द मिला उस दिन से दोस्तों
जिस दिन से दुनिया की शुरुआत हुई होगी।

बहुत कठिन दिन बीते हैं तेरी जुदाई में
न रात जुल्फों की थी न गगन में चाँदनी थी
बितायी मैंने विरह की रात तेरे सपने देखकर
क्या कहूँ मेरे पास तेरी एक भी तस्वीर न थी।

थोड़ी तकरार कर लेंगे थोड़ा प्यार कर लेंगे
तुम देखते रहोगे हम आँखें चार कर लेंगे
सागर में डूबने का हमें डर नहीं है अगर डूबे भी
तुम्हारे हो के किनारा पार कर लेंगे।
तुम आए हम हरखा गये तुम बोले हम शरमा गये
तुम चले हम मुरझा गये अरे बेकार में ही घबरा गये।

रूप केफी था आँखें घेली थी
और हथेली में उसकी हथेली थी
मन महक रहा था भीना सा कंपन था
यह उसके साथ मुलाकात पहली थी।

मेरी याद इस तरह से भुला दी गयी
जैसे उंगली पानी से निकली जगह भर दी गयी।

दिल सिर्फ मोहब्बत माँगता है जन्नत का क्या करूँ
वो तो एक ख़याली मुकाम है दिल में न प्यार
आँखों में न इन्तज़ार ऐसा जीवन क्या
ऐसी मौत भी हराम है।

सामने मिले तो नजरे झुक गयी
रास्ते में ही मंजिल मिल गयी
मेरे यह आँसू आज खुशनसीब है
उनको तेरी आँखों में जगह मिल गयी।

इस जग में सब पापी नहीं यहाँ स्वर्ग नहीं नर्क नहीं
लगता है वो ही फूल रख गये होंगे क्योंकि इसमें वो सुगन्ध नहीं।
जनाजे पर आ के बोले वो भूल जाना मुझे
यानी कि अपनी याद फिर दिला गयी
यह तो गनीमत है कि थोड़ा हँसकर
मेरी मौत को वो राजी कर गयी।

नफरत भी चाहिये जिन्दगी में जिस तरह
कब तक करते रहेंगे आप प्यार मुझे इस तरह।

दिलासा देने वालों ने जब पुछा तो मेरे को यह ख़याल आया
वरना मैं दुखी हूँ यह मुझे भी नहीं थी खबर।

उसने एक जाम दिया जाम मैं पी गया
कोई भी अंजाम हो मैं अंजाम भी पी गया।

दिल के घाव गिन लो फिर आपको विश्वास आयेगा
भेंटें आपने कितनी दी उसका आप को हिसाब मिल जायेगा।

आकाश में यह मेघ धनुष रंग बदलता रहता है
मगर यह जिन्दगी है जो अपने रंग नहीं बदलती
मैं फूल श्रद्धा से चढ़ाता हूँ देवी के चरण कमलों में
फूल खुश होते हैं लेकिन देवी नहीं मुस्कराती।

न आना तुम यहाँ कब्र पर फूल चढाने
मैं सो गया हूँ अब तुम्हारा इन्तज़ार नहीं।

एक बेखबर को कहाँ है इसकी खबर
जब से पैदा हुए तब से बाँध ली है मुट्ठी में कबर।

तूफ़ान के साथ हम को मोहब्बत और शांति का साथ है तुम्हारा
कैसी ग़जब हालत है दोनों की सागर हमारा किनारा तुम्हारा ।

खुदा कहे माँग बंदे तो ऐसी आँख माँग लूँगा
सिर्फ एक अश्रुबिंदु नहीं दस लाख माँग लूँगा
नहीं छोड़नी है कोई निशानी इस दुनिया में-मौत के बाद
मिलेगी तो श्मशान के पास अपनी राख माँग लूँगा।

प्रणय की यह समझ पतंगे में नहीं होती
तड़पने में जो मज़ा है , वो जल जाने में नहीं होती
नहीं मिलती जिन्दगी को हुंफ , जो आपस में प्रीत नहीं होती
जलन जो एक सरीखी , दोनों दिलों में नहीं होती।

ओ खिलते हुए फूल तूं इतना गरूर ना कर
तेर हालत बदल जाएगी मुरझा जायगा कुम्हला जायगा
और फूल ने कहा मैं जानता हूँ मेरी हालत बदल जायगी।
भट्टी होगी इत्र बनेगा और सुवास सब जगह फैल जायगी।

यह मत पूछो कि तुम को चाहता हूँ मैं कितना
कसम है तुम्हारी मुझे भी नहीं मालूम इतना।
इन्तज़ार के बहाने हम यह जिन्दगी जी लेंगें
तुम्हारे आने की कोई खबर खरी खोटी तो दो।

मोहब्बत के सवालों के कोई जवाबनहीं होते
और जो होते हैं वो इतने सच्चे नहीं होते
कोई एक ही प्रेमी को मिलती है सच्चे दिल के लगन
सब जहर पीने वाले शंकर नहीं होते।

वो गये मेरा दिल लेते गये और मुझे हृदयहीन कहते गये
उनके औदार्य की मैं क्या कहूं दर्द तड़पन और विरह देते गये।

इस संसार में जिन्दगी का मर्म दिलवाले ही समझते हैं
तुम्हारी कसम हमारा प्यार दिलवाले ही समझते हैं
नज़र मीठी होती है मगर यह सजा है जीवन भर की
और इन नज़रों की मार दिलवाले ही समझते हैं।

तुम वादे करना जानते हो और मैं इन्तज़ार करना जानता हूँ
तुम आँख लड़ाना जानते हो मैं दिल लगाना जानता हूँ
ओ प्यार का खेल खेलने वाले तुम इश्क लड़ाना क्या जानो
तुम आग लगाना जानते हो मैं आग बुझाना जानता हूँ।

मैं दिवाना हूँ फिर क्यों न माँगू काँटें है वो भी फूल माँगते हैं
क्यों आश्चर्य होता है तुमको मेरा भी दिल है और प्यार माँगता है।

यह चमकता और दमकता शाहजहाँ का महल देखने दे
और एक धनवान मजनूँ ने जो किया खेल वो देखने दे
यहाँ प्रदर्शन के लिये कैद है प्रेम एक ज़माने से
वो खूबसूरत पत्थरों की यह जेल देखने दो।

गुल , फूल और चमन सब तुमको खार लगते हैं
हमारी आँखों के आँसू तुमको अंगार लगते हैं
दिल देकर दर्द लिया उसका मैं आभार मानता हूँ
उस आभार का भी क्याआपको भार लगता है।

चौराहे पे मिले तो साथ हो न सके
की सलाम तो वो कुछ कह न सके
या अल्लाह है क्या नजाकत है सलाम करने
मेहंदी के भार से हाथ ऊँचा कर ना सके।

थोड़ी तकरार करके भी थोड़ा प्यार कर लेंगे
तुम देखते रहोगे हम आँखें चार कर लेंगे।
मुझे मालूम है मेरी कोई गिनती नहीं उसकी सभा में
यह सब समझे यह सब जाने लेकिन
उसकी आँखों में छुपा हुआ जो प्यार है
उसको हम ही समझे हम ही जाने।

आँखें चंचल हैं उनको बाँध नहीं सकता
ह्रदय नादान है उसको समझा नहीं सकता
दिल की हसरतों को यों बांध नहीं सकता
प्यार तो आखिर प्यार है पागलपन कह नहीं सकता

शरम रोकती है तुझे आने से मुझे विनय रोकता है
तुम आ नहीं सकती मैं बुला नहीं सकता
यह कैसी हालत है दोनों की
चाहकर भी हम चाह नहीं सकते।

मैंने मय को दिल के दर्दों की दवा मानी थी
पीछे मालूम पड़ा कि वो भी एक बीमारी थी।

गुलाबी आँखों की रंगीनी शीशे में नहीं होती
नज़र में होती है जो मस्ती वो मदिरा में नहीं होती।
आनंद कभी ऐसा एक आध 'ना' में होता है
मजा ऐसा सैकड़ों 'हाँ' में भी नहीं होती

जीवन की सुबह और जीवन की शाम बेची है
जिगर का दर्द और ह्यदय की धड़कन बेची है
किससे कहुं कि एक अनजान ग्राहक को
'खलिश' मैंने दिल जैसी चीज़ उधार बेची है। -खलिश बड़ोदवी

स्नेह से भरी कोई संगत थी , जिन्दगी की नयी रंगत थी
उनकी आँखें और मेरा ह्रदय , आज कहता हूँ बात जो अंगत थी।

सागर था नाव थी साहिल था
उस समय तूने खुदा को ललकारा था
जब तूं मझधार में डूबने लगा
तब खुदा को तूने पहचाना था। -अशोकपुरी गोस्वामी

कोई भले को पूछता है कोई बुरे को पूछता है
मतलब से सबको निस्बत है यहां कौन खरे को पूछता है
इत्र निचोड़ फिर कौन फूलों की दशा पूछता है
संजोग झुकाते हैं वरना कौन खुदा को पूछता है। -कैलास पंडित

जिन्दगी की यही कहानी है शैशव तो प्रातः काल है
और दोपहर होते ही जवानी दिवानी हो गई
शाम होते होते तो बुढ़ापे में यादों का कारवां
फिर रात हुई और पूरी कहानी हो गई।

साकी हो , महफ़िल हो , हाथ में भरपूर जाम हो ,
बेहोशी में होठों पर उनका ही नाम हो।
दिल में दर्द हो , आँसुंओं को छुपा पलकों में ,
जिन्दगी को आखिरी सलाम हो। -'........ '

खुदा तेरी कसौटी की यह प्रथा अच्छी नहीं है
जो अच्छे हैं उनकी दशा अच्छी नहीं है। -बरकत वीराणी 'बेफाम'

गंगा से पूछा तो दिल के दर्द से वो बोली
मेरे प्रवाह के पीछे हिमालय पिघल रहा है। -'........ '

साँझ समझ न रोक काफिले को ओ रहबर
समय के मन में तो कोई शाम नहीं सुबह नहीं। -'........ '

लाखों चिट्ठियाँ लिखी तब एक लाइन जवाबमें आई
प्रेम का दाखिला फिर से गिनो कोई भूल हिसाब में आई। -'........ '

'बेफ़ाम' फिर भी कितना थक जाना पड़ा
नहीं तो जीवन की राह है घर से कबर तक। -बरकत वीराणी 'बेफाम'

इन्सान स्वार्थ में एक ही हिसाब रखता है
सुख न दे तो खुदा भी खराब लगता है। -'....... '

खुदा और आदमी के बीच फर्क थोड़ा सा ही है
एक ने बनाया संसार दूसरा उसे बिगाड़ता है। -बरकत वीराणी 'बेफाम'

हमारी जिन्दगी का यह सरल सा परिचय है
रुदन में वास्तविकता है और हँसी में अभिनय है। -'....... '

भर लो अपनी सांसो में यह सुगंधों का सागर
फिर गीली मिट्टी की भीगी सुगंध मिले ना मिले।
वतन की मिट्टी को माथे पर लगा लो 'आदिल'
फिर यह मिट्टी दुबारा उम्र भर मिले ना मिले। -आदिल मन्सूरी

पागल है जमाना फूलों का दिवानी है दुनिया फूलों की
उपवन को कहो अब खैर नहीं आई है आज जवानी फूलों की।
हमने जो फूल भेजे थे वो हैं प्यार की जुबानी फूलों की
हमारे पागलपन से मत कहो आज यह कहानी फूलों की
जानकार क्यों पूछ रही है हमसे तुम भी तो हो दिवानी फूलों की। -'....... '

पत्थर जैसे पत्थरों में तुमने गंगा की धारा दे दी
काले बादलों के जिगर में एक जल धारा दे दी
ऐसे दिलवाले दृश्यों को तूने गूंगा रखा
और मानव जैसे पशु को प्रभु हाय रे वाक् धारा दे दी। -'....... '

अपने नसीब से शिकायत ना करो
रूठ जाएगा तो दूसरा खुदा कहाँ से लायेंगे। -'....... '

थोड़ी शिकायत करनी है थोड़े खुलासे करने हैं
ओ मौत जरा ठहर जा मुझे दो चार काम करने हैं।
जिन्दगी की इस संध्या को जख्मों को याद करना है
बहुत कम पन्ने देख पाया बहुत लोगो के नाम थे। -नजम

तुम घूँघट न हटाओ कभी सागर किनारे पर
समंदर आ जाएगा तुम्हारे ऊपर चांद समझ कर।

इस दिल को तुम्हारे लिए बचपन से बचा के रखा है
अभी तो उमर में आए हो यह रोज का तकाजा किसलिए। -मधुकर रांदेरिया

यह प्रणय की दुनिया है इसमें इरादे नहीं होते
यह तो एक तस्वीर है इसमें इशारे नहीं होते।
यहाँ दिलों में दर्द है इसमें नज़ारे नहीं होते
'हमसफ़र' है हम दोनों कोई सहारे नहीं होते -शून्य पालनपुरी

कोई हँस दिया कोई रो लिया
कोई गिर गया कोई चल दिया
आँखें बंद हुई ओढ़ा कफ़न और
नाटक सुन्दर था परदा गिर गया। -'........ '

वो आंख खोलें और शरमाये गजल
वो बाल बनायें और बन जाती है गजल
किसने कहा लय का कोई आकार नहीं
वो अंग मरोड़े और लय में आती है गजल। -आदिल मन्सूरी

प्रणय का दर्द जब दिल में पहले पहल हुआ होगा
तो ऐसा लगा कि प्यार में एक कठिन मंजिल आई
अर्ज करने का दिल का दर्द कोशिश जब मैं कर रहा था
तभी गगन से उतरकर चुपके से यह ग़ज़ल आई। -मनहरलाल चोकसी

जीवन में जीने के लिए किसी ने हँसी मांगी
किसी ने मन का सुख मांगा किसी ने दिल की ख़ुशी मांगी।
विधाता ने मुझे भी जब मांगने के लिए कहा तब
मैंने उसके पास और कुछ नहीं एक शायरी मांगी। -अशोक त्रिवेदी

फाल्गुन में मिलन का रंग और श्रावण में है वियोग
प्रणय के गीत में अब होगा दीपक मल्हार का संजोग

तुम्हारा मुख देखकर मचल गया तारा।
धरती के चाँद के लिए चंचल हो गया तारा।
तुम्हारे दर्शन होते ही पागल हो गया तारा
कि आकाश से गिरकर गाल का तिल हो गया तारा।

सहन मैं तो कर लूंगा तुमसे सहन न होगा
वो पन्ना पलट देना जहाँ मेरी कहानी आवें।

खुदा ने महाकाव्य आदम का रच कर
पेश किया जन्नत में हूर द्वारा
कवन में ह्रदय का जब उल्लेख आया
फ़रिश्ते बोले दुबारा दुबारा। -गनी दहींवाला

चांद सितारों के साथ आज रात सुहानी आ रही है
कोई सुंदर सा सपना लेकर प्यार की सौगात आ रही है
सजादो ह्रदय का यह महल अपने आंसुओं के तोरण से
बड़ी शान से देखो आज दर्द की बरात आ रही है -आशित हैदराबादी

कवन को मान लेता हूँ गजल की दाद देता हूँ
ह्रदय की भावना है हमारी उनको याद करता हूँ
बनती है औरों का आनंद जिन की वेदना 'बेफाम'
मैं उन शायरों को दर्द की मुबारकबाद देता हूँ। -बरकत वीराणी 'बेफाम'

शाम होते होते मुरझायी यह कलियां देखीं
जवानी बीती बुढ़ापे में मुड़ती गलियां देखीं
वो गुलाबी गालों की लाली एक आकर्षण था जो
उन्हीं गालों पर पड़ी आज यह झुर्रियां देखीं। -दिलहर संघवी

उपवन लुटा देने का आरोप है यह किसकी जवानी पर
कांटो की अदालत बैठी है लेने को जुबानी फूलों की
इन ओस बिन्दुओं से पूछो जो फूलों पर मोती बन बैठे हैं
किस किसकी शिकायत करें यह कहानी है फूलों की। -शून्य पालनपुरी

'नाशाद' तूं जिन्दा तो है पर समझ कर जीना
साथ कोई नहीं देगा आखिरी सफर तक।
जीवन भर चलता रहे लेकिन तेरी मौत के बाद
उठा कर ले जायेंगे तेरे दोस्त तेरी कबर तक. -नाशाद

आँखें मिली धीरे-धीरे यों बात बनी धीरे-धीरे
उनसे मन की बात पूछो तो हँस देते हैं वो धीरे-धीरे
एक ह्रदय कितने जख्म बस्ती बढ़ती गई धीरे-धीरे
प्रेम 'अचल' जहर जीवन का पी जाएँगे धीरे-धीरे। -महेंद्र व्यास 'अचल'

मेरे हाथ की रेखाएँ देखकर किसी ने कहा था
कि सब सुख लिखे हैं तेरे नसीब में
फिर भी अभी तक तुमको मैं पा न सका
शायद मेरा विरह लिखा होगा तेरे नसीब में। -जयेन्द्र सिंह जाडेजा

मौत के समय यह ऐयाशी अच्छी नहीं
मैं बिस्तर पर लेटा हूँ और पूरा घर जग रहा है। -' ....'

प्रेम तो अँधा है उसे शकुन अपशकुन क्या
अंधे के नयन अगर खुले न खुले तो क्या। -' ....'

कभी आप हमारी बाहों में हो , कभी आप उनकी बाहों में हो
रहगुजर बनकर चले थे , अब कहां हमारी राहों में हो।

है जवानी शराब जैसी खुद
फिर भी वो शराब माँगती है
इस दीवाने दिल की क्या कहूँ
रात जागकर ख्वाब माँगता है। -‘ ....’

यह फिलसूफी नहीं यह असर है शराब की
बिना पढ़े कर रहा हूँ चर्चा मैं किताब की। -‘ ....’

पिया है पानी जिन हाथों से केवल वो हाथ माँगता हूँ
जग में अकेला हूँ इसीलिए तुम्हारा साथ माँगता हूँ। -‘.........’

नादान मैंने भर ली एक महफ़िल अमावस को
सितारे सब आए मगर चांद न आया -भीखू भाई चावड़ा -'नादान'

मुझे तेरी अधखुली आँखों में संभाल ले
मेरी इच्छा है कि तेरी आँखों का काजल बनूँ
भले ही मैं श्याम लगूँ मगर तमन्ना यही है कि
तेरे गाल का तिल बनूँ तो अच्छा -‘ ....’

प्रीत में जो मैंने तुम्हारा पल्ला पकड़ा था
प्रीत के बाद भी वो मेरे काम आया
प्रसंगों के ऊपर वो परदा बना
और हसरतों पर वो कफ़न बना।

आ पहोंची बिदाई की बेला हुआ अस्त मोहब्बत का
दिल पर आज यह कैसा प्रकोप हुआ है कुदरत का
बिदा देंगें आंसुओं के साथ नजरों से कहेंगे फिर मिलेंगे
याद रखना न भुला देना लाज रखना हमारी मोहब्बत का

मोहब्बत में हमने यह चार चीजें उम्र भर मांगी
जिगर माँगा नजर माँगी प्यार माँगा हार माँगी
अचम्भा क्या कोई पागल समझ हमें ठुकरावे 'मुकबिल'
हमने इस बेकदर दुनिया से सच्ची कदर माँगी।

तमन्नाओं का मैं सिकंदर हूं , चाहे तक़दीर बदल जाये
इश्को-प्रेम का आशिक हूं चाहे दुनिया बदल जाये।
खुदा कसम बुढ़ापे में भी मैं मांगु जवानी की झलक
बस रंग वो ही रहे चाहे तस्वीर बदल जाये।

दर्द जो दिल में उठा उनसे कहुं या ना कहुं
मान ना जाय बुरा उनसे कहुं या ना कहुं
मौसमे गुल में महकती कलियों ने मुझे
इशारों में कुछ कहा उनसे कहुं या ना कहुं
अभी वो नादान हैं छोड़ न दें कहीं साथ मेरा
फिर भी अंजामे वफ़ा उनसे कहुं या ना कहुं

मिलन में जो मजा था वो वियोग में मिला
मजा जो राग में था वो हमें त्याग में मिला
क्या था , क्या न था, उसका नहीं कोई गिला
साथ रह जो न समजे जुदाई में समझने को मिला।

तुमने जो अपनी नजरें झुकायी उसे मैं इकरार समजता रहा
किताबों में फूल मुरझा चले फिर भी मैं बहार समजता रहा
तुम आ न सके अपने वादे पर , पर मैं तुम्हारा इन्तज़ार करता रहा
मोहब्बत डगमगाने लगी है पर मैं आपको राहबर समजता रहा।

खुली जुल्फें गुलाबी चेहरा
आँखों में प्यार ओ प्रिये तस्वीर में भी
तुम कितनी शरमाती हो।

प्रणय की वेदना का अब ना कोई गीत गाना है
बेवजह हमको जग में ना बदनाम होना है।
बिनती यही कि तुम भी साथ चलना छोड़ दो
तुमको उधर जाना है हमको इधर जाना है।

कुदरत की कमाल है चमन में जो फूल हैं
साथ में काँटें दिए यह एक उसकी भूल है
मुझ को इतनी श्रद्धा है तेरी दया के ऊपर
किये नहीं जो पाप वो भी मुझे कबूल है
मेरी मौत पर इतने लोग रो रहे हैं
'बेफाम' जिन्दगी के सब दुःख वसूल है।

नींद आती नहीं ख्बाब सताते नहीं
रातें कटती नहीं दिल थामे बैठा हुं।
यादें बर्फ की तह जम गयी अब वो पिघलती नहीं
आंखों से आंसु बन नदिया बहती नहीं

करते हैं वो जुल्म मगर जालिम कह नहीं सकता
कवि हूँ फूलों को पत्थर की उपमा दे नहीं सकता।

करुणा के सब बंध टूट जाते
अगर नयनों पर पलकों का बंध न होता
जगत में प्रलय मच जाता
अगर सागर को किनारे न होते
मोहब्बत में रंगीनियाँ कहाँ से होती
अगर यौवन में मदभरे इशारे न होते
विरही रात को न जाने क्या होता
गगन में अगर बेशुमार सितारे न होते।

जब तक काँटा हाथों में लगता नहीं
फूलों का सच्चा परिचय तब तक होता नहीं

आप आज यहाँ पधारेंगे
चमन में सबको खबर हो गयी है
सब डालियों ने गरदन झुका ली है
और फूलों ने नीची नज़र कर ली है
आप जब यहाँ होते हो उपवन में
कलाकार का चित्र पूर्ण लगता है
तुम जब नहीं हो तब सब कहते हैं
विधाता की कोई कसर रह गयी है।

मिलन की रात थी चाँदनी का समय था
पास में सनम था खुदा महेरबान था
यह बात सपनों की थी मैं कह नहीं सकता
यह वो किस्सा था जब 'आतश' मैं जवान था।

सचमुच देखो आज यह इंसान बदल गया हैं
लोग कहते हैं की जमाना बदल गया है
तेरा आना बदल गया है तेरा जाना बदल गया है
राही बन साथ चले थे चौराहे पे रास्ता बदल गया है
अब तुमसे मिलकर वो पहला सा लुफ्त नहीं मिलता
आज मैं बदल गया हुं या आज तूं बदल गया है।

मैंने कभी किसी की उपेक्षा नहीं की
हमने सब उम्र की इज्ज़त की है
शराबी की यौवन में सोबत की है
फकीरों की बुढ़ापे में ख़िदमत की है।

तेरी याद बनकर यह आंसु पल भर भी रुक न सके
वीरान हुए इस दिल को वो कभी दिलासा दे न सके
अगर मिल जाय राह में तो बात मुझे तुमसे कहनी है
फूल जो दिये थे तुमने वो कोई सुवास दे न सके।

बिना पिये आप क्यों
इतने चकचूर लगते हो
नज़र के सामने हो
फिर भी नज़र से दूर लगते हो
मैं पूछता नहीं तुम से मगर
इतने मजबूर लगते हो
हृदय कोमल है फिर भी
बाहर से कितने क्रूर लगते हो।

तुम सुख की महफ़िल में सबको बुलाना ख़ुशी से
मगर परोसना अपने लिये आंसुंओं का थाल अकेले
दिल के दुःख की बात अपने ही दिल में रखना
जबां से उफ़ न करना सह लेना अकेले अकेले
गुलशन में कोई फूल मांगे तो दे देना उसे ख़ुशी से
कांटों का हार पहन ना करना शिकायत किसी से
यश के ऊँचे मिनारों पर चढ़ना है सबके साथ
पर बदनामी मिले तो गम पी लेना अकेले अकेले।

असर न पूछो इन बहारों की
बसंत में हर कली चंचल होगी
न छुपेगी यह ह्यदय की धड़कन
बदन की रेखा सब बोल देगी
पधारो यह ख़ुशी का पर्व है
मनायेंगे त्योहार हम दिल खोल कर

टहनियां इतनी झुकती नहीं
फूलों में कुछ भार होना चाहिए
तुमसे यों ही मिलना न होता
दिल में कुछ प्यार होना चाहिए
इतने लोग क्यों पढ़ते हैं
गीता में कुछ तो सार होना चाहिए
यह गुजराती शायरी का अनुवाद है
इसमें भी कुछ भाव होना चाहिए। -फिलिप क्लार्क

दिल तूने भी कितना बनाया मुझे
जो मेरे हो न सके उनका बनाया मुझे
वो कभी याद नहीं करते उन्होंने भुलाया मुझे
मेरे पास आकर भी कभी न बुलाया मुझे
दिल लिया दर्द दिया कितना बनाया मुझे
विरह की आग में देखो कितना जलाया मुझे।
गिला क्या करें उनका कितना रुलाया मुझे
खुद तो चले गये पर मज़ार में सुलाया मुझे। -बरकत वीराणी -'बेफाम'

साथी बदलते रहते हैं आज कल के डांस में
दिल का हाल कैसे कहें नहीं खुद के बेलेन्स में
प्यार भी बिकता है यहां पाउंड और पेन्स में
यह बातें कैसे समझाऊं उनको कॉमन सेन्स में
हम इश्क में बहक जायें ऐसे नहीं हैं जेन्टस में
प्यार किया तो निभायेंगें कैसे कहुं हर सेन्स में।
दूर तक नजर रखतें हैं आंखों के इस लेन्स में
अपनी दास्तां क्या सुनाऊं छप चुकी है प्रिंटिंग प्रेस में।

टहनियां इतनी झुकती नहीं
फूलों में कुछ भार होना चाहिए
तुमसे यों ही मिलना न होता
दिल में कुछ प्यार होना चाहिए
इतने लोग क्यों पढ़ते हैं
गीता में कुछ तो सार होना चाहिए
यह गुजराती शायरी का अनुवाद है
इसमें भी कुछ भाव होना चाहिए। -फिलिप क्लार्क

Notes :